अश्विन मास, शुक्ल पक्ष 20 वर्ष, अंक 290 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 14 सितम्बर 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

घाटी में सेना ने 6 एनकाउंटर में 9 आतंकी मारे, पुलवामा का बदला होने वाला है पूरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में कई हत्याओं के बाद चलाए गए आतंकवाद विरोधी अभियान में सुरक्षा बलों ने बुधवार को जैश-ए-मोहम्मद के टॉप कमांडर शमीम अहमद सोफी को मार गिराया है। इसी के साथ पुलवामा हमले का बदला भी पूरा होने वाला है। पिछले कुछ दिनों में आतंकियों और सुरक्षाबलों के साथ कुल 6 एनकाउंटर हुए हैं जिसमें 9 आंतकियों को ढेर किया गया है। बुधवार को सोफी की मुठभेड़ को सुरक्षा बलों के लिए एक बड़ी सफलात के रूप में देखा जा रहा है। अवंतीपोरा में चलाए गए आतंकविरोधी अभियानों में सोफी सुरक्षा बलों को चमका देते हुए भाग खड़ा हुआ था। तब जैश प्रमुख मसूद अजहर का भतीजा, मोहम्मद इस्माइल अल्वी उर्फ ??लम्बू, और स्थानीय आतंकवादी समीर अहमद

डार मारा गया था। लम्बू और डार पुलवामा हमले की योजना बनाने में शामिल थे, जिसमें सीआरपीएफ के 40 जवानों की जान चली गई थी।

सोफी की मुठभेड़ केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की ओर से घाटी में हुई हत्याओं से अल्पसंख्यकों की रक्षा करने और पाकिस्तान समर्थित स्थानीय मॉड्यूल से जुड़े आतंकवादियों के खिलाफ कड़े कार्रवाई के निर्देश के कुछ दिनों बाद हुई है। गृह मंत्री अमित शाह ने सुरक्षा एजेंसियों से आतंकवाद निरोधी विशेषज्ञों को कश्मीर भेजने और अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई करने को कहा था। घाटी में हाल ही में एक प्रमुख कश्मीरी पंडित फार्मासिस्ट और एक सिख स्कूल के प्रिंसिपल सहित कई अल्पसंख्यक नागरिकों की हत्या हुई है।

जम्मू-कश्मीर के अवंतीपोरा के त्राल इलाके के तिलवानी मोहल्ला में हुई मुठभेड़ में सुरक्षा बलों ने सोफी को मार गिराया। सोफी, जो 2019 में घर छोड़कर जैश-ए-मोहम्मद संगठन के आतंकवादी रैंक में शामिल हो गया था। इसके बाद से यह घाटी में युवाओं को आतंकवाद में शामिल होने के लिए उन्हें प्रेरित कर रहा था। सोफी का पुलवामा हमले की योजना और साजिश में शामिल आईईडी विशेषज्ञ लम्बू से भी संपर्क था। 1974 में सतूरा अरिपाल गांव में जन्मे जैश के मारे गए कमांडर सोपी ने गरीबी के कारण पढ़ाई छोड़ दी थी और एक दुकानदार के रूप में भी काम किया था। बीच में शादी भी हुई और दो साल तक दुकानदारी करने के बाद उसने 2004 में अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया। यहीं से यह राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल हुआ और एक तलाशी अभियान के दौरान स्थानीय पुलिस ने इसे गिरफ्तार भी किया था। सोफी को सार्वजनिक सुरक्षा अधिनियम (पीएसए) के तहत दो साल के लिए हिरासत में लिया गया था, लेकिन जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट के एक आदेश के बाद रिहा कर दिया गया था। इसके बाद वो जैश संगठन में शामिल होने से पहले मनरेगा में एक ठेकेदार के रूप में भी काम किया। जम्मू-कश्मीर पुलिस के विश्वसनीय इनपुट के आधार पर मुठभेड़ में मारे गए सोफी के पास से सुरक्षाबलों ने एक एके 56, तीन एके मैगजीन, 55 राउंड गोला बारूद और दो हथगोला बरामद किया है।

राजस्थान सरकार ने बदला फैसला, स्कूलों में दिवाली पर 10 दिन का अवकाश, आदेश जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान में हर साल आमतौर पर दिवाली पर स्कूलों में 10 से 12 दिन का मध्यावधि अवकाश होता है लेकिन इस बार शिक्षा विभाग ने केवल 4 दिन की ही छुट्टियों की घोषणा की थी। कोविड-19 महामारी के चलते स्कूलों के लंबे समय तक बंद रहने के कारण बच्चों की पढ़ाई का काफी नुकसान हुआ, इसके चलते ही यह फैसला लिया गया था। लेकिन आज शिक्षा विभाग ने इस फैसले को वापस ले लिया है। शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटसार ने ट्वीट कर जानकारी दी है कि शिक्षा विभाग में 29 अक्टूबर से 7 नवंबर तक दीपावली अवकाश रहेगा। इस संबंध में आदेश भी जारी कर दिए गए है। शिक्षा विभाग में 29 अक्टूबर से 7 नवंबर तक क्षदीपावलीञअवकाश होगा, इससे पहले जारी आदेश के अनुसार सिर्फ 4 दिन की छुट्टियों की घोषणा की गई थी। 4 नवंबर दीपावली, 5 नवंबर गोवर्धन पूजा, 6 नवंबर भैया दूज और 7 नवंबर को रविवार की छुट?टी। माध्यमिक शिक्षा निदेशक सौरभ स्वामी ने कहा था कि स्कूलों में फिलहाल प्रिंसिपल पावर के अवकाश भी नहीं होंगे। केवल राज्य सरकार की ओर से तय अवकाश ही होंगे।

भारत को मिलने जा रहे हैं तीन और राफेल लड़ाकू विमान, आज रात जामनगर में होगी लैंडिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय वायु सेना को बुधवार को तीन और राफेल लड़ाकू विमान मिलने जा रहा है। फ्रांस के एयरबेस से तीन राफेल लड़ाकू विमान भारत के लिए रवाना हो चुके हैं। फांस से आ रहे इन तीन विमानों की लैंडिंग गुजरात के जामनगर में होगी। तीन और राफेल विमान मिलने के बाद भारत में इनकी संख्या अब 29 हो जाएगी। तीन लड़ाकू विमानों के भारत आने के बाद 7 लाड़ाकू विमान और आएंगे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक फ्रांस से आने वाले ये तीन राफेल अंबाला में गोल्डन एरो स्वॉड्रन में शामिल होंगे। बता दें कि 2016 में लगभग 60,000 करोड़ के सौदे के तहत भारत ने फ्रांस से 36 राफेल जेट खरीदा था। फ्रांस से उड़ान भरने के बाद संयुक्त अरब अमीरात के रास्ते होते हुए भारत पहुंचेंगे। भारत में फ्रांस के राजदूत इमैनुएल लेनैन ने शुक्रवार को कहा कि भारत को सभी 36 राफेल विमान तय समय से पहले मिलेंगे। उन्होंने कहा कि फ्रांस में कोरोना प्रसार को रोकने के लिए कुछ दिनों के लिए बंदी घोषित की गई थी। इसके बावजूद वैमानिकी क्षेत्र की प्रमुख कंपनी दसॉल्ट एविएशन से भारत को राफेल विमान समय से पहले उपलब्ध कराए जाने की उम्मीद है। इंडो-फ्रेंच चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (आईएफसीसीआई) की तरफ से आयोजित चौथे भारत-फ्रांस निवेश सम्मेलन से इतर लेनैन ने कहा कि यूरोपीय देश से संबंधित कंपनियों ने भारत में 10 अरब यूरो से अधिक का निवेश किया है, जिससे 2.50 लाख भारतीयों को रोजगार मिल रहा है।

वॉर रूम में अमित शाह के साथ मंथन के बाद 5 राज्यों में खिलेगा कमल, चुनौतियों से कैसे निपटेगी भाजपा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले साल यानी साल 2022 के फरवरी और मार्च महीने में पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव हो सकते हैं। जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव के आसार हैं उनमें उत्तर प्रदेश, पंजाब, मणिपुर, उत्तराखंड और गोवा शामिल हैं। इनमें से पंजाब को छोड़कर अन्य चार राज्यों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पहले से ही सत्ता में है। बहरहाल आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा ने मंथन शुरू कर दिया है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में बुधवार को दिल्ली स्थित बीजेपी वॉर रूम में एक बैठक हुई। इस बैठक में पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर ठोस रणनीति बनाने पर चर्चा हुई।

भाजपा पहले से पंजाब को छोड़कर कम से कम तीन राज्यों में आराम से वापसी की उम्मीद कर रही है। उसे एकमात्र संभावित चुनौती राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्य उत्तर प्रदेश में मिलने की उम्मीद है। तो सबसे पहले बात उत्तर प्रदेश की ही कर लेते हैं। यूपी में कुछ वक्त पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के खिलाफ पार्टी में असंतोष की सुगबुगाहट सामने आई थी। हालांकि, पार्टी जल्दी ही इस संकट से बाहर भी आ गई थी। कहा जाता है कि यह पार्टी नेतृत्व और गृहमंत्री अमित शाह के प्रयासों का ही नतीजा रहा कि अपना दल और पार्टी के अंदर का विरोधी धड़ा लाइन पर आ गया। निषाद पार्टी भी अपना रुख साफ कर चुकी है। यूपी में पार्टी के लिए सबकुछ अच्छा चल रहा था लेकिन विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले हुए लखीमपुर खीरी कांड से पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचने की आशंका है। बीजेपी इस बार भी विधानसभा चुनाव में योगी आदित्यनाथ को अपना चेहरा बनाएगी। आदित्यनाथ के कार्यकाल के शुरूआत में ब्राह्मण विभिन्न वजहों से नाराज होता चला गया जिसे फिर से पूरी तरह से अपने पाले में करने के लिए बीजेपी पूरी मेहनत कर रही है। राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण इस जाति को पाले में करने के लिए बीजेपी ने यूपी कैबिनेट में कई ब्राह्मण चेहरों को जगह दी, यूपी से ही ताल्लुक रखने वाले लखीमपुर खीरी के सांसद अजय मिश्र टेनी को केंद्रीय सरकार में जगह दी। लेकिन किसान आंदोलन के दौरान किसानों के कुचलकर मारे जाने की घटना ने नेतृत्व को एक बार फिर परेशान कर दिया है। गोवा की बात करें तो गृह मंत्री अमित शाह अगले साल गोवा में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा की तैयारियों की जल्द ही समीक्षा करेंगे। पार्टी के गोवा चुनाव प्रभारी देवेंद्र फडणवीस ने बुधवार को यह जानकारी दी। वह गुरुवार को राज्य के दौरे पर होंगे। इस दौरान कुछ सरकारी कार्यक्रम और पार्टी कार्यक्रम में भी हिस्सा लेंगे। वह पार्टी कार्यकर्ताओं और विधायकों से भी मुलाकात करेंगे।

उत्तराखंड की बात करें तो बीजेपी ने यहां मुख्यमंत्री का चेहरा कुछ वक्त पहले ही बदला है। लेकिन भाजपा को पार्टी के अंदर अनुशासनहीनता के मामलों से हाल के दिनों में जूझना पड़ा है। यहां कांग्रेस और बीजेपी में टक्कर है। कांग्रेस यहां टूट और अंदरुनी गुटबाजी से परेशान है। वर्ष 2017 में प्रचंड बहुमत से सत्तासीन हुई भाजपा के सामने अगले साल होने वाले चुनाव में ऐसा ही प्रदर्शन दोहराने की चुनौती है। चुनाव के मद्देनजर भाजपा ने जन आशीर्वाद रैलियों के आयोजन के साथ ही बूथ स्तर तक संगठन को सक्रिय किया है।

गाजियाबाद में बड़ा हादस

फाईओर से नीचे गिरी बास, एक की मौत, 10 घायल

गाजियाबाद (एजेंसी)। गाजियाबाद के भाटिया मोड़ फ्लाईओवर पर लालकुआं से घंटाघर कोतवाली की ओर जा रही एक निजी बस टायर फटने अनियंत्रित हो गई। इसके बाद बस ने बाइक सवार युवक को टक्कर मार दी और डिवाइडर तोड़ते हुए दूसरी ओर की भी रैलिंग तोड़कर नीचे गिर गई। जिसमें बाइक सवार व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई जबकि 10 लोग घायल हो गए। इनमें दो लोगों की हालत गंभीर है।

मिली जानकारी के अनुसार बुधवार रात करीब 9.30 बजे ग्रेटर नोएडा से निजी कंपनी का स्टाफ लेकर लाल कुंआ से घंटाघर कोतवाली की तरफ जा रही थी। बस जैसी ही भाटिया मोड़ फ्लाईओवर के ऊपर पहुंचीं तभी बस का टायर फट गया। इससे अनियंत्रित हुई बस ने एक बाइक सवार युवक में टक्कर मार दी। इसके बाद बस घिसटते हुए फ्लाईओवर का डिवाइडर क्रास कर दूसरी सड़क की रैलिंग तोड़ कर नीचे जा गिरी। फ्लाईओवर के नीचे

दुकानें लगी होने के कारण वहां लोगों की काफी भीड़ थी, जिसपर बस जाकर गिर गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को बस से निकाला और अस्पताल भेजा। इसके लिए मौके पर चार से ज्यादा एंबुलेंस तैनात रही। ताकि घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया जा सके। मामले की गंभीरता को देखते हुए मौके पर जिलाधिकारी और एसएसपी भी पहुंच गए और बचाव कार्य में तेजी लाई गई। सवा दस बजे प्रदेश के स्वास्थ्य राज्य मंत्री अतुल गर्ग भी मौके पर पहुंच गए। एसएसपी ने इस दुर्घटना में बाइक सवार व्यक्ति की मौत होने की पुष्टी की है। मृतक की पहचान नहीं हो सकी है। कुल 10 घायलों में तीन गंभीर रूप से घायल बताए जा रहे हैं। इन घायलों को जिला अस्पताल, यशोदा और सुदर्शन अस्पताल भेजा गया है। जहां उन्हें प्राथमिक उपचार दिया गया।

मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि प्राइवेट बस में ड्राइवर के अलावा दस सवारी थी। ये सभी ग्रेटर नोएडा की एक निजी कंपनी में काम करते हैं। इन सभी को बस से निकालने में काफी मुश्क्कत करने पड़ी है। इसके अलावा बस के चपेट में भी कई लोग आए। बस की चपेट में आए गई लोगों को बाहर निकालकर उनकी जान बचाई गई है। बस के अंदर की सवारियों व उसके नीचे दबने वाले लोगों की जान बचाने के लिए पुलिस ने तुरंत क्रेन मंगाई ताकि बस को हटाकर उन्हें बचाया जा सके। इस दौरान पुलिस ने तुरंत चार क्रेन मंगवाई और बचाव कार्य में तेजी लाते हुए बस को हटवाया। हालांकि फ्लाईओवर से बस को उठाने में काफी दिक्कत का सामना करना पड़ा। लेकिन फिर भी बस को हटाकर घायलों को तुरंत उपचार दिलाया गया। फ्लाईओवर के बस गिरने के कारण उसके नीचे खड़ी तीन बाइक पूरी तरह चुर हो गई।

लोगों ने बताया कि जैसे ही बस गिरती नजर आई तो लोग एकाएक भागने लगे। जिसकी बाइक या कार खड़ी थी। उसने वह वहीं छोड़ दी। घायलों में सुनील और दीपक निजी कंपनी में काम करते हैं। जबिक आसिफ छात्र हैं। सुनील की हालत गंभीर होने पर उन्हें एमएमजी अस्पताल से यशोदा अस्पताल रेफर कर दिया गया। आसिफ एमएमजी में भर्ती हैं। जबकि दीपक को एक अन्य निजी अस्पताल में एडमिट कराया गया है।

दिल्ली का दिल तोड़कर कोलकाता तीसरी बार फाइनल में, चैंपियन बनने के लिए चेनर्ई से भिड़ेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद टॉप ऑर्डर के बल्लेबाजों के कमाल की बल्लेबाजी और अंतिम ओवर में राहुल त्रिपाठी के बेहतरीन छक्के की बदौलत कोलकाता नाइट राइडर्स ने बुधवार को दूसरे क्वालीफायर मैच में दिल्ली कैपिटल्स को तीन विकेट से हराकर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 14वें सीजन के फाइनल में प्रवेश कर लिया। फाइनल में अब कोलकाता का सामना शुक्रवार को तीन बार की चैंपियन चेनर्ई सुपरकिंग्स से होगा। शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए दूसरे क्वालीफायर में कोलकाता ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करते हुए दिल्ली को पांच विकेट पर 135 रन पर रोक दिया और फिर एक गेंद शेष रहते सात विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। दिल्ली से मिले 136 रनों के आसान सा लक्ष्य का पीछा करने उतरी कोलकाता को वेंकटेश अय्यर (55) और शुभमन गिल (46) पहले विकेट के लिए 74 गेंदों पर 96 रनों की साझेदारी करके टीम को जीत के करीब लेकर गए। वेंकटेश ने

41 गेंदों पर चार चौके और तीन छक्के लगाए। उनको कगिसो रबाडा ने आउट किया। वेंकटेश के आउट होने के बाद गिल ने नितीश राणा (13) के साथ दूसरे विकेट के लिए 22 गेंदों पर 27 रनों की साझेदारी करके टीम को जीत की दहलीज पर तक पहुंचाने की कोशिश की। राणा को एनरिक नॉर्टजे ने आउट किया। राणा के आउट होने के बाद रबाडा ने गिल को भी आउट करके कोलकाता को तीसरा झटका दिया। गिल ने 46 गेंदों पर एक चौका एक और छक्का लगाया। रबाडा ने फिर दिनेश कार्तिक (0) को खाता खोले बिना बोल्ड करके कोलकाता को चौथा झटका दिया। ?कोलकाता को अंतिम 12 गेंदों पर 10 रन बनाने थे और नार्टजे ने फिर कप्तान कप्तान इयोन मोर्गन (0) को खाता खोले बिना बोल्ड करके कोलकाता को पांचवां झटका दिया। कोलकाता को अंतिम ओवर में सात रन बनाने थे और गेंद रविचंद्रन अश्विन के हाथों में थी। अश्विन ने शाकिब अल हसन (0) को खाता खाले बिना पवेलियन भेजकर कोलकाता को छठा झटका दिया। शाकिब को आउट करने के बाद अश्विन ने फिर सुनील नरेन (0) को भी खाता खोले बिना पवेलियन लौटा दिया।

खबर संक्षेप

आज लगेगा विद्युत कैम्प

लालापुर। क्षेत्र में करोना की वजह से विजली विभाग बिल संशोधन का कैम्प कई महीनो से नहीं लगाया गया था लोगों की समस्या आये दिन बनी रहती थी जिसको लेकर उपभोक्ता परेशान रहते थे लालापुर पावर हॉउस के चक्कर लगते थे वहाँ के कर्मचारी केवल बिल जमा कर लिया करते थे लेकिन बिल संशोधन नहीं हो पाता था उपभोक्ता को शिकायत दूर करने के लिए एसडीओ, जेई, सहित उच्च अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

दो अभियुक्त गिरफ्तार

मेजारोड। पुलिस उपमहानिरीक्षक/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी के द्वारा अवैध शराब के निर्माण व विक्री के विरुद्ध चलाये गये अभियान के अंतर्गत पुलिस अधीक्षक यमुनापार सौरभ दीक्षित के कड़े निर्देश के क्रम में क्षेत्राधिकारी मेजा डॉक्टर भीम कुमार गौतम के पर्यवेक्षण थानाध्यक्ष खीरी राजेश कुमार मौर्या के कुशल नेतृत्व में पुलिस टीम उपनिरीक्षक चंद्रशेखर यादव व हेड0का0अष्टभुझा सिंह द्वारा 02 अभियुक्तो 1,मिठाई लाल आदिवासी उर्फ कल्लू पुत्र स्व0 नर्मदा आदिवासी निवासी छापर थाना खीरी जनपद प्रयागराज 2, मुन्ना सिंह पुत्र स्व0 रामजी सिंह निवासी कौंदी पोखरी थाना खीरी जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर उनके कब्जे सेब10-10 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद कर आवश्यक वैधानिक विधिक कार्यवाही की गयी।

औद्योगिक क्षेत्र में हत्यारों ने उतारा मां-बेटी को मौत के घाट

घटनास्थल पर जांच को जाती डाग स्क्वायड टीम

पिता गंभीर रूप से घायल, तहरीर के आधार पर गांव के ही चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज, ग्रामीणों के बीच कई तरह की चचाएं रही दिनभर व्याप्त, मामले की जांच पड़ताल करने में जुटी पुलिस

मृतक प्रेमा देवी

मृतक बेटी तनू पटेल

अखंड भारत संदेश

नैनी। डबल मर्डर की घटना से औद्योगिक नगरी का तापमान एक बार पुनः बढ़ गया है। बीती रात अज्ञात हमलावरों ने औद्योगिक क्षेत्र अंतर्गत चक पूरे खुर्द, रेही कला, मियाँ का पूरा गाँव में माँ - बेटी एवं पिता पर धारदार हथियार से जबर्दस्त वार कर दिया गया। जिससे माँ - बेटी की घटनास्थल पर ही मौत हो गई और पिता को गंभीर रूप से घायल अवस्था में शहर के एक निजी हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेजा तथा परिवार के ही राज बहादुर पटेल की तहरीर पर गाँव के ही चार लोगों के बिरूद्ध सुसंगत धाराओं में नामजद मुकदमा दर्ज कर लिया है।

जानकारी के मुताबिक मियाँ का पूरा गाँव स्थित बजरंग बहादुर पटेल (50) उर्फ नचकऊ पुत्र मोलई अपनी पत्नी प्रेमा देवी (45) व बेटी तन्नू (18) और नातिन अंशिका पटेल (6) के साथ घर में सोए हुए थे। मंगलवार रात्रि अज्ञात हमलावरों ने घर में घुसकर धारदार हथियार से उन पर वार कर दिए। जिससे माँ - बेटी की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जबकि पिता गंभीर रूप से घायल हो गया। हमलावरों के चंगुल से बच्ची अंशिका पटेल ने पड़ोसियों को सूचना दी तो लोग मौके पर पहुंचकर भयावह दृश्य देखकर अवाक रह गए। वहीं आनन फानन में गम्भीर रूप से घायल बजरंग बहादुर को लाद फाँदकर इलाज हेतु अस्पताल भेजा गया। साथ ही इलाकाई पुलिस को सूचना दी गई।

सूचना पर औद्योगिक क्षेत्र थानाध्यक्ष संजीव कुमार चौबे दल-बल के साथ मौके पर पहुँचे और स्थिति देखकर वरिष्ठ अधिकारियों को सूचना दिए। जिसपर पुलिस अधीक्षक अपराध आशुतोष मिश्र सहित दर्जनभर थानों की फोर्स डाग स्क्वायड एवं फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुँच कर घटना का जायजा लिया तथा जाँच पड़ताल शुरू किया। कुछ ही देर बाद डी आई जी / वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी भी मौके पर पहुँच कर घटना की गंभीरता से निरीक्षण किया तथा परिवार के लोगो से किसी से दुश्मनी सहित अन्य मुद्दों पर बातचीत की। मामले का खुलासा करने के लिए क्राइम ब्रांच, एसओजी एवं थाना स्तर पर तीन टीमें गठित कर जल्द से जल्द घटना का खुलासा करने का निर्देश दिया गया है। मुकदमा पंजीकृत कराने वाले राज बहादुर पटेल की तहरीर के मुताबिक बीते सन 2019 में एक हत्या में उसके परिवार के तीन लोगों को जेल भिजवा दिया था। जिन्हें छुड़ाने की पैरवी बजरंग बहादुर किया करते थे। मुकदमे की पैरवी न करने हेतु गाँव के ही नवनील चंद्र मिश्रा आदि द्वारा आए दिन धमकी दी जाती थी। जिसके आधार पर नवनील चंद्र मिश्रा, आकाश, सुजीत और महेश नारायण के विरुद्ध आई पी सी की धारा 302, 307,452 एवं 34 के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया है।

औद्योगिक क्षेत्र डबल मर्डर से संबंधितः डीआईजी व एसएसपी पूछताछ करते हुए

शंकरगढ़ : रामलीला संग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की बहार

शंकरगढ़। शारदीय नवरात्रि में रामलीला, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और जगराते की बहार है। गांव हो या कस्बा, आधी रात के बाद तक चहल-पहल बनी रहती है। कहीं रामलीला का मंचन हो रहा है तो कहीं पर पूजा कमेटियों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए मां को रिझाने की कोशिश की जा रही है। यमुनापार के लाइनपार (शंकरगढ़) में नव दुर्गा पूजा कमेटी द्वारा भव्य पंडाल सजाया गया है। विशाल दुर्गा प्रतिमा को देखने के लिए सुबह से देर रात तक श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जमा रहती है। बीती रात यहां पर तरुण चोपड़ा एंड ग्रुप के कलाकारों ने मां के दरबार में हाजिरी लगाई और अभिनय से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कलाकारों ने काली व शिव तांडव प्रस्तुत किया, साथ ही अघोरी डांस काफी सराहा गया। इसके अलावा राधा-कृष्ण की मनमोहन झांकी भी प्रस्तुत की गई। यह आयोजन नव दुर्गा पूजा कमेटी पटहट रोड लाइनपार के भक्तों द्वारा पूर्ण करवाया गया। इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा काशी क्षेत्र के सहसंयोजक उद्यन पांडेय मौजूद रहे। संचालन विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के नगर अध्यक्ष सुजीत कुमार केसरवानी ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से अरुण सोनी, दिलीप कुमार वैश्य, गोलू भैया, सुजीत केसरवानी, कुलदीप सिंह, ज्योति केसरवानी, शिवम कौशल, नितिन वैश्य, रवि केसरवानी, विक्की केसरवानी, निक्की सोनी, सोनू केसरवानी, आर्यन चौरसिया, विपिन केसरवानी, महेश केसरवानी, दिलीप सिंह, राजीव कमल, नीलकमल, मनोज सोनी, शिवेश सोनी, शिवबाबू केसरवानी, सत्यम सोनी, शुभम केसरवानी, नितिन केसरवानी, रिषभ, मयंक, वंशू मौजूद रहे। इसी क्रम में पुरानी बाजार में आर्य राम वाटिका में

मां की भव्य झांकी सजाई गई है। यहां मंगलवार रात सप्तमी के दिन जगराते का आयोजन किया गया। जगराते में मां की महिमा का बखान किया गया। आयोजक विनोद केसरवानी ने बताया कि नवमी के दिन विशाल भंडारे का आयोजन किया गया है। जिसमें सैकड़ों लोग प्रसाद ग्रहण करेंगे। वहीं अर्पित केसरवानी, हर्षित केसरवानी, शुभम, पंकज, अनमोल, स्वेत, अभी, प्रकाश, नीरज, प्रकाश, बंटू,शैली, काव्या, मीना केसरवानी, मानवी, झलक, अमायरा, पूजा, स्वेता, गुंजन, तारा,रुपाली आदि द्वारा प्रतिदिन कार्यक्रम किया जाता है।

दुर्गाष्टमी पर महागौरी स्वरूप का भक्तों ने किया दर्शन पूजन

कौंधियारा। क्षेत्र में शारदीय नवरात्रि की धूम देखने को मिल रही है समूचा क्षेत्र माता की भक्ति में लीन है।दुर्गा अष्टमी के दिन मां दुर्गा के महागौरी स्वरुप की भक्तों ने विधि-विधान पूर्वक आराधना की जारी में बड़े हनुमान जी के मंदिर में दुर्गा प्रतिमा स्थापित करके बड़े विधि विधान पूर्वक पूजा-पाठ किया जा रहा है और अष्टमी के दिन माता का भव्य श्रृंगार पूजन किया गया। देर रात्रि तक भक्तों का चहल-पहल बना रहा । आचार्य मुकेश शुक्ला ने बताया कि पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान शिव को पाने के लिए कई वर्षों तक मां पार्वती ने कठोर तप किया था, जिससे उनके शरीर का रंग काला हो गया था। जब भगवान शिव उनकी तपस्या से प्रसन्न हुए तो उन्होंने उनको गौर वर्ण का वरदान भी दिया। इससे मां पार्वती महागौरी भी कहलाईं। महागौरी की आराधना करने से व्यक्ति को सुख, सौभाग्य और समृद्धि भी मिलती है। सब पाप भी नष्ट हो जाते हैं। दुर्गा अष्टमी के दिन कई स्थानों पर कन्या पूजन और हवन भी किया गया। मंदिर परिसर में मौजूद अनुराधा गुप्ता रेखा देवी, मंजू देवी ,अंजना श्रीवास्तव, रामदुलारी ,आरती पांडे, शैलेंद्र कुमार गुप्ता ,अवधेश अग्रहरी ,प्रेम पांडे, कैलाश अग्रहरी, मुरारी केसरवानी, तिवारी जी, बाबूजी केसरवानी ,विकास गुप्ता ,नीरज श्रीवास्तव, आदि भक्तगण मौजूद रहे।

भक्ति के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं का अनोखा संगम

सिरसा। मेजा तहसील के विकास खंड मेजा अंतर्गत कोहड़ार में सार्वजनिक दुर्गा पूजा समारोह द्वारा पूजन अर्चन के साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही है और विजेताओं को समिति द्वारा सम्मानित भी किया जा रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रमुख मेजा प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्र और विशिष्ट अतिथि जिला प्रभारी प्रधान संघ अनिल शुक्ला रहे। इसी क्रम में विगत दिनों आयोजित खेल कूद व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई,जिसमे प्रतिभाग करने वाले प्रतिभागियों और विजेताओं को प्रमुख प्रतिनिधि मेजा गंगा प्रसाद मिश्र द्वारा सम्मानित किया गया। उक्त पंडाल में माता दुर्गा की पूजा अर्चना भव्यता के साथ चल रही है।कार्यक्रम के संरक्षक अशोक जैन, संयोजक राजेश द्विवेदी, अध्यक्ष विमलेश द्विवेदी, आचार्य कमलाकांत पाण्डेय, मुख्य यजमान रमाशंकर द्विवेदी और मुख्य सदस्य चंचल द्विवेदी, शुभम द्विवेदी, शरद तिवारी, ग्राम प्रधान राजेश प्रजापति, अमित सोनी, मनोज वर्मा,सुबेद सिंह आदि सभी गण मान्य नागरिकों के सानिध्य मे कार्यक्रम प्रतिदिन नए नए कीर्तिमान स्थापित हो रहा है। ग्राम समाज के कुछ सम्मानित गण मान्यों इंद्रजीत द्विवेदी,सुशील द्विवेदी, लक्ष्मी नारायण पांडेय, अशोक कुमार वर्मा, रणजीत जैन आदि का सम्मान समिति द्वारा किया गया। अध्यक्ष ने कहा कि आगे का कार्यक्रम और भी आकर्षक रहेगा।समिति के अध्यक्ष ने स्थानीय व गणमान्य लोगो से कार्यक्रम में पहुंचने की अपील की है।

25 वर्ष पहले लाठी डंडे से पीट-पीट कर कर दी गई थी भाई की हत्या

(सुनील गिरि)

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के चक पूरे ग्राम सभा के अंतर्गत मजरा मियां का पूरा गांव के रहने वाले मोलई दो शादी किए हुए थे। मोलई के पहली पत्नी से नरेश पटेल व दूसरी पत्नी से बजरंग बहादुर पटेल पुत्र हैं। बताया जाता है कि बीते 8 अगस्त 1996 में राम नरेश पटेल की हत्या गांव में ही लाठी-डंडे से पीट-पीटकर कर दी गई थी। तभी से गांव में उनकी रंजिश चली आ रही है। बीते 2019 में गांव के ही रहने वाले नवनीत मिश्रा पुत्र महेश नारायण मिश्र की हत्या रात्रि प्रहर में गांव के समीप हत्यारों ने कर दी थी। मृतक नवनीत मिश्रा के परिजनों ने गांव के ही रहने वाले गंभीर रूप से घायल बजरंग बहादुर पटेल के भतीजे श्री कृष्ण चंद्र पटेल, लाल चंद्र पटेल और प्रीतम पटेल को आरोपी बनाए थे। हालांकि पुलिस ने तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे भेज दिए थे। वर्तमान में लालचंद्र और प्रीतम पटेल जमानत पर रिहा होकर बाहर हैं। जबकि कृष्णचंद्र जेल में बंद हैं।

बजरंग बहादुर का इकलौता पुत्र कर चुका है आत्महत्या

नैनी। मंगलवार रात अज्ञात हमलावरों के वार से गंभीर रूप से घायल बजरंग बहादुर पटेल का इकलौता पुत्र चंद्रशेखर लगभग चार वर्ष पूर्व आत्महत्या कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर चुका है। पति की मौत के बाद उसकी पत्नी जो नैनी कोतवाली क्षेत्र के ददरी, ड?भाव की रहने वाली सलोनी पटेल करछना थाना क्षेत्र के भस्मा गांव में दूसरी शादी कर ली है और उसकी पुत्री अंशिका पटेल (6) वह अपने दादा बजरंग बहादुर पटेल के साथ ही रहती है। वहीं बजरंग बहादुर पटेल अपनी बड़ी पुत्री अंजू की शादी कुछ वर्ष पूर्व घूरपुर थाना क्षेत्र के चकिया, कर्मा में किए हैं। बताया जाता है कि वह अपनी छोटी बेटी तनु की शादी के लिए रिश्ते की तलाश में लगे हुए थे। होनी को कौन टाल सकता है मंगलवार रात बजरंग बहादुर पटेल के परिवार के लिए काल बनकर आई और अज्ञात हमलावर हत्यारों ने उनकी पत्नी प्रेमा देवी उनकी पुत्री तनु पटेल की गला रेत कर हत्या कर दी। जबकि बजरंग बहादुर पटेल गंभीर रूप से घायल हैं और बाई की बाग स्थित एक निजी हॉस्पिटल में इलाजरत हैं, जो गंभीर हालत बनी हुई है।

धान की बोरी के पीछे छुप कर अंशिका ने बचाई अपनी जान

नैनी। मंगलवार रात बजरंग बहादुर पटेल के घर के अंदर हत्यारों और परिजनों के बीच जमकर संघर्ष हुआ, दीवारों पर खून के छींटे इस ओर गवाही दे रहे थे कि मां बेटी और पिता ने हत्यारों से जमकर संघर्ष किया, लेकिन हत्यारों ने बड़ी बेरहमी से धारदार हथियार और मिट्टी पाटने के काम में आने वाली लकड़ी का मुंगरी से मौत के घाट उतार दिए। बताया जाता है कि उसी घर के अंदर बजरंग बहादुर पटेल की नातिन 6 वर्षीय अंशिका पटेल घर के अंदर रखे धान की बोरियों के पीछे जा छुप कर अपनी जान हत्यारों से बचा पाई। सुबह होने पर वह घर के बाहर निकली और पड़ोसियों को जाकर घटित वारदात की जानकारी दी। जिससे लोगों की मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई। वहीं गांव में कई तरह की चचाएं भी दिनभर व्याप्त रही हालांकि आला अफसरों के निर्देश पर आधा दर्जन से अधिक गठित पुलिस टीम पूरे मामले का पदार्फाश करने के लिए जुटी हुई है।

रिश्तेदार के घर से देर शाम को वापस आए थे दंपत्ति

नैनी। बजरंग बहादुर पटेल की पत्नी प्रेमा देवी लगभग चार दिन पूर्व अपने रिश्तेदार करछनू थाना क्षेत्र स्थित मझुआ गांव गई हुई थी। मंगलवार को मायका पक्ष परिवार की ओर से बड़े हनुमान जी निशान भी गया हुआ था। जिसमें प्रेमा देवी भी शामिल थी। उनके पति बजरंग बहादुर पटेल उन्हें विदा कराने के लिए मंगलवार को मझुआ गांव अपने रिश्तेदार के घर पर पहुंचे और देर शाम को वह पत्नी को अपने मूल निवास मियां का पूरा घर पर पहुंचे। बताया जाता है कि परिजन भोजन आदि करने के बाद अलग-अलग कमरों में सोने की तैयारी कर रहे थे। जबकि घर से लगभग सौ मीटर से अधिक दूरी पर नवरात्रि के उपलक्ष में पूजा पाठ का भी आयोजन चल रहा था। ग्रामीणों की मानें तो अंतिम दिन होने की वजह से बिरहा का आयोजन किया गया था। जिसे देखने के लिए गांव के अत्यधिक लोग वहां मौजूद थे और इसी का पूरा फायदा उठाते हुए अज्ञात हमलावर बजरंग बहादुर पटेल के घर दाखिल हो गए और वारदात को अंजाम अंजाम देते हुए मौके से फरार हो गए।

गांव में सुरक्षाकर्मियों को किया गया तैनात

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के चक पूरे खुर्द ग्राम सभा के मजरा मियां का पूरा में मंगलवार रात अज्ञात हमलावरों ने मां बेटी की जहां बेरहमी से हत्या कर दी गई। वहीं पिता को गंभीर रूप से घायल कर दिया गया। जिसका इलाज निजी अस्पताल में चल रहा है। परिजनों की तहरीर मिलने पर गांव के ही चार लोगों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कराया गया है। किसी भी अप्रिय घटना से निपटने के लिए आला अफसरों के निर्देश पर गांव के चप्पे-चप्पे पर पुलिस, पीएसी के जवानों को तैनात कर दिया गया है। वहीं दूसरी ओर नामजद किए गए गांव के ही चारों व्यक्ति घर से फरार हो चुके हैं।

तनु पटेल थी नवरात्र में व्रत, आज कराती कन्याओं को प्रसाद ग्रहण

नैनी। 18 वर्षीय तनु पटेल पुत्री बजरंग बहादुर पटेल गांव के ही समीप पुरुषोत्तम लाल इंटर कॉलेज में कक्षा 12 में पढ़ाई करती थी। वह पढ़ने लिखने में भी अव्वल दर्जे की बताई जा रही है। नवरात्र में वह नौ दिनों की व्रत रखी हुई थी और प्रत्येक दिन सुबह व देर शाम लगभग आठ बजे अपने घर में स्थापित मां दुर्गा कलश पर पूजा अर्चना करती थी। बताया जाता है कि बुधवार को वह कन्याओं को प्रसाद ग्रहण कराती। जिसकी तैयारी वह पहले से ही कर चुकी थी। इससे पहले वह कन्याओं को प्रसाद ग्रहण करा पाती, मंगलवार रात में अज्ञात हमलावरों ने उसकी बेहरमी से हत्या कर दी। गांव में मां बेटी की हत्या से ग्रामीणों में जहां रोष व्याप्त है तो वहीं ग्रामीणों के बीच कई तरह की चचाएं भी व्याप्त हैं। प्रत्येक पहलुओं पर पुलिस जांच में जुटी हुई है। पुलिस की मानें तो जल्द से जल्द हत्या में शामिल हत्यारों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

कहीं आशनाई में तो नहीं की गई हत्या?

नैनी। मां बेटी की हत्या के बाद सूत्रों पर यदि हम यकीन करें तो ग्रामीणों की दबी जुबान में कई तरह की चचाएं दिन भर व्याप्त रही। हालांकि ग्रामीण कुछ भी खुलकर बताने से भी कतराते रहे और सिर्फ इतना ही कहते रहे कि बजरंग बहादुर पटेल बिजली वायरिंग का प्राइवेट कार्य करता हैं और किसी से भी कोई मतलब नहीं रखते हैं। उनकी किसी से भी कोई रंजिश भी नहीं है। फिर भी ग्रामीणों की दबी जुबान कई और मामले की इशारा कर रहे थे। हालांकि पुलिस मृतक हुए लोगों एवं घायल के मोबाइल कॉल डिटेल्स को निकलवाने के लिए जुटी हुई है। कॉल डिटेल्स निकलने के बाद मामला बिल्कुल साफ हो जाएगा कि आखिर सत्यता क्या है। वहीं ग्रामीणों की मानें तो जिस समय अज्ञात हत्यारों ने वारदात को अंजाम दिए होंगे उस समय गांव के समीप ही दुर्गा पंडाल के कार्यक्रम का आयोजन चल रहा था। तेज आवाज होने की वजह से ग्रामीणों को वारदात की जानकारी नहीं हो पाई। हालांकि पुलिस पूरे मामले की जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है।

मां बेटी की हत्या के बाद शक के दायरे में रिश्तेदार भी हैं

नैनी। मंगलवार रात मां बेटी की हत्या के बाद जहां परिजनों ने गांव के ही चार लोगों को नामजद रिपोर्ट दर्ज कराया है। वहीं पुलिस प्रत्येक पहलुओं पर जांच पड़ताल करते हुए मृतक के रिश्तेदारों पर भी शक जाहिर करने में जुटी हुई है और जांच पड़ताल कर रही है। रिश्तेदारों से भी कई बिंदुओं पर पूछताछ जारी है।

गंगापार की तर्ज पर यमुनापार में की गई मां बेटी की हत्या

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के चक पूरे खुर्द ग्राम सभा के मजरा मियां का पूरा में मंगलवार रात अज्ञात हमलावरों ने जिस प्रकार से मां बेटी की हत्या को अंजाम दिए हैं। सूत्रों पर यदि हम यकीन करें तो इस प्रकार की हत्या प्रयागराज जिले के अंतर्गत गंगापार क्षेत्र के नवाबगंज, मऊआइमा व सोरांव थाना क्षेत्र के अंतर्गत में घटित हो चुकी है। जिस प्रकार से मां बेटी की शरीर के ऊपरी हिस्से गले और सिर पर धारदार हथियार वस्तु से वार किया गया है। उसी ओर इशारा कर रही है। हालांकि आला अफसरों के निर्देश पर गठित पुलिस की टीम प्रत्येक पहलुओं पर जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है। बताया जाता है कि इस प्रकार की घटना बावरिया गिरोह के लोग अंजाम देते हैं, लेकिन सूत्रों पर यकीन करें तो हत्यारों ने बड़ी चालाकी के साथ वारदात को अंजाम देकर पुलिस को गुमराह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। पुलिस हत्यारों की तलाश में ताबड़तोड़ चिन्हित स्थानों पर दबिश दे रही है।

दादा और पोती के बयान पर हत्यारे होंगे नकाबपोश

नैनी। मां बेटी के कातिल के चश्मदीद गवाह के रूप में घायल बजरंग बहादुर पटेल और उनकी पोती अंशिका पटेल हैं ही हत्यारों का राज खोल सकते हैं। सूत्रों पर हम यदि यकीन करें तो 6 वर्षीय बच्ची पुलिस के द्वारा पूछताछ के दौरान कई तरह के अपने बयान दे चुकी है। पुलिस उक्त 6 वर्षीय लड़की के बयानों को भी नजरअंदाज नहीं कर सकती है, लेकिन पुलिस भी उसके कई बयानों के अनउलझी पहेली में फंसती नजर आ रही है। हालांकि पुलिस जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है और मामले का जल्द से जल्द खुलासा करने का दावा कर रही है।

नवनीत मिश्रा था माफिया डॉन दिलीप मिश्रा का गुर्गा

नैनी। चक पूरे खुर्द ग्राम सभा के रेही कला, मियां का पूरा निवासी नवनीत मिश्रा पुत्र महेश नारायण मिश्रा लवायन कला गांव के रहने वाले विकासखंड चाका के पूर्व ब्लाक प्रमुख एवं माफिया डॉन दिलीप मिश्रा के लिए काम करता था। उसकी हत्या उस समय कर दी गई थी। जब वह बीते सन 2019 में गांव के समीप अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ किसी कार्य हेतु गया हुआ था। मौका पाते ही हत्यारों ने उसकी हत्या कर दी थी। उसी हत्या के सिलसिले में मृतक नवनीत मिश्रा के परिजनों ने गांव के ही चार लोगों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कराया था। पुलिस ऐसे ही कई पहलुओं पर जांच करने में जुटी हुई है।

सामाजिक समरसता और लोककला की अलख जगाएगा जमुनपार महोत्सव : डॉ.पाण्डेय

स्कूली बच्चों की गीत नृत्यऔर वाद विवाद प्रतियोगिता रहेगी आकर्षण के केंद्र

करछना। आगामी 18 अक्टूबर से बृजमंगल सिंह इँटर कालेज रामपुर के परिसर में आयोजित पांच दिवसीय जमुनापार महोत्सव अपनी माटी परिपाटी संस्कृत संस्कार सामाजिक समरसता और लोककलाओं की अलख जगाएगा।मंच पर रामकथा के प्रवाचक जहां अपने सनातन धर्म और जीवन आदर्शो को लेकर श्रोताओं के बीच ज्ञानगंगा प्रवाहित करेगें।वही जमुनापार के स्कूली बच्चे,गंवई प्रतिभाएं,कवि कलाकार,शिक्षिविद् अपनी इस परंपरा को सहेजने के लिए मंच पर प्रस्तुति ?ा देगें।यह बातें 24वे जमुनापार महोत्सव के आयोजन को लेकर रामपुर में हुई मिशन की बैठक के दौरान संयोजक डॉ.भगवत पाण्डेय ने कही। उ?होने बताया कि वेदपाठी बटुको द्वार मंत्रोच्चार के साथ कई तीर्थो से आनित जल कलश के अभिषेक और दीप प्रज्वलन के साथ पंच दिवसीय महोत्सव का शुभारंभ होगा।समापन दिवस पर पूर्व की परंपरा के अनुसार जमुनापार के माटी का नाम रोशन करने वाली विभिन्न क्षेत्र की प्रतिभाओं का मंच पर सम्मान किया जाएगा। कार्यक्रम प्रभारी अशोक बेशरम ने बताया कि बच्चों की गीत नृत्य प्रतियोगिताओं को लेकर जमुनापार के कई इंटर कालेजों के प्रधानाचार्यो से संपर्क जारी है।समापन दिवस पर अभिनंदन समारोह के पूर्व किवा सम्मेलन का भी आयोजन किया जाएगा।महोत्सव के सुचारू रूप से संचालन के लिए प्रचार समिति,स्वागत समिति,मंच व्यवस्था समिति का गठन भी कर दिया गया। उन्होने जमुनापार वासियों और विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े हुए लोगों से महोत्सव में पहुंचकर आयोजन को सफल बनाने की अपील की है। बैठक में स्थानीय कवि, कलाकार, साहित्यकार, समाजसेवी, शिक्षाविद और मिशन के लोग मौजूद रहे।

खंड विकास अधिकारी ने लोटाढ गांव का किया निरीक्षण

खण्ड विकास अधिकारी विकास कार्यों का निरीक्षण करतीं

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड । खंड विकास अधिकारी ने मेजा ब्लॉक के लोटाढ गांव मे विकास कार्यों का निरीक्षण किया। बता दें कि मेजा क्षेत्र के ग्राम सभा लोटाढ मे खंड विकास अधिकारी सपना अवस्थी ने पंहुचकर विकास कार्यों की जांच किया। वीडियो ने गांव मे बन रहे आवास, मनरेगा का काम, दिव्यांग शौचालय, सामुदायिक शौचालय, पंचायत भवन का सुंदरीकरण, मेड़बंदी, नाली निर्माण, कुशवाहा बस्ती में पक्की नाली, जॉब कार्ड रजिस्टर्ड की जांच सहित कई विकास कार्यों की जांच किया। वहीं वीडियो ने गांव की नाली सफाई को लेकर संबंधित को आदेशित किया। इस मौके पर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि मुलायम यादव, ग्राम पंचायत अधिकारी विकास जयसवाल, टेक्निकल असिस्टेंट नागेंद्र कुमार, ग्राम पंचायत सेवक दिनेश कुमार गुप्ता एवं दर्जनों लोग रहे।

न्यूज झरोखा

करछना के बसरिया गांव में लंबित शिकायतों का निस्तारण कराया एडीओ : रामेश्वर सिंह

करछना। विकास खंड के अंतर्गत बसरिया गांव में दुग्ध उत्पादन केन्द्र सहकारी समिति के भवन में तोड़ फोड़ की जांच की शिकायत की गई थी जिस पर पर विकास खंड करछना के एडीओ आईएसबी रामेश्वर सिंह, एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा, एवं एडीओ एस टी सुरेश कुमार के संयुक्त टीम द्वारा बुधवार को प्राथमिक विद्यालय बसरिया पहुंच कर ग्रामीणों के सामने पंचायत भवन आवास पात्रता एवं दूध उत्पादन सहकारिता समिति विवाद को सुलझाने के लिए ग्रामीणों के सामने सहमति जताई गई बता दें कि बसरिया गांव में दुग्ध उत्पादन केंद्र सहकारी समिति को कुछ लोगों ने क्षतिग्रस्त कर दिया था जिसकी शिकायत ग्रामीणों ने वीडियो करछना से किया था जिस पर संयुक्त टीम द्वारा बसरिया गांव पहुंचकर स्थलीय निरीक्षण कर और प्रधान व सचिव को निर्देश दिया है कि ग्राम सभा में प्रस्ताव पारित कर सहकारी दुग्ध उत्पादन केन्द्र को चालू कराया जाएगा जिससे ग्रामीणो का दुग्ध व्यवसाय चालु हो सके ।इस कार्य के लिए मनरेगा के अंतर्गत बनवाए जाने की ग्रामीणों के सामने सहमति व्यक्त की गई । साथ ही गांव के लोकनाथ प्रजापति के।आवास की शिकायत पर स्थलीय निरीक्षण किया गया जिसे मौके पर पात्र लाभार्थी द्वारा बनाए गए आवास को सही पाया गया वहीं दूसरी ओर गांव में ही बन रहे पंचायत भवन का भी निरीक्षण किया जिस पर गुणवत्ता को देखकर ठेकेदार को मानक के अनुरूप कार्य कराए जाने का निर्देश दिया इस मौके पर पंचायत सचिव प्रीति शुक्ला के अलावा प्रधान वह बड़ी संख्या में गांव के लोग उपस्थित रहे ।

भाजपा पिछड़ा मोर्चा जिला कार्यसमिति की बैठक संपन्न

सहसों। भारतीय जनता पार्टी का आगामी 2022 विधानसभा चुनाव को लेकर छत्रपति शिवाजी डिग्री कॉलेज सहसों में बुधवार को भाजपा पिछड़ा मोर्चा गंगा पार का जिला कार्य समिति की आवश्यक बैठक की गई। जिसमें उपस्थित बतौर मुख्य वक्ता के रूप में क्षेत्रीय अध्यक्ष पिछड़ा मोर्चा गंगापार अश्विनी कुमार पटेल ने अपने संबोधन में आगामी 2022 के विधानसभा चुनाव के परिप्रेक्ष्य में चर्चा करते हुए वहां पर उपस्थित सभी पदाधिकारियों कार्यकताओं को संबोधित करते हुए विधानसभा चुनाव में जीत के लिए कमर कस के तैयार रहने को कहा। मौके पर उपस्थित फूलपुर सांसद केसरी देवी पटेल ने भी कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा आगामी चुनाव के लिए कार्यकताओं एवं पदाधिकारियों तथा सभी जिम्मेदार पदस्थ लोगों को तन मन दृढ़ इच्छा से चुनावी समर में तैयार रहने को कहा। इस अवसर पर वहां पर मौजूद सभी मंडल अध्यक्ष एवं जिला पदाधिकारियों का स्वागत भी किया गया। बैठक को संबोधित करने वालों में अशोक कुमार शर्मा, अतुल कुमार, अनिरुद्ध सिंह पटेल जिला उपाध्यक्ष भाजपा गंगापार, विश्व गौरव जी, विपेन्द्र सिंह पटेल प्रमुख फूलपुर एवं राज कुमार पटेल रहे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए पिछड़ा मोर्चा के जिला अध्यक्ष ईश्वर चन्द बिन्द ने आए हुए अतिथियों का स्वागत और अभिनंदन करते हुए आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा की। बैठक का संचालन सी वी यादव जिला महामंत्री पिछड़ा मोर्चा गंगापार ने किया। बैठक में प्रमुख रूप से केसी बिन्द, रामसूरत विश्वकर्मा, भोला पटेल, विनोद गुप्ता, रविन्द्र पटेल, संतोष विश्वकर्मा, अमित बिन्द सहित समस्त मंडल के अध्यक्ष, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदि रहे।

कोटेदार के खिलाफ ग्रामीणों ने फूलपुर मजिस्ट्रेट को सौंपा ज्ञापन

सहसों। फूलपुर तहसील के ग्राम सभा महजुदवा के सैकड़ों ग्रामवासी कार्ड धारक कोटेदार के खिलाफ अशफाक अहमद के नेतृत्व में परगना मजिस्ट्रेट फूलपुर को कोटेदार की मनमानी घटतौली मोदी के फोटो युक्त झोले को बेच देने के संबंध दोषी कोटेदार के खिलाफ परगना मजिस्ट्रेट की अनुपस्थिति में उप जिला अधिकारी फूलपुर को संबोधित एस टी बाबू को ज्ञापन सौंपकर दुकानदार के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज और दुकान निलंबन की मांग की गई। इस अवसर पर उपस्थित गोपाल कृष्ण द्विवेदी राजा बाबू ने कहा कि उपरोक्त कोटेदार के खिलाफ अनियमितता और घटतौली के लिए जिम्मेदार मानते हुए कोटेदार से कुछ माह पूर्व एक हजार जुमार्ना लगाया गया था। इसके बावजूद भी उसे फिर से दुकान निर्गत कर दी गई। ग्रामवासी बार-बार अधिकारियों से कार्यवाही की मांग कर रहे हैं। परन्तु कोई कार्यवाही क्यों नहीं हो रही है यह बात समझ में नहीं आ रही है। संचालन करते हुए कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं अधिवक्ता देवराज उपाध्याय ने इस मामले में गहरी नाराजगी व्यक्त किया । इस मौके पर तहजीब उल हसन, गिरधारी लाल सरोज, सोमनाथ, दिनेश कुमार, पूर्व प्रधान फूलचंद, बड़े लाल, राकेश कुमार, विनोद कुमार बिंद, देवराज, प्रधान राम सिंह पाल, रामाश्रय, शमशेर बहादुर पटेल, बबलू प्रधान आदि लोग उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

जमुना जी में व्यक्ति के डूबने की सूचना पर पुलिस टीम द्वारा खोजबीन जारी

लालापुर। लालापुर क्षेत्र के माझीयारी गाँव में अवधेश शुक्ला उर्फ लखन के यहाँ कलकत्ता का बंगाली नाम का लड़का उम्र 38वर्ष कई वर्षो से रहता था और अवधेश शुक्ला उर्फ लखन के घर का खेती किसानी करता था ग्रामीणों ने बताया की जमुना जी की तरफ पशु चराने गया था कुछ सन्धिग्ध कपडे दिखाई पड़े और कुछ चारवाह लोग बता रहे थे की जमुना जी में कोई डूबता दिखाई दिया है लेकिन कौन है? कहाँ का है? इसकी पुस्टि नहीं हुई है और लालापुर पुलिस टीम सहित ग्रामीणों की मदत से माझी द्वारा खोजबीन चालू है देर रात तक पुलिस टीम और माझी के खोजबीन से अभी तक नहीं पता चला है जिसको लेकर माझीयारी गाँव में चर्चा का विषय बना हुआ।

अचानक कचहरी पहुंचे चीफ जस्टिस राजेश बिंदल

न्याय कक्षों का लिया जायजा रजिस्ट्रार जनरल भी रहे मौजूद

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। हाईकोर्ट के नवनियुक्त मुख्य न्यायमूर्ति राजेश बिंदल बुधवार सुबह जिला कचहरी का निरीक्षण करने अचानक पहुंच गए। उनके साथ महानिबंधक आशीष गर्ग भी थे। चीफ जस्टिस और रजिस्ट्रार जनरल के सुबह 10 बजे कचहरी पहुंचने से पहले तो लोग सकते मे आ गए। फिर जिला जज अमरजीत त्रिपाठी को जानकारी मिली तो वह भी पहुंच गए। बुधवार सुबह 10 बजे जब मुख्य न्यायाधीश और महानिबंधक कचहरी पहुंचे तो उस वक्त कुछ न्यायिक अधिकारी कोर्ट में बैठ चुके थे और न्यायिक कार्यवाही शुरू हो गई थी जबकि कई अदालतों में न्यायिक अधिकारी पीठासीन नहीं हुए थे। मुख्य न्यायाधीश ने अपने स्टाफ के साथ जिला कचहरी की बहु मंजिला इमारत न्याय भवन में निरीक्षण किया। वहीं दूसरी ओर जिला कचहरी की नवनिर्मित 24 कोर्ट रूम के नाम से जानी जाने वाली इमारत में रजिस्ट्रार जनरल ने भी अपने स्टाफ के साथ निरीक्षण किया। जिला जज अमरजीत त्रिपाठी को इसकी सूचना मिली तो वह तत्काल मुख्य न्यायाधीश की अगवानी को पहुंचे। मुख्य न्यायाधीश ने उन न्यायिक अधिकारियों के बारे में जानकारी ली जो अदालतों में नहीं बैठे थे। उन्होंने न्यायिक अधिकारियों को पूरे ड्रेस कोड में अदालत में बैठने की नसीहत भी दी। चीफ जस्टिस के दौरे की चर्चा कचहरी में दिनभर होती रही।

मानसिक संतुलन व्यक्ति को गायब किए जाने का आरोप

कोराव। नगर पंचायत कोरांव में एक किसान के अगुआ किए जाने एवम उसकी रपट न दर्ज किए जाने का आरोप है,जिसकी शिकायत शिकायत कर्ता ने उच्च अधिकारियों को दे रखी है। बता दें कि जगदीश प्रसाद सिंह पटेल पुत्र स्वर्गीय राम गुलाब सिंह कस्बा कोरांव प्रयागराज ने लिखित रूप से शिकायत की है कि मेरे सगे चाचा राजेंद्र प्रसाद सिंह जिनका मानसिक संतुलन ठीक नही है। जिन्हे कुछ लोगों ने अगुआ कर लिया है। चर्चा है कि अगुआ हुए व्यक्ति की कोरांव एवं आसपास के गांव अंतरी सिकमी आदि में उनके नाम कीमती जमीनें हैं। थाना पुलिस कोरांव में अपहरण किए जाने की नामजद तहरीर दी जा चुकी है,किंतु केस दर्ज नहीं की गई। इस मामले में शिकायत कर्ता ने उप पुलिस अधीक्षक मेजा आदि को भी अवगत लिखित रूप से किया गया फिर भी केस अभी तक दर्ज नहीं हुआ। आरोप है कि अगुआ करने वालों की नियत उनकी बेस कीमती सम्पति और बैंक बैलेंस को ऐंठने की है। इस संबंध में शिकायत है कि प्राथमिकी दर्ज की मांग किए जाने पर शिकायत कर्ता को जान से मारने आदि की तरह तरह की धमकियां दी जा रही है। जिससे किसी भी समय अप्रिय घटना घट सकती है। पुलिस, प्रशासन से हस्तक्षेप कर विधिक कार्यवाही किए जाने की मांग कथित रूप से अपहृत व्यक्ति के भतीजों ने सासन से की है।

नौ प्रकार के अंधकार को दूर करें क्रियायोग विधि से : स्वामी श्री योगी सत्यम

अखंड भारत संदेश

दीप जलाते क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम

प्रयागराज। झूंसी स्थित क्रियायोग आश्रम में अंतरराष्ट्रीय क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम ने साधकों को नवरात्रि पर्व के महत्व के बारे में समझाया कि नवरात्रि अपने विचारो को व्यक्त करने का, सत्य व असत्य, सही व गलत नवरात्रि का अभिप्राय है। अंधकार अज्ञानता, इसको आलस्य कहते हैं जड़त्व कहते हैं। जब अज्ञानता चरम सीमा पर हो कुछ दिखायी न पड़ रहा हो हम थम गये हों ऐसा लगे कि हमारा विकास अवरुद्ध हो गया हो हमारे शरीर के अंदर अन्त करण में एक शक्ति होती है। जिससे नव कहते हैं। नव का अर्थ नवीन है। वहां पर पता चलता है कि हम नीत्य नवीन हैं। हम नये हैं। हमारा रुपांतरण हो गया है। रुपांतरण की इस प्रक्रिया को हम वृद्ध कहते हैं। हम बढ़ रहे हैं । हम आगे विकसित हो रहे हैं। हमे समझना चाहिए कि हम जड़त्व नहीं है । हम अंधकार में नहीं है। हम अज्ञान में नहीं हैं,हम नीत्य नवीन है। जब यह सभी की अनुभूति होती है जब कहीं कोई अंधकार अज्ञानता की बात करता है। उस जगह पर हमे याद रखना चाहिए कि हम नीत्य नवीन है, हमारी निरंतर वृद्धी हो रही है। इसी भाव को व्यक्त कर लें। पर हम कहते हैं कि नवरात्रि की पूजा में प को कहते हैं- पाना ज- को कहते है ज्ञान अ - को कहते हैं किन प्रकार का ज्ञान सृजन, सुरक्षा, परिवर्तन का ज्ञान इस ज्ञान को उर्ध्वमुखी करें। नौ प्रकार के अंधकार काम, क्रोध, राग, द्वेश, मोह, मद, संस्कार, अहंकार, अविद्या। नौ प्रकारों के अंधकारो को दूर करने के लिए क्रियायोग ध्यान द्वारा अपने अन्तःकरण में अलौकिक प्रकाश को उत्पन्न करना होता है। उस प्रकाश को शास्त्रों में तम, सम, तीतीक्षा, उपरत्य, सद्धा, समाधान, यह प्रकाश है। क्रियायोग साधना के द्वारा हर मनुष्य को अनुभूतियां होती है मनुष्य अपनी वास्तविकता स्वयं जान लेता है। तथा परम तत्व की अनुभूति करते हुए परमानंद की अनुभूति करता है।

वरिष्ठ कांग्रेसी नेता यमुना प्रसाद पांडेय का निधन

अखंड भारत संदेश

सैदाबाद। ग्राम पंचायत गढ़वा के पंडितपुर निवासी अवकाश प्राप्त सीएमपी डिग्री कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर व वरिष्ठ कांग्रेसी नेता यमुना प्रसाद पांडेय 75 वर्ष की उम्र में दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया ' जिन का अंतिम संस्कार दारागंज घाट पर हिंदू रीति रिवाज से गुरुवार को किया जाएगा ' आपको बताते चलें कि अपने व्यक्तित्व स्वभाव के धनी, सरल मृदुभाषी वरिष्ठ कांग्रेसी नेता लोगों के दिलों पर छाए रहते थे , आज वह इस दुनिया में नहीं है मगर उनकी यादें सभी के दिलों में बसी हुई है, हर छोटे-बड़े कामों में शरीख होने वाले निश्छल स्वभाव के ऐसे लोग बहुत कम ही देखे जाते थे ' इनके जीवन की शुरूआत ग्राम पंडितपुर के एक छोटे से परिवार से शुरू हुआ , धीरे धीरे पढ़ लिख कर सीएमपी डिग्री कॉलेज के प्रोफेसर बने तथा कांग्रेस पार्टी के सक्रिय सदस्यों में होने के नाते उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री डॉ राजेंद्र कुमारी बाजपेई के पी आर ओ भी रह चुके हैं ' तथा कांग्रेस पार्टी के उच्च नेताओं के बीच अच्छी पैठ जमाने से एक बार विधानसभा हॅडिया से कांग्रेस पार्टी के टिकट से विधायकी का चुनाव भी लड़ चुके हैं ' वही 19 के दशक में रामलीला मंच में भी अपने किरदार से दर्शकों के दिलों पर छाए रहते थे कभी लक्ष्मण बनकर व कभी जनक के रोल में मंच पर दिखाई देते थे ' ग्राम पंडितपुर के रामलीला कमेटी में वरिष्ठ सदस्य के रूप में भी रह चुके हैं जो हंडिया तहसील अंतर्गत प्रसिद्ध रामलीला कमेटी हुआ करती थी।

हादसे में समाचार वितरक के बेटे की दर्दनाक मौत

नैनी। नैनी क्षेत्र के छिवकी गांव निवासी समाचार पत्र वितरक संघ नैनी के पूर्व अध्यक्ष मोहम्मद अहमद के पुत्र एवं समाचार पत्र वितरक इरफान उर्फ गोलू(२६)की बुधवार की भोर में रेलवे स्टेशन के ओवर ब्रिज पर लगी लोहे की राड पेट में घुस जाने के कारण मौत हो गयी। इस हादसे की सूचना मिलते ही परिजन मौके पर पहुंचे गंभीर दशा में उसे अस्पताल ले जाने का प्रयास कियाा। परन्तु इससे पूर्व ही उसकी मौत हो चुकी थी। जानकारी के अनुसार मोहम्मद अहमद का परिवार मूल रूप से फतेहपुर का रहने वाला है वह कई दशक से नैनी के छिवकी गांव में अपना मकान बनवाकर परिवार सहित निवास करते चले आ रहे हैं। परिवार का प्रमुख कारोबार समाचार पत्र वितरण ही है। इरफान दो भाइयों में छोटा था। बुधवार की सुबह वह रोज की तरह अखबार वितरण के सेण्टर मेवालाल की बगिया जाने के लिए चला था। रास्ते में वह बड़े हादसे का शिकार हो गया। जिससे उसकी मौत हो गयी जानकारी होने पर जीआरपी चौकी नैनी ने पहुंचकर शव का पंचनामा किया।

विधिक पंजीयन के बिना ही वकालत कर रहे वकील साहब!

बार काउंसिल में नहीं है रजिस्ट्रेशन काली कोट पहन बने वकील

अखंड भारत संदेश

फूलपुर तहसील में बैठक करते बार एसोसिएशन के पदाधिकारी

फूलपुर। फूलपुर तहसील में इन दिनों वकालत कर रहे दर्जनों ऐसे तथाकथित वकील हैं जो बिना रजिस्ट्रेशन कराए ही काली कोट पहन कर अधिवक्ता अधिनियम का उलंघन कर रहे हैं। फूलपुर तहसील बार एसोसिएशन ने ऐसे लोगों को सख्त हिदायत दी है कि बिना रजिस्ट्रेशन के तहसील परिसर में अधिवक्ताओं का ड्रेस न पहनें। उक्त के सम्बन्ध में बार एसोसिएशन तहसील फूलपुर के पदाधिकारियों की एक बैठक बुधवार को एसोसिएशन के अध्यक्ष अरविंद यादव की अध्यक्षता में बुलाई गई। बैठक में बिना रजिस्ट्रेशन के ही वकालत करने के मामले को गंभीरता से लेते हुए बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अरविंद यादव ने कहा कि बिना रजिस्ट्रेशन कराए कोई भी व्यक्ति तहसील परिसर में न तो काली कोट पहने और न हीं अपने को अधिवक्ता बताकर पैरवी करे। उन्होंने कहा कि अगर कोई भी व्यक्ति ऐसा करते पाया जाएगा तो उसके विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई जाएगी। वहीं बार एसोसिएशन के महामंत्री दिलीप कुमार आजाद ने तहसील के वरिष्ठ अधिवक्ताओं से ऐसे तथाकथित वकीलों को संरक्षण न देने की अपील करते हुए कहा कि हम अपने कार्यो को विधिक रूप से ही करते हैं इसलिए हमें अधिवक्ता अधिनियम का पालन करना चाहिए जिससे तहसील की गरिमा बनी रहे। वहीं तहसील से सम्बन्धित कार्यो के लिए गए मुवक्किल भी अनजाने में ऐसे लोगों को अपना काम देकर धन व समय का नुकसान कर लेते हैं। क्षेत्रीय ग्रामीणो का आरोप है कि कुछ ऐसे भी लोग तहसील में काली कोट पहनकर मुवक्किल के कार्यो को निपटाते हैं जिन्होंने वकालत की डिग्री भी हासिल नहीं की है।

समाचार पत्र वितरक को पुत्र शोक

नैनी। समाचार पत्र वितरक मोहम्मद अहमद के पुत्र इरफान अहमद उर्फ गोलू का नैनी रेलवे स्टेशन पुल पर जाते समय पेट में लोहे का राड घुस जाने के कारण निधन हो गया। इस हादसे को लेकर समाचार पत्र वितरकों एवं स्थानीय पत्रकारों ने शोक व्यक्त किया है। समाचार पत्र वितरकों में शोक का माहौल कायम रहा। शोक सभा में ओम प्रकाश साहू विजय कुमार राय सुभाष चन्र्द गुप्ता ओम प्रकाश मिश्रा संजय साहू अरविन्द साहू पिन्टू साहू मन्नू यादव राजू कपूर अनिल यादव शिवेन्र्द वैष्ठलास यादव गंगाराम गुप्ता प्रमोद शर्मा विरेन्र्द शर्मा राजा शर्मा मनोज शर्मा आदि मौजूद रहे। इसीक्रम में नैनी पत्रकारों ने शोक सभा कर समाचार पत्र वितरक मोहम्मद अहमद के पुत्र इरफान उर्फ गोलू के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया। इसके साथ ही उक्त पुल पर लगी लोहे की खतरनाक से हुए हादसे की जांच कराने व दोषी के खिलाफ कार्यवाई करने एवं वितरक परिवार को मुआवजा दिये जाने की मांग उठायी है। इस मौके पर राजीव वर्मा, शिवमूरत केसरवानी, नरेन्द्र श्रीवास्तव, सूर्य प्रकाश त्रिपाठी, सुनील गिरि, गौरव केसरवानी, सुनील केसरवानी, अखिलेश शुक्ला आदि प्रमुखता से शामिल रहे।

अष्टमी को भक्तों ने किया महागौरी की पूजा अर्चना

करछना। शारदीय नवरात्रि के आठवे दिन बुधवार को क्षेत्र के देवी मंदिरों एवं पूजा पंडालों में भक्तों ने महागौरी की विधि विधान से पूजा अर्चना किया । नवरात्र के नौ दिन अनुष्ठान करने वाले भक्तों ने गंगा में पुण्य की डुबकी लगाने के साथ ही पूजा पंडालों में विधि विधान से पूजा अर्चना किया । करछना बाजार के मंदिर तिराहा, मां काली शक्तिपीठ स्थल,पर भक्तों द्वारा विधि विधान से पूजन अर्चना भक्तों द्वारा किया जा रहा । क्षेत्र के बरदहा घटवा रोकड़ी धरवारा,बसही,रामपुर सहित दर्जनों स्थानों पर नवरात्र के समय मंदिर एवं पंडालों को लगाकर पूजा मे लोग जुटे हैं।

मछली पालन वाले तालाब में मूर्ति विसर्जन न करें

करछना। क्षेत्र के अरई गांव स्थित 942 का पट्टा मत्स्य पालन के लिए किया गया है जिसमे प्रशासन की ओर से दुर्गा प्रतिमा विसर्जित करने की अनुमति दी है पट्टाधारक का कहना है कि तालाब मे छोटी मछलियो के बच्चे डाले गये है और मूर्ती विसर्जित होने से मछली के बच्चे बीमार होकर मर सकते है।पट्टा धारक कृष्ण कुमार ने उप जिलाधिकारी से शिकायत करते हुए गांव मे स्थित अन्य तालाब मे मूर्ती विसर्जित कराने की गुहार लगाई जिसपर एसडीएम ने राज्सव टीम को जांच कर कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया है।

राजनैतिक द्वेष के चलते नाबालिक के अपहरण में प्रधान को फंसाया गया : एसएसपी से शिकायत

करछना। क्षेत्र के डाड़ों गांव में बीते दिनों हुए एक नाबालिग किशोरी के अपहरण के मामले में राजनैतिक द्वेष वश मुकदमें में नाम जोड़वाने को लेकर गांव के वर्तमान प्रधान मिथिलेश कुमार ने एसएसपी से गुहार लगाई है।प्रधान का कहना है कि घटना के समय उसका नाम किशोरी का बयान लेने तक नही था लेकिन कलम बंद बयान में राजनैतिक विरिधियों ने उससे जबरन कहवाकर समलित करवा दिया।इसे लेकर वह काफी क्षुब्ध है और गुहर लगाते हुए ऐसे घृणित काम में संक्षम अधिकारी गहन जांच कराने और उसे द्वेष के तहत फंसाने वाले व्यक्तियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की है।

कांग्रेस के दिग्गज नेता पवन कुमार तिवारी आम आदमी पार्टी में हुए शामिल

अखंड भारत संदेश

कांग्रेस नेता आम आदमी पार्टी में शामिल होते

हंडिया। बुधवार को आम आदमी पार्टी के विधानसभा हड़िया अध्यक्ष बिनोद कुमार पांडेय के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी के दिग्गज नेता पवन कुमार तिवारी आम आदमी पार्टी में शामिल हुए। बता दें कि पवन तिवारी ने अपने राजनैतिक जीवन में कई अहम जिम्मेदारियों का निर्वहन किया है । इ.वि.वि से छात्र नेता, महासचिव लोहिया वाहिनी एवं मीडिया प्रभारी (कांग्रेस),चेयर मैन मनरेगा समिति, प्रदेश प्रवक्ता, सदस्य कुंभ मेला सलाहकार समिति जैसे पद पर आसीन रहे । पवन तिवारी द्वारा सदस्यता लिए जाने पर उपस्थित पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं द्वारा मिठाई खिलाकर स्वागत किया गया साथ ही साथ माला पहनाकर एवं बुके देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य अल्ताफ अहमद, जिला महासचिव नितिन सिंह पटेल, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष ज्योति प्रकाश चौबे, हड़िया विधानसभा अध्यक्ष बिनोद कुमार पांडेय, विधानसभा सचिव राजेश यादव, जिला अध्यक्ष विशाल यादव, जिला किसान अध्यक्ष बिरेंद्र कुशवाहा समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

डीसीबी अध्यक्ष ने एटीएम वैन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

अखंड भारत संदेश

जसरा। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाओं के विस्तार के लिए नाबार्ड के सहयोग से जिला सहकारी बैंक की मोबाइल एटीएम वैन शुरूआत की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन उप आयुक्त एवं उप निबंधक प्रयागराज मंडल एवं अध्यक्ष जिला सहकारी बैंक लि० अमरनाथ सिंह मौर्य ने वैन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड प्रयागराज में बुधवार को नाबार्ड के सहयोग से बैंक को मोबाइल ए0टी0एम0 वैन उपलब्ध कराई गयी है। जिसके द्वारा घर घर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर लाभार्थियों को बैंकिंग की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएगी। जिला सहकारी बैंक प्रयागराज के अध्यक्ष अमर नाथ सिंह मौर्य द्वारा बताया गया कि मोबाइल वैन के जरिए लोगों में जागरुकता लाने का प्रयास भी किया जाएगा। जिससे ग्रामीण इलाकों में लोग बैंक का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें। अभी तक बहुत से ग्रामीण क्षेत्र के किसान ए टी एम से वंचित थे। यह ए टी वैन से अब किसान भाई भी पैसा निकाल सकेंगे ककार्यक्रम को जिला प्रबंधक नाबार्ड अनिल सिंह ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि इससे गांवों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही अलग-अलग गावों में डोर स्टेप पर बैंकिंग संबंधी सारी सुविधाएं मिल सकेंगी। किसान अपनी जरूरत के मुताबिक अपने डेबिट कार्ड का उपयोग कर सकेंगे क कार्यक्रम को सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता प्रमोदवीर आर्य द्वारा भी सम्बोधित किया गया क सचिव / मुख्य कार्यपालक अधिकारी सुनील चंद्र श्रीवास्तव द्वारा बताया गया कि यह मोबाइल वैन भारत सरकार के गो डिजिटल कार्यक्रम के अंतर्गत मिली है क कार्यक्रम में बैंक के समस्त निदेशक गण ,अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मोहम्मद बिलाल अनुभाग अधिकारी विकास अनुभाग द्वारा किया गया। मोबाइल वैन की विस्तृत जानकारी मोहम्मद काशिफ अनुभाग अधिकारी आई टी द्वारा दी गयी क शाखा प्रबंधक हरेंद्र भारती ने सबका आभार जताया। इस मौके पर मनोज कुमार सिंह, केके गुप्ता, तुषार कान्त,राजेश कुमार एवं शाखा प्रबंधक संदीप सोनकर सहित सैकड़ों लोग रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत हकीमपुर विकास खण्ड कौशाम्बी जनपद कौशाम्बी

निविदा सूचना
मनरेगा योजना अंतर्गत

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कौशांबी विकासखंड के हकीमपुर ग्राम पंचायत में खूंटी के घर से बिहारी यादव के गोंडा तक नाली वा इंटरलॉकिंग का कार्य मनरेगा योजना के अंतर्गत कराया जाना प्रस्तावित है जिसकी अनुमानित लागत 5 लाख 70 हजार 829 रुपये है।हकीमपुर ग्राम पंचायत में अदालती धोबी के घर से राजेन्द्र यादव के घर तक नाली व इंटरलाकिंग कार्य मनरेगा योजना के अंतर्गत कराया जाना प्रस्तावित है कार्य की अनुमानित लागत 5 लाख 05 हजार 640 रुपए है उक्त कार्यों के लिए पंजीकृत फर्मो से टेंडर आमंत्रित किये जाते है 15 अक्टूबर 2021 से 22 अक्टूबर 2021 तक टेंडर फार्म ग्राम पंचायत में जमा किए जाएंगे और 23 अक्टूबर 2021 को 11 बजे दिन में ग्राम पंचायत भवन में टेंडर खोला जाएगा।

ग्राम प्रधान संतोष बाबू हकीमपुर ग्राम पंचायत हकीमपुर — **पंचायत सचिव चन्द्र प्रकाश पाण्डेय ग्राम पंचायत हकीमपुर**

मेजा रोड पुलिस द्वारा शांति भंग के अंदेशा पर दो अभियुक्त को किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

मांडा। पुलिस उपमहानिरीक्षक/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी के निर्देशन व एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित व सीओ मेजा डॉक्टर भीम कुमार गौतम के निर्देश के क्रम में प्रभारी निरीक्षक थाना मांडा अवन कुमार दीक्षित के नेतृत्व में उपनिरीक्षक आशीष कुमार राय चौकी प्रभारी भारतगंज द्वारा शांति भंग के अन्देशा पर 02 अभिक्तो 1, श्याम सुंदर पुत्र सुरजबली निवासी केवलपुर गाड़ीवान मुहल्ला कस्बा भारतगंज थाना मांडा जनपद प्रयागराज उम्र लगभग 32 वर्ष 2, बृजलाल पुत्र सुरजबली निवासी केवलपुर गाड़ीवान मुहल्ला कस्बा भारतगंज थाना मांडा जनपद प्रयागराज उम्र करीब 34 वर्ष को गिरफ्तार कर न्यायालय उपजिलामजिस्ट्रेट मेजा के यहां भेजा गया।

इस्टेट क्वालिटी मॉनिटर पी हलधर ने की थी घूरपुर से प्रतापपुर प्रधानमंत्री सड़क की जांच

अखंड भारत संदेश

लालापुर चौराहे से मदुरी पुलिया तक बनवाने का दिया गया था आश्वासन, सड़क की गुणवत्ता पर उठाया गया था सवाल,अधिकारियों को लगाई थी जमकर फटकार

लालापुर। तरहार क्षेत्र की इकलौती सड़क घूरपुर प्रतापपुर मार्ग का निर्माण प्रधानमंत्री सड़क योजना के द्वारा चार वर्ष पूर्व किया गया।परन्तु घटिया निर्माण एवं अनियमितता के चलते बनने के कुछ माह बाद ही सड़क पर जगह-जगह गड्ढे बन गये।जिसकी शिकायत कई बार ग्रामीणों ने किया इस्टेट क्वालिटी मॉनिटर ने की प्रधानमंत्री सड़क जांच की परन्तु आज तक कोई कारवाही नही हुई।लालापुर के ग्रामीणों की लगातार शिकायत पर प्रधानमंत्री कार्यालय के आदेश पर 2017 में जांच हुई थी जो की दिल्ली से आये प्रधानमंत्री सड़क के स्टेट क्वालिटी मॉनिटर पी हलधर ने लालापुर से प्रतापपुर तक बनी प्रधानमंत्री सड़क की जांच किया।जांच के दौरान कई जगह सड़क पर गड्ढे बनाकर गिट्टी की साइज,मोरंग इत्यादि की जांच की गयी थी ।जांच के दौरान कई जगह ठेकेदार द्वारा निर्माण में अनियमितता बरते जाने पर अधिकारियों को जमकर फटकार भी लगाया गया था ।लालापुर चौराहा के पास,मदुरी गांव,सोपारी बाग ,डेराबारी माइनर के आगे खराब सड़क को तत्काल दुरुस्त कराने को कहा भी गया था आज भी लालापुर क्षेत्र में रोड के किनारे नाली नहीं बनाई गई है ।जांच के दौरान जुटे ग्रामीणों ने ठेकेदार का जमकर विरोध भी किया गया था ।लालापुर चौराहे से बैंक रोड तक सड़क के किनारे नाली नही बनाये जाने का ग्रामीणों ने ठेकेदार का जमकर विरोध किया।स्टेट क्वालिटी मॉनिटर ने आश्वासन दिया की नाली बनाने का प्रस्ताव वो फिर से पास करने के लिए कार्यालय को उपलब्ध करा देंगे।जल्द ही प्रस्ताव पास होने के बाद नाली का निर्माण हो सके। लालापुर के ग्रामीण मोहित मिश्र, मनोज त्रिपाठी, शिवेंद्र पांडेय, गोइसरा के अखिलेश पांडेय, डब्लू तिवारी, डेराबारी के अजय सिंह, अमर सिंह ने बताया की सड़क की शिकायत कई बार विभागीय अधिकारियों से की गयी।परन्तु आज कोई कारवाही नही हुई। जांच के दौरान अवर अभियंता उमानाथ मिश्र ,अभियंता प्रियंका त्रिपाठी मौजूद रहे। अभियंता प्रियंका त्रिपाठी से दूरभाष द्वारा संपर्क किया गया लेकिन नहीं हुआ।

कार्यालय ग्राम पंचायत भटवरिया विकास खण्ड कौशाम्बी जनपद कौशाम्बी

निविदा सूचना
मनरेगा योजना अंतर्गत

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कौशांबी विकासखंड के भटवरिया ग्राम पंचायत में पक्की सड़क से फूलचंद्र यादव के घर तक नाली वा इंटरलॉकिंग का कार्य मनरेगा योजना के अंतर्गत कराया जाना प्रस्तावित है जिसकी अनुमानित लागत 3 लाख 87 हजार 995 रुपये है भटवरिया ग्राम पंचायत के मजरा बभन कांटी में लालचंद के घर से बृजलाल के घर तक नाली व इंटरलाकिंग कार्य मनरेगा योजना के अंतर्गत कराया जाना प्रस्तावित है कार्य की अनुमानित लागत 5 लाख 13 हजार 772 रुपए है उक्त कार्यों के लिए पंजीकृत फर्मो से टेंडर आमंत्रित किये जाते है 15 अक्टूबर 2021 से 22 अक्टूबर 2021 तक टेंडर फार्म ग्राम पंचायत में जमा किए जाएंगे और 23 अक्टूबर 2021 को 11 बजे दिन में ग्राम पंचायत भवन में टेंडर खोला जाएगा।

ग्राम प्रधान चन्द्र नारायण ग्राम पंचायत भटवरिया — **पंचायत सचिव निखिल सिंह ग्राम पंचायत भटवरिया**

खबर संक्षेप

43 समूह सखियों के माड्यूल प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान में विकास खण्ड शिवगढ़, सांगीपुर, सण्ड़वा चन्द्रिका, बाबा बेलखरनाथधाम से चयनित 43 समूह सखियों का 8 दिवसीय माड्यूल-1 एवं माड्यूल-2 के प्रशिक्षण का समापन हुआ। इस अवसर पर उपायुक्त स्वतः रोजगार डा0 एन0एन0 मिश्रा ने दीदियों को समूहों की देखरेख करते हुये कैसे अपने समूह का लेखांकन करना है, साथ में सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूक होकर शिक्षा को बढ़ावा देना, बाल विवाह रोकना, लड़की-लड़के को समानता से पालन पोषण करते हुये उच्च शिक्षा प्राप्त कराना, साफ-सफाई का ध्यान देना, आजीविका को बढ़ावा देना, सभी दीदियों को उनकी रूचीनुसार आजीविका मुहैया कराना, किशोरियों को माहवारी स्वच्छता प्रबन्धन पर शारीरिक साफ-सफाई का ध्यान देना एवं खान-पान पर अधिक बल देने की जरूरत है आदि महत्वपूर्ण जानकारी दी। इन दीदियों द्वारा लगभग 4300-4500 स्वयं सहायता समूह की दीदियों को जानकारी प्राप्त होगी। इन समूह सखियों को प्रमाण पत्र का वितरण भी किया गया। इस अवसर पर जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, प्राचार्य अफीम कोठी शिव प्रकाश, मिशन प्रबन्धन सुमन पाण्डेय, रतन मिश्रा, ज्योतिमा आदि उपस्थित रही।

अब डाक विभाग के लिफाफों पर होगा पं0 मुनीश्वरदत्त उपाध्याय का चित्र

अफीम कोठी में सांसद संगम लाल ने डाक विभाग के स्पेशल कवर का किया अनावरण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय डाक विभाग द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रतापगढ़ के प्रथम सांसद, संविधान निमार्ता समिति के सदस्य तथा जिले में शिक्षा की अलख जलाने वाले पं0 मुनीश्वरदत्त उपाध्याय के सम्मान में स्पेशल कवर का अनावरण सांसद संगम लाल गुप्ता ने अफीम कोठी के सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में किया।

उन्होंने कहा कि अब डाक विभाग के लिफाफों पर पंडित मुनीश्वरदत्त उपाध्याय का चित्र होगा। डाक विभाग तथा केन्द्र सरकार ने पं0 मुनीश्वरदत्त उपाध्याय के योगदानों को देखते हुए यह सम्मान दिया है। उन्होंने कहा कि मुनीश्वरदत्त के जिले को दिये गये योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि समाज को सुदृढ़ बनाने के लिये शिक्षा जरुरी है। यह बात पंडित मुनीश्वरदत्त उपाध्याय अच्छी तरह जानते थे और उन्होंने जिले के कोने-कोने में शिक्षण संस्थाओं को खोलकर लोगों को न केवल शिक्षित बनाया, बल्कि जिले में शिक्षा का स्तर भी बढ़ाया। उन्होंने डाक विभाग द्वारा जारी स्पेशल कवर को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि पूर्ववर्ती सरकारों में ऐसे महापुरुष को सम्मानित करने का कार्य नहीं किया गया जबकि मोदी की केन्द्र सरकार सदैव सेनानियों तथा समाज में कुछ नया करने वालों को आगे बढ़ाने का कार्य करती है। इस अवसर पर डा0 लालजी त्रिपाठी, विवेक उपाध्याय, ओम प्रकाश पाण्डेय धमार्चार्य ने भी पंडित मुनीश्वरदत्त उपाध्याय के योगदानों की चर्चा करते हुए अनेक संस्मरण सुनाया। डाक विभाग के प्रवर अधीक्षक पी0 नरसिंह ने बताया कि डाक विभाग स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की स्मृति में स्पेशल कवर जारी करता है। इसमें अब पंडित मुनीश्वरदत्त उपाध्याय का अब चित्र होगा। प्रारंभ में ओम प्रकाश पाण्डेय गुड्डू, महेन्द्र सिंह, डा0 आरपी चैबे ने सांसद का स्वागत किया। कार्यक्रम में पंडित मुनीश्वरदत्त उपाध्याय की पुत्रवधू डा0 ऊषा उपाध्याय, पुत्रियां गीता तिवारी व मीरा तिवारी, डा0 ऊषा की पुत्री डा0 अंशु तिवारी, डा0 आरपी चैबे, लखनऊ में भौतिक विज्ञान के प्राध्यापक डा0 भुवन आदि ने पंडित जी की स्मृतियों की चर्चा करते हुए सांसद संगम लाल के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन डाक विभाग के संजीव सिंह ने किया।

डाक विभाग के स्पेशल कवर का अनावरण करते सांसद संगम लाल गुप्ता

कार्यक्रम में नहीं था पंडित मुनीश्वरदत्त का कोई चित्र

प्रतापगढ़। कार्यक्रम में पंडित मुनीश्वरदत्त उपाध्याय का कोई फोटो न लगने की चर्चा भी वक्ताओं ने की। पंडित मुनीश्वरदत्त उपाध्याय की पौत्री डा0 अंशु त्रिपाठी ने इस कमी को इशारा किया तो प्रवर अधीक्षक पी0 नरसिंह ने कमी मानते हुए कहा कि जल्दबाजी में यह चूक हुई है।

जिला कारागार में हुआ विधिक साक्षरता का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव मनाये जाने के सम्बन्ध में दिये गये दिशा निर्देश व जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण संजय शंकर पाण्डेय के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव नीरज कुमार त्रिपाठी द्वारा जिला कारागार का निरीक्षण करने के पश्चात सचिव की अध्यक्षता में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में सचिव ने बन्दियों से उनकी परेशानियों व विधिक समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की एवं उनको उनके अधिकारों के बारे में अवगत कराया जिसका उनके द्वारा लाभ लिया जा सकता है। शिविर में उपस्थित बन्दियों से उनके स्वास्थ्य एवं खान-पान के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी। सचिव द्वारा जेल में निरूद्ध बन्दियों को विधिक जानकारी प्रदान की गयी। इस अवसर पर जेल विजिटर विश्वनाथ त्रिपाठी एडवोकेट ने बन्दियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। इस अवसर पर राजेन्द्र प्रसाद चैधरी एवं उप जेलर सुनील कुमार द्विवेदी सहित बन्दीगण उपस्थित रहे।

जागरूकता शिविर में दी गई जानकारी

पट्टी स्थित रुरे में लोगों को दिये गये टिप्स

पट्टी, प्रतापगढ़। सरकार द्वारा आयोजित आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत पट्टी तहसील स्थित रूरे में लोगों को पीएलबी राम प्रकाश पांडे द्वारा जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने लोगों के लिए कल्याणकारी योजनाओं पर चर्चा करते हुए बताया कि गरीबों के लिए सरकार की तरफ से वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, दिव्यांग पेंशन, प्रधानमंत्री आवास, मुख्यमंत्री आवास, आम आदमी बीमा, कृषक दुर्घटना बीमा, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम, भवन निर्माण श्रमिकों के लिए अनेक प्रकार की कल्याणकारी योजनाएं आदि का प्रावधान किया गया है, जिसे विभिन्न विभागों से संपर्क कर प्राप्त किया जा सकता है। इस अवसर पर निःशुल्क विधिक सहायता से संबंधित पंपलेट का वितरण भी किया गया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान अरविंद वर्मा, पवन पटेल, कमलेश, राहुल, पंकज आदि रहे।

आवास विकास कालोनी में सीओ सिटी ने की पूजा-अर्चना

मां दुर्गा की पूजा-अर्चना करते सीओ सिटी अभय पाण्डेय

मिशन शक्ति योजना पर डाला गया प्रकाश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नवरात्र के पावन पर्व पर आज आवास विकास कलोनी सी सेक्टर में मां काली धाम पर मां दुर्गा और माता काली की पूजा अर्चना एवं आरती में बतौर मुख्य अतिथि जनपद के सीओ सिटी अभय पांडेय, अति विशिष्ट अतिथि के रूप में कांग्रेस के सदर विधान सभा के प्रत्याशी रूप में घोषित युवा नेता डॉक्टर नीरज तिवारी, वरिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर मनोज खत्री, कांग्रेस सेवा दल के जिला अध्यक्ष महेंद्र शुक्ल, करनपुर वार्ड के सभासद विनय सिंह भोला, डॉक्टर क्षितिज श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सीओ सिटी अभय पांडेय ने जनपद की सभी मातृ शक्तियों के स्वावलंबी और आत्म निर्भर बनाने के सरकार की मिशन शक्ति योजना पर प्रकाश डालते हुए मां दुर्गा से मातृ शक्तियों को समाज में एक संबल के रूप में स्थापित होने के लिए मां से प्रार्थना की। इस अवसर पर डॉक्टर नीरज तिवारी ने मां से प्रार्थना किया की माता रानी समाज के सभी वर्गों की सेवा, क्षेत्र के विकास करने के लिए उन्हें शक्ति दें ताकि वह लोगो के सुख दुख के सहभागी बन सकें। साकेत गर्ल्स कालेज के प्रबंधक अरविंद श्रीवास्तव ने मिशन शक्ति की चर्चा करते हुए कहा की यह अवसर मां की पूजा के साथ साथ लोगो के स्वस्थ और पवित्र मन से एक दूसरे से जुड़ने और जोड़ने का है इस महाआरती के बहाने हम लोगो को कालोनी वासियों से जुड़ने का अवसर प्राप्त होता है। वरिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर मनोज खत्री ने माता रानी से सभी को स्वस्थ और मस्त रहने की कामना की। सभासद विनय सिंह ने भी कालोनी वासियों द्वारा पूर्व की भांति चली आ रही परंपरा को पूरी हर्षोर्लास के साथ मनाने पर आयोजन समिति को बधाई दी है। इस कार्यक्रम का संचालन अमितेंद्र श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर मीराभवन वार्ड की सभासद शील सिंह के पुत्र युवा भाजपा नेता धीरज सिंह, संतोष वर्मा, मनोज श्रीवास्तव, बंटू मिश्र, सूरज मिश्र आदि मौजूद रहे।

रामलीला समिति के पदाधिकारियों को सम्मानित करते अतिथिगण

श्री रामलीला समिति के पदाधिकारियों का हुआ सम्मान

प्रतापगढ़। श्री रामलीला समिति के पदाधिकारीगण दशहरा व भरत मिलाप को सकुशल संपन्न कराने के लिए राजगढ़ गायत्री गंगा ग्रुप के प्रज्ञा कुमार सिंह को आमंत्रित करने के लिए पहुंचे। प्रज्ञा कुमार ने रामलीला समिति के पदाधिकारी संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य, उपाध्यक्ष संजय खंडेलवाल, संयोजक दिनेश कुमार, मंत्री विपिन गुप्ता, रवि सिंह, नीरज आदि पदाधिकारियों को माला पहनाकर रामचरितमानस की पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया और कहा कि रामलीला समिति के कार्यों की जितनी भी सराहना की जाए वह कम है। पदाधिकारीगण दशहरा व भरत मिलाप ऐतिहासिक बनाने में जोर शोर से लगे हुए हैं। भगवान सारे काम सकुशल संपन्न कराकर जिले के राम भक्तों का सभी पदाधिकारियों का मनोबल बढ़ाने की प्रार्थना हम सब भगवान प्रभु श्रीराम से करते हैं। रामलीला समिति के पदाधिकारियों का भारत मिलाप का मुख्य अतिथि के रूप में प्रज्ञा कुमार सिंह को आमंत्रित किया।

हनी ट्रैप के मामले में पुलिस ने किया महिला सहित दो साथी को गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

तीनों आरोपी आपस में चलाते थे गैंग

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी कोतवाली में तैनात एक सिपाही से एक महिला अपना वास्तविक नाम छिपाकर मोबाइल कॉल के जरिए दोस्ती करके जबरन झूठे मुकदमे में फंसाने तथा दो लाख रुपये मांगने के मामले में पुलिस ने महिला सहित दो साथियों को गिरफ्तार कर संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया और सभी आरोपियों को जेल भेज दिया।

पट्टी कोतवाली में तैनात सिपाही शिव कुमार यादव ने इस मामले में तहरीर दिया था। पुलिस ने ब्लैकमेल करने वाली महिला रोशनी सरोज पुत्री राकेश सरोज निवासी कसेरूआ थाना मीरपुर जिला जौनपुर तथा उसके दो साथी अखिलेश सरोज पुत्र अक्षयबर सरोज निवासी गुड़ाई मोहल्ला कस्बा व थाना मुंगरा बादशाहपुर जिला जौनपुर तथा मुकेश सिंह पुत्र गुलाब सिंह निवासी कीर्तिपुर थाना सुरियावा जिला भदोही को गिरफ्तार किया। तीनों आरोपी आपस मे गैंग चलाते थे और रोशनी लोगों से मीठी-मीठी बातें करके उन्हें बाद में ब्लैकमेल करती थी। पट्टी कोतवाली में तैनात शिव कुमार यादव के मोबाइल पर फोन करके महिला ने पहले मीठी मीठी बातें की। उसके बाद दो लाख की मांग की। ऐसा न करने पर झूठी सूचना देकर मुकदमे में फंसाने की बात कही। पुलिस ने इस मामले में उपरोक्त तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

परियोजना निदेशक ने ब्लाक कालाकांकर का किया औचक निरीक्षण

परियावां, प्रतापगढ़। परियोजना निदेशक रामचन्द्र शर्मा लगभग एक बजे कालाकांकर ब्लाक मुख्यालय में औचक निरीक्षण करने पर हड़कम्प मच गया। परियोजना निदेशक रामचन्द्र शर्मा ब्लाक मुख्यालय पहुंचने पर बीडीओ अपर्णा सैनी व एडीओ पंचायत संतोष कुमार शुक्ला व पंचायत मंत्री निर्भय प्रताप सिंह के साथ सबसे पहले ग्राम पंचायत बडेरा की जांच करने पहुचे जहाँ विकास किये गए कार्यो का निरीक्षण किया जिसमे आवास, राज्य वित्ती नाली, पंचायत भवन, सामुदायिक शौचालय, नाला मनरेगा के काम को देखकर संतुष्ट दिखाई दिए। निरीक्षण के बाद ब्लाक मुख्यालय पहुचे जहाँ साफ सफाई व्यवस्था देख नाराजगी जताई। इस दौरान सम्बंधित विभाग के विभाग के कर्मचारी मौजूद रहे।

नानकशाही गुरुद्वारा में हुआ रक्तदान शिविर का आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। गुरुद्वारा नानकशाही बाबागंज में गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी व रक्तदान संस्थान एवम लायन्स क्लब प्रतापगढ़ के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह रक्तदान शिविर सरदार मंजीत सिंह गोबिंद की माता बलवंत कौर की तृतीय पुण्यतिथि पर आयोजित किया गया, जिसमें बहुत से रक्तवीरो ने रक्तदान किया।

इस दौरान रक्तदान करने वालो में संजय कुमार उपाध्याय, नरपाल सिंह, लायन सनी सिंह कृष्ण कुमार गोलू भाई प्रदीप कुमार आदि रहे। सीओ सिटी अभय पांडेय ने फीता काट कर शिविर का शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से संस्था के अध्यक्ष निर्मल पाण्डेय, मंजीत सिंह गोबिंद, ज्ञानी विपिन प्रीत सिंह, जगमीत सिंह सलूजा एवम लाइन्स क्लब के पदाधिकारी मौजूद रहे। उधर एक ट्रस्ट के तत्वावधान में भदौरिया मार्केट जेठवारा में एक नेत्र शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 150 रोगियों का परीक्षण किया गया और 51 को आपरेशन हेतु भेजा गया। शुभारंभ जेठवारा थानाध्यक्ष रवीन्द्र तिवारी ने किया। उन्होंने अपने विभाग के लोगों का भी नेत्र परीक्षण कराया। अजय मिश्रा जलपान केन्द्र के संयोजन में आयोजित इस नेत्र शिविर में डॉ० शिवाकांत त्रिपाठी एवं डॉ० पंकज गुप्ता ने रोगियों का नेत्र परीक्षण किया। 51 रोगियों को ऑपरेशन हेतु चिह्नित करके उन्हें बस द्वारा चित्रकूट भेजा गया जहाँ उनका मुक्त ऑपरेशन किया जाएगा। इस अवसर पर शिव बहादुर सिंह तोमर, रमेश भदौरिया आदि लोग मौजूद रहे।

नेत्र शिविर में 150 रोगियों का हुआ परीक्षण

रक्तदान शिविर में रक्तदान करते पदाधिकारी

दुर्गा पूजा पण्डाल में दर्शन-पूजन करते युवराज भुवन्यू सिंह

दुर्गा पूजा पण्डाल में युवराज ने किया मां का दर्शन पूजन

रामपुर खास के विभिन्न स्थानों पर लिया आशीर्वाद

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। आदि जगत जननी, शक्ति की प्रतीक माँ दुर्गा के पवित्र पर्व नवरात्रि के पावन अवसर पर युवराज भुवन्यू सिंह ने विधानसभा रामपुर खास के विभिन्न स्थानों में स्थानीय लोगों द्वारा आयोजित माँ दुर्गा के पूजा पंडालों में पहुँचकर माता रानी का दर्शन-पूजन कर माँ के चरणों का आशीर्वाद लिया। देवी माँ से प्रार्थना की, कि वे सभी को सुख, समृद्धि, वैभव व धन-धान्य से परिपूर्ण करें। भुवन्यू सिंह ने लोगों को माँ दुर्गा जी के अवतरण का कारण बताते हुए कहा कि पौराणिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने अत्याचारी राक्षस महिषासुर के संहार के लिए मां दुर्गा का सृजन किया। महिषासुर को वरदान मिला हुआ था कि कोई देवता या मनुष्य उसका वध नहीं कर पाएगा। ऐसा वरदान पाकर महिषासुर राक्षसों का राजा बन गया और उसने देवताओं पर आक्रमण कर दिया। देवता युद्ध हार गए और देवलोकर पर महिषासुर का राज हो गया। महिषासुर से रक्षा करने के लिए सभी देवताओं ने भगवान विष्णु के साथ आदि शक्ति की आराधना की इस दौरान सभी देवताओं के शरीर से एक दिव्य रोशनी निकली जिसने देवी दुर्गा का रूप धारण कर लिया। शस्त्रों से सुसज्जित माँ दुर्गा ने महिषासुर से 9 दिनों तक भीषण युद्ध किया और 10वें दिन उसका वध कर दिया। माँ दुर्गा को शक्ति की देवी माना जाता है।

छात्राओं को बताये गये आपदा प्रबन्धन के गुर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। शीतलमऊ स्थित राजकीय बालिका इण्टर कालेज मे राज्य आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण की ओर से मुख्यमंत्री स्कूल सुरक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राधिकरण की ओर से दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मे विद्यालय की छात्राओं को समूह में आपदा प्रबन्धन के गुर बताये गये।

कार्यक्रम के दौरान मॉकड्रिल का प्रदर्शन करते हुए प्रशिक्षक अरविंद कुमार तिवारी ने छात्राओं को आपदा से निपटने के लिए तौर तरीके बताये। विद्यालय की छात्राओं को आपदा प्रबन्धन के तहत भूकम्प, बाढ़, सूखा, कोरोना, सर्पदंश व आगजनी एवं आकाशीय बिजली इत्यादि से निर्भीकता के साथ बचाव के लिए जागरूकता दी गई।

दो दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

लालगंज सीएचसी की चिकित्साधिकारी डा. प्रतिभा त्रिपाठी, डा. पूजा त्रिपाठी एवं डा. स्नेहा सिंह ने छात्राओं को स्वास्थ्य शिक्षा की जानकारी प्रदान करते हुए निरोग जीवन के लिए सतर्कता के उपाय बताये। कार्यक्रम मे छात्राओं को स्वच्छता, पौष्टिक भोजन व रक्त सम्बन्धी दवाओं के उपयोग की भी जानकारी दी गई। प्रशिक्षण का संयोजन प्रधानाचार्य डा. कृष्णकांत पाण्डेय व संचालन डा. शालिनी ने किया। इस मौके पर कंचन सिंह, राजकुमार अवस्थी, डा. पूनम मिश्रा ने भी विषय पर प्रकाश डाला।

रूरे महोत्सव का आयोजन 17 को

पट्टी, प्रतापगढ़। तहसील क्षेत्र के रूर स्थित शहीद स्मारक पर 17 अक्टूबर को रूर महोत्सव का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह होंगे। बता दें कि सन 1920 में 17 अक्टूबर के दिन ही अवध किसान सभा का गठन किया गया था जिसमें क्षेत्र के एक लाख किसान एकत्रित हुए थे। अवध किसान सभा की उस बैठक में देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, माताबदल पांडेय सहित ठाकुर झिंगुरी सिंह, बाबा रामचंद्र व सहदेव सिंह सहित कई किसान नेता मौजूद थे। किसानों की एकजुटता और हौसला देखकर अंग्रेजी हुकूमत डर गई थी। अवध किसान सभा के 101 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसमें सूबे के ग्रामीण अभियंत्रण व समग्र ग्राम विकास मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। शहीद स्थल रूरे में इस संबंध में साफ-सफाई प्रारम्भ हो गई है।

आ रही है ट्रेन, करिये भारत दर्शन...

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज संगम से 21 अक्टूबर को प्रतापगढ़ होते हुये जायेगी ट्रेन चार ज्योतिर्लिंग, स्टेचू ऑफ यूनिटी, उदयपुर के ऐतिहासिक स्थलों को घूमने का मिला अवसर

प्रतापगढ़। ट्रेन से भगवान शिव के चार ज्योतिलिंगों के साथ देश के कई महत्वपूर्ण दार्शनिक, ऐतिहासिक और पर्यटक स्थलों को घूमने का शौक पाले लोगों के लिये अच्छी खबर है। प्रतापगढ़ में 21 अक्टूबर को भारत दर्शन ट्रेन आ रही है। इसी दिन प्रयागराज संगम से चलेगी। अमेठी, रायबरेली, लखनऊ और झांसी होते हुये जायेगी। वापसी में इसी रास्ते से होकर प्रयागराज में 31 अक्टूबर को टूर का समापन होगा।

ट्रेन दस दिन और ग्यारह रात के लिये टूर पर रहेगी। जो देश के करीब डेढ़ दर्जन से अधिक महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण करायेगी। ट्रेन में ही खाने पीने,नाश्ते की सुविधा रहेगी। छोटे स्थानों पर जाने के लिए बस की भी सुविधा रहेगी। रेलवे की इस सुविधा का लाभ लेने से मत चूकिए। क्योंकि घूमने का ऐसा अवसर बार बार नहीं आता है। उठिए, टूर की तैयारी शुरू कर दीजिये। मुख्य क्षेत्रेय प्रबंधक आईआरसीटीसी उत्तर रेलवे लखनऊ अजीत कुमार सिन्हा ने बताया कि भारत दर्शन ट्रेन यात्रा पहली बार प्रतापगढ़ होकर जा रही है। यात्रियों को इसका लाभ लेना चाहिए। ट्रेन से अभी तक पांच सौ से अधिक यात्री टिकट बुक कर चुके है। अगर सब कुछ ठीक ठाक रहा तो नवम्बर में दक्षिण की यात्रा के लिए भारत दर्शन ट्रेन की सुविधा प्रतापगढ़ को मिलेगी।

इन स्थानों का करिये दर्शन

प्रतापगढ़। महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, सोमनाथ, नागेश्वर ज्योतिर्लिंग, द्वारिका मंदिर, भेंट द्वारिका मंदिर, साबरमती आश्रम, बड़ौदा में स्टैचू ऑफ यूनिटी, उदयपुर में सिटी पैलेस, सहेलियों की बाड़ी, महाराणा प्रताप स्मारक। उधर भारत दर्शन ट्रेन से टूर पर जाने वाले यात्रियों को महज 10,395 रुपये का खर्च आ रहा है। इस पैकेज में स्लीप कोच का टिकट किराया, भोजन, नाश्ता, बस का किराया, धर्मशालाओं में ठहरने का खर्च शामिल है। यात्रियों को इसके अलावा और कुछ धन नहीं देना है।

खबर संक्षेप

सेलरहा पूरब गाँव का गौशाला ध्वस्त

कौशांबी। सिराथू विकास खंड के सेलरहा पूरब गाँव में पशु धन प्रसार नाम से प्राइवेट किराये के मकान में गौशाला संचालित था जिसमें कभी कभार पशुधन प्रसार अधिकारी अमिरेश बैठते थें अब किराये का मकान भी गिर गया है और अब अमिरेश भी नहीं बैठते हैं जिस बाबत ग्रमीण बेहद परेशान हैं ग्रमीण इस संबन्ध में ग्राम प्रधान सेलरहा पूरब राजन सिह से गुहार लगायी और कहा कि हमारे गाँव सभा में तमाम सरकारी भूमि है और सरकारी गौशाला का निर्माण किया जा सकता हैं वहीं अधिकारी का गाँव न आना भी लोगों में शंका का विषय बना हैं ग्रामीणो की समस्या को संज्ञान में लेते हुए ग्राम प्रधान सेलरहा पूरब ने जिला अधिकारी को संबोधित कर प्रार्थना किया कि सेलरहा पूरब गाँव में पशु धन प्रसार का सरकारी भवन बनवा कर गाँव वालों की समस्या का निदान करें और पशुधन प्रसार अधिकारी अमिरेश को गाँव आकर पहले की तरह बैठना भी शुरू करें।

हादसा : 20 फीट नीचे नहर में गिरा सवारियों से भरा लोडर

हादसे में 30 लोग घायल सभी का जिला अस्तताल में किया जा रहा इलाज

सभी घायलों का कौशाम्बी अस्पताल में चल रहा इलाज।

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। बुधवार को कौशाम्बी में बड़ा सड़क हादसे हो गया है 30 सवारियों से भरा लोडर पुल की रेलिंग तोड़कर 20 फीट नीचे नहर में गिर गया। जिससे सभी घायल हो गए। घायलों में चार बच्चे और 11 महिलाएं शामिल हैं। वहीं एक बुजुर्ग महिला की हालत गंभीर बताई जा रही है। सभी का जिला अस्पताल में इलाज कराया जा रहा है महेवाघाट कोतवाली क्षेत्र के हटवा गांव के पास हादसा हुआ है। बताया जा रहा है कि फतेहपुर के असोथर निवासी दीपू (30) पुत्र बैजू अपनी बेटी पल्लवी (2) व शारदा (3) का मुंडन कराने चित्रकूट के कामतानाथ मंदिर जा रहा था। दीपू के साथ उसके माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची, भाई-भाभी सहित परिवार एवं अन्य रिश्तेदार भी थे।परिवार में शामिल तकरीबन 30 लोग फतेहपुर से गांव की एक लोडर लेकर चित्रकूट धाम के लिए मंगलवार की रात निकल पड़े। चित्रकूट मार्ग पर हटवा गांव के पास ड्राइवर को झपकी आ गई। जिससे लोडर पुल की रेलिंग तोड़कर 20 फीट नीचे नहर में गिर गया। हादसे में चीख पुकार मच गई स्थानीय ग्रामीणों ने सभी घायलों को बाहर निकाला और पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने एम्बुलेंस से घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया सीएमएस डॉ. दीपक सेठ ने बताया, हादसे में घायलों को अस्पताल में भर्ती कर इलाज किया जा रहा है। करीब 30 मरीज भर्ती किये गए है। जिसमें महिलाएं, बुजुर्ग और मासूम बच्चे शामिल हैं। लोडर के ड्राइवर राधेश्याम को भी चोट लगी है उसका भी इलाज जारी है। घटना में किसी की मौत नहीं हुई है।

डंपर की चपेट में आने से मासूम की मौत

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र में सड़क हादसे में एक मासूम की मौत हो गई है मौत की जानकारी मिलते ही क्षेत्राधिकारी उप जिला अधिकारी समेत थाने थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची है हादसा कर भाग रहे डंपर चालक को वाहन समेत पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटना के बाद से परिवार में कोहराम मचा है। घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना के अंतर्गत ग्राम सभा राजन टोला शहजादपुर में लगभग 3 वर्ष की मासूम सोफिया बानो पुत्री जावेद आलम की डंपर की चपेट में आ जाने से मौके पर मौत हो गई घटना की सूचना मिलते ही शाहजादपुर पुलिस चौकी इंचार्ज गौरव तिवारी अपने साथियों के साथ घटनास्थल पर पहुंचे कोखराज रड ज्ञान सिंह व उड सिराथू एसडीएम सिराथू ने मौके पर पहुंचकर डंपर चालक पर उचित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया मासूम के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया घटना की जांच पड़ताल कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

हादसे के बाद मौके पर मौजूद ग्रामीण ।

हादसे के बाद मौके पर मौजूद ग्रामीण ।

वाहन की टक्कर से अधेड़ की हुई मौत

कौशाम्बी कोखराज थाना क्षेत्र के इमामगंज चौराहे के पास तेज रफ्तार वाहन द्वारा टक्कर मार देने से एक अधेड़ की मौत हो गयी है। जानकारी के मुताबिक सोनेलाल कनौजिया उम्र 50 वर्ष पुत्र स्वर्गीय बदलू निवासी सिकंदरपुर बजहा थाना कोखराज सड़क पार कर रहा था इसी बीच तेज रफ्तार वाहन ने उसे टक्कर मार दिया हादसे में मौके पर अधेड़ की मौत हो गई है। सूचना मिलते ही मौके पर स्थानीय पुलिस पहुँची और आवश्यक कार्यवाही कर शव को कब्जे में लेकर मर्चरी हाउस भेजवाया मूरतगंज पुलिस चौकी की तत्परता से मौके पर शांति व्यवस्था कायम है। सूचना पाते ही घटनास्थल पर परिजन और ग्रामीणों की भीड़ लग गयी।

न्यूज झरोखा

किसान हत्याकांड में मारे गए किसानों को कैंडल मार्च निकालकर दी श्रद्धांजलि

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में ग्राम घोसरा मजरा पूरब शरीरा में लखीमपुर खीरी किसान हत्याकांड में मारे गए किसानों को कैंडल मार्च निकालकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस दौरान पार्टी कार्यकताओं ने किसानों के हत्यारों को फांसी दो...फांसी दो....किसान विधेयक वापस लो...वापस लो के नारे लगाए। समर्थ किसान पार्टी द्वारा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत पार्टी नेता एवं पूर्व जिलाध्यक्ष प्रेम चन्द्र केसरवानी की अगुवाई में किसानों एवं पार्टी कार्यकताओं का एक जत्था गांव में घूम घूम कर कैंडल मार्च निकाला और मारे गए किसानों को याद किया। इस दौरान लोगों के ने हाथों में मोमबत्ती जलाकर जुलूस निकाला। इस अवसर पर मौजूद रहे लोगों को संबोधित करते हुए पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रेम चन्द्र केसरवानी ने कहा कि लखीमपुर खीरी में केंद्र सरकार के गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा उर्फ टेनी के बेटे आशीष मिश्रा उर्फ मोनू मिश्रा ने निर्दोष अन्नदाताओं को जबरन अपनी सत्ता की हनक के चलते गाड़ियों से रौंद दिया जिससे कई किसानों की अकारण एवं असमय मौत हो गई। आगे कहा कि मौजूदा केंद्र सरकार पूरी तरह से घटना की जिम्मेदार है और घटना के बाद भी दोषियों को बचाने पर लगी है। आगे कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद आशीष मिश्रा की गिरफ्तारी हुई जबकि अजय मिश्रा उर्फ टेनी मिश्रा को अभी तक केंद्रीय मंत्रिमंडल से बर्खास्त नहीं किया गया। पार्टी के वरिष्ठ नेता परिहार सिंह ने केंद्र सरकार से अजय मिश्रा उर्फ टेनी मिश्रा को बर्खास्त करने की मांग की है ताकि निर्दोष किसानों की मौत की निष्पक्ष जांच हो सके। आगे कहा कि दोषियों को फास्ट ट्रैक कोर्ट में मुकदमा चलाकर फांसी दी जाए और मृत किसानों को शहीद का दर्जा दिया जाए। इस अवसर पर विजय सिंह लोधी, कमलेश कुमार, राजाराम लोधी, नरेश यादव, महेश सरोज, लल्लू सिंह आदि मौजूद रहे।

अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 51 ग्राम सभाओं में डोर-टू डोर कैम्पेन एवं विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन

कौशाम्बी। जनपद न्यायाधीश के निदेर्शानुसार विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 51 ग्राम सभा में डोर-टू डोर कैम्पेन एवं विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से 51 ग्राम सभाओं में पंचायतराज अधिनियम के अन्तर्गत जनकल्याण हेतु शासकीय योजनाओं के सम्बन्ध में जागरूकता शिविर का आयोजन व घर-घर जाकर विधिक सहायता हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें ए0डी0ओ0 पंचायत मूरतगंज, आगनवॉडी, आशा व एन0जी0ओ0 द्वारा जनमानस को जागरूकता प्रदान की गयी।

घूस के नाम पर लाखों की रकम मिलने के बाद हत्यारों के बचाव में उतरी ईमानदार पिपरी पुलिस

महीनों बीते हत्या का नहीं दर्ज हुआ मुकदमा, थाना पुलिस पर आरोपियों से लाखों की रकम वसूली का आरोप

कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र में राम प्रकाश उम्र 35 वर्ष पुत्र रामबक्स सोनी को 3 सितंबर को गांव के ही रामलाल अरुण मनीष सोनी आदि ने लाठियों से पीट दिया था जिससे रामप्रकाश गंभीर हालत में घायल हो गया मामले की सूचना परिजनों ने पिपरी पुलिस को दिया जिस पर पुलिस ने प्राणघातक हमले को एनसीआर में दर्ज कर अपनी जिम्मेदारी से मुक्ति पा ली घायल रामप्रकाश को इलाज के लिए परिजनों ने स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों ने उसे इलाहाबाद रेफर कर दिया 10 दिनों तक घायल राम प्रकाश जीवन मौत के बीच संघर्ष करता रहा और 13 सितंबर को इलाज के दौरान इलाहाबाद के अस्पताल में रामप्रकाश की मौत हो गई जिसकी सूचना परिजनों ने पुलिस को दी मौके पर पहुंचे पिपरी थाना के उपनिरीक्षक ने रामप्रकाश के इलाज के संपूर्ण कागजात अपने कब्जे में ले लिया और लाश को पुलिस ने पोस्टमार्टम को भेज दिया रामप्रकाश की मौत को एक महीना बीत चुके हैं परिजन हमलावरों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराए जाने को लेकर परेशान हैं थाना से लेकर अपर पुलिस महानिदेशक तक परिजन गुहार लगा चुके हैं थाना पुलिस रामप्रकाश की हत्या का मुकदमा नहीं कर रही है। सूत्रों की माने तो लाखों की रकम आरोपी से थाना पुलिस ने वसूल ली है और इलाज के दौरान जब राम प्रकाश की मौत हो गई तो थाना पुलिस ने फिर हत्या का मुकदमा दर्ज करने के लिए धमकी देकर आरोपियों से लाखों की रकम दोबारा वसूल ली है घूस की रकम मिलने के बाद पिपरी पुलिस ईमानदार है और रकम मिलने के बाद वह आरोपियों की पूरी तरह से मदद करने पर लगी है इमानदार थाना पुलिस से रामप्रकाश के परिजनों को न्याय नहीं मिलता दिख रहा है हत्या के मामले में मोटी रकम मिलने के बाद पिपरी पुलिस आला अधिकारियों को भी गुमराह करने से नहीं चूक रही है रामप्रकाश की मौत के मामले में मुकदमा ना दर्ज करने वाली पिपरी पुलिस के कारनामे पर यदि आला अधिकारियों ने जांच कराई तो पिपरी थानेदार और उप निरीक्षक पर कठोर कार्रवाई हो सकती है।

लक्ष्मी नारायण की मौत पर उमड़ पड़े नगर वासी

भरवारी कौशाम्बी। जन जन के दिल मे राज करने वाले व्योबृद्ध सच्चे समाज सेवी स्पष्ट वक्ता वेहद ईमानदार कुशल ब्यापारी कर्मठ संघर्षशील बस स्टॉप भरवारी निवासी लक्ष्मी नारायण केशरवानी चीनी वाले उम्र लगभग 95 वर्ष का मंगलवार देर रात्रि निधन हो गया। स्वभाव से बहुत ही सरल व मृदुभाषी व्यक्ति की मौत की जानकारी मिलते ही उनके अंतिम दर्शन को उनके आवास पर नगरवासियों का हुजूम उमड़ पड़ा उनके शव यात्रा में हजारो नगर वासियों ने नम आंखों से शामिल हुए गंगा नदी के किनारे संदीपन घाट पर उन्हें मुखाग्नि दी गयी है वह अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गये है लक्ष्मी नारायण केशरवानी की मृत्यु की जानकारी मिलने पर समूचा भरवारी शोक में डूब गया।

लेखपाल पर मेहरबान योगी सरकार के अधिकारी

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के पश्चिम सरीरा कस्बे में दर्जनों सरकारी भूमि पर कब्जा करा कर धन वसूली में जुटे लेखपाल के कारनामो की ग्रामीणों द्वारा बार-बार शिकायत किए जाने के बाद भी दोषी लेखपाल पर कार्यवाही करने का साहस योगी सरकार के अधिकारी नहीं कर पा रहे हैं। पश्चिम शरीरा के तमाम ग्रामीणों ने जिले से लेकर मुख्यमंत्री तक लेखपाल के कारनामे पर शिकायत की जिस पर तहसील अधिकारियों को लेखपाल के कारनामे की जांच दी गई लेकिन उसके बाद भी सरकारी जमीन पर अवैध कब्जे खाली नहीं हो सके हैं। दर्जनों बार शिकायत किए जाने के बाद भी दोषी लेखपाल पर कार्यवाही नहीं हो सकी है। सरकारी भूमि पर कब्जा कर धन वसूली में जुटे लेखपाल को बचाने में कौन लगा है इस बात की चर्चा जन-जन की जुबान पर है इलाके के दर्जनों तालाब बंजारों ऊसर खलिहान नवीन परती कब्रिस्तान मरघट की जमीन पर कब्जे हो चुके हैं जिनकी कीमत करोड़ों में बताई जाती है इलाके के गरीब और निराश्रित लोगों ने सड़क के किनारे ठेलिया गुमटी लगाकर सब्जी चाय पान की दुकान खोलकर परिवार का जीविकोपार्जन करते थे इस भूमि को भी खाली कराने का लेखपाल ने फरमान जारी किया है जिससे गरीब निराश्रित लोगों में शासन सत्ता के प्रति जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है। इस मामले की भी शिकायत जिला पंचायत अध्यक्ष से लेकर उप जिलाधिकारी जिलाधिकारी कौशांबी आइजीआरएस पोर्टल मुख्यमंत्री से करने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं हो सका है। इलाके के लोगों ने पश्चिम सरीरा क्षेत्र में सरकारी भूमि पर कब्जा करा कर धन वसूली करने वाले लेखपाल के कारनामे की जांच की मांग की है।

सरसवां ब्लाक में शौचालय निर्माण में धांधली

कौशांबी। स्वच्छ भारत के मिशन के तहत सरसवां विकास खण्ड क्षेत्र के बड़ाहारी गांव में शौचालय निर्माण में बड़ी धांधली हुई है फरवरी 2021 में दर्जनों शौचालय निर्माण की रकम निकालने के बाद निर्माण नही हो सका है सरसवा ब्लॉक के अधिकारियों का यह कारनामा जांच का विषय बन चुका है कि फरवरी महीने में लोगों के पैसे निकल चुके हैं परंतु अभी तक पैसे लाभार्थी के खाते तक क्यों नहीं पहुंचे हैं आखिरकार ब्लॉक सरसावा के अधिकारियों के कारनामे पर विकास भवन के अधिकारियों की आंखों में पट्टी कब तक बंधी रहेगी ग्रामसभा बड़हरि में ना तो किसी व्यक्ति का पूर्ण रूप से शौचालय बना हुआ है और जिनके शौचालय बने हुए उनकी आधी अधूरी एक किस्त आई उसके बाद लाभार्थियों की दुबारा कोई किस्त नहीं आई है आरोप है कि आंगनवाड़ी की तरफ से तरमौरा गांव में आज तक लगभग 10 वा 15 वर्ष से पोषाहार का किसी महिला ना बच्चों को नहीं प्राप्त हुआ।

मूर्ति विर्सजन एवं दशहरा पर्व : सौहार्दपूर्ण एवं सकुशल सम्पन्न कराने को जिलाधिकारी ने दिये निर्देश

संवेदनशील गॉवों पर विशेष निगरानी रखते हुए शान्ति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिये

अखंड भारत संदेश

पर्वो को सकुशल संपन्न कराने के लिए अधीनस्थों को निर्देश देते जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक ।

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार की अध्यक्षता में कलेक्टेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में मूर्ति विर्सजन एवं दशहरा आदि पर्वो को सौहार्दपूर्ण व सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु सम्बन्धित अधिकारियों के साथ बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी अब तक की गयी कार्यवाही की जानकारी थानावार प्राप्त करते हुए सभी उप जिलाधिकारियो एवं क्षेत्राधिकारियों को आयोजकों से वार्ता कर कार्यक्रम शान्तिपूर्ण सम्पन्न कराने तथा विसर्जन स्थलों व मार्गो का निरीक्षण कर सम्बन्धित ई0ओ0 व खण्ड विकास अधिकारियों से साफ-सफाई एवं मार्गों को ठीक कराये जाने के निर्देश दिये। इसके साथ उन्होनें संवेदनशील गॉवों पर विशेष निगरानी रखते हुए शान्ति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने ई0ओ0 को विसर्जन वालें स्थानों पर साफ-सफाई तथा उप जिलाधिकारियों को विसर्जन स्थलों पर नाव एवं गोताखोरों की व्यवस्था के साथ ही प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होनें अधिशासी अभियन्ता विद्युत को झॉकी/विसर्जन के मार्गों का निरीक्षण कर लटकते तारों आदि को ठीक कराने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होनें शासन की मंशा के अनुरूप दिनांक 14,15 व 16 अक्टूबर को सायः 06 बजे से सुबह 08 बजे तक अनवरत बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए कहा कि कहीं भी खराबी आती है तो उसे तत्काल ठीक कराना सुनिश्चित करें इस अवसर पर प्रत्येक थाना क्षेत्र से उपस्थित दो गणमान्य व्यक्तियों से वार्ता कर कहा कि किसी भी प्रकार की समस्या आने पर तत्काल ई0ओ0/उप जिलाधिकारियों/ क्षेत्राधिकारियों एवं उन्हें तत्काल अवगत कराये, ताकि समस्या का निस्तारण तत्काल कराया जा सकें बैठक में पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा ने भी आवश्यक दिशा निर्देश दिये है।

आखिर मौत का मंजर देखने के लिए क्यों उतावले हैं विद्युत अधिकारी

कितनी मौत के बाद घर के ऊपर से हटाई जाएगी विद्युत तार

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। चायल तहसील क्षेत्र के तिलगुड़ी आलमपुर गांव में घर के ऊपर से विद्युत तार जाने के चलते दुर्गा प्रसाद व भैंस सूअरों की पूर्व में मौत हो चुकी है कई बार गृह स्वामी रामसूरत पुत्र जागेश्वर पासी ने विद्युत अधिकारियों से लेकर शासन प्रशासन को जानकारी देकर घर के ऊपर से गए विद्युत तार हटाए जाने का अनुरोध किया लेकिन रामसूरत का यह अनुरोध अधिकारियों के ठेंगे पर चला गया बताते चलें कि रामसूरत का यह घर चार दशक पूर्व पूर्वजो द्वारा बनाया गया था लेकिन तिलगोंडी स्थित राशन गोदाम में विद्युत सप्लाई देने को लेकर उसके घर के पास विद्युत खंभे और ट्रांसफार्मर विभाग के अधिकारियों ने लगा दिया इस बात का विरोध रामसूरत के पिता जागेश्वर ने भी किया था लेकिन जागेश्वर को यह कहकर विद्युत अधिकारियों ने संतुष्ट कर दिया कि विद्युत तार के नीचे प्लास्टिक लगा दी जाएगी जिससे विद्युत करंट का खतरा खत्म हो जाएगा लेकिन प्लास्टिक लगाने की बात करने वाले अधिकारी अपने वादे से मुकर गए जिससे रामसूरत के घर की छत पर खड़े होना मौत बुलाना है उसके छत से 2 फीट ऊपर विद्युत तार गुजरी हुई है कभी भी विद्युत तार टूटने से बड़ा हादसा हो सकता है आखिर मौत का मंजर देखने के लिए विद्युत अधिकारी इतने क्यों उतावले हैं इस बात को लेकर रामसूरत का परिवार परेशान है जिले में रामसूरत यह अकेले नहीं हैं ऐसे तमाम परिवार हैं जिनके बिना सहमत के विद्युत तार उनके घर के ऊपर से अधिकारियों ने दौड़ा दी है और अधिकारियों की इस तानाशाही से लोगों के सर पर मौत मंडरा रही है पूर्व में कई विधुत हादसे भी हो चुके हैं लेकिन फिर भी विद्युत अधिकारी आमजन की मौत पर मंडरा रहे संकट से बेखबर बने हुए हैं।

डॉक्टर दंपत्ति का स्थानांतरण होने के बाद भी नहीं छोड़ रहे अस्पताल

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सराय अकिल में 3 वर्षों से तैनात एक चिकित्सक दंपत्ति का स्थानांतरण सीएमओ कार्यालय में कर दिए जाने के बाद चिकित्सक दंपत्ति सराय अकिल अस्पताल नहीं छोड़ना चाहते हैं आखिर सराय अकिल अस्पताल में उनका क्या लगाव है यह बड़ी चर्चा का विषय है। सराय अकिल सीएचसी में पिछले 3 वर्ष से कार्यरत डॉक्टर आबिद सैयद व पत्नी डॉक्टर ए आश्मीन उवेद काहे सीएमओ के पद पर प्रमोशन हो गया है जिसके बाद उनका स्थानांतरण मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में कर दिया गया है लेकिन स्थानांतरण आदेश और प्रमोशन आदेश आने के बाद भी इनके द्वारा सराय अकिल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नहीं छोड़ा गया है बताया जाता है कि डा. ए. आश्मीन उवेद सीएचसी में तैनाती के दौरान बिना ड्यूटी दिए वेतन ले रही थी इन पर अधिकारी अंकुश नहीं लगा सके हैं सीएमओ कार्यालय में एसीएमओ के पद पर पिछले 6 महीने से चिकित्सक दंपत्ति नियुक्त किए गए हैं लेकिन फिर भी चिकित्सक दंपत्ति का मोह सराय अकिल के ओपीडी से नहीं भंग हो रहा है बताया जाता है कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सराय अकिल में डेली की ओपीडी में 20 से 25 हजार रुपए की जेनेरिक व जनरल दवाएं खुले बाजार में बेच कर चिकित्सक दंपत्ति मालामाल हो रहे हैं मरीजों को दिए जाने वाली दवाएं खुले बाजार में बेच कर मालामाल होने वाले चिकित्सक दंपत्ति स्थानांतरण होने के बाद पूर्व स्थान को नहीं छोड़ रहे हैं। लोगों ने शासन प्रशासन से चिकित्सक दंपत्ति को निलंबित कर कठोर कार्यवाही किए जाने की मांग की है।

भाषण बयानबाजी तक सीमित रह गया रोडवेज बस अड्डा का उद्घाटन

डिप्टी सीएम ने किया था 07 अक्टूबर को रोडवेज बस अड्डा का उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

नवविवाहित जोड़ों को प्रमाण पत्र देते सिराथू विधायक शीतला प्रसाद पटेल

कौशाम्बी। लंबे इंतजार के बाद 7 अक्टूबर को डिप्टी सीएम ने रोडवेज बस स्टॉप वर्कशॉप और डिपो का उद्घाटन तो जरूर कर दिया लेकिन एक भी बस का संचालन उद्घाटन के बाद परिवहन निगम ने नहीं किया है उद्घाटन के बाद रोडवेज बस स्टॉप डिपो और वर्कशॉप वीरान पड़ा है क्षेत्र के यात्री इस उम्मीद से रोडवेज बस स्टॉप पर पहुंचते हैं कि उनके चहेते डिप्टी सीएम ने इस रोडवेज बस अड्डा का उद्घाटन किया है अब उन्हें मंझनपुर के बस स्टॉप में आसानी से बस मिलेंगे और उनकी यात्रा सुगम होगी और उन्हें आसानी से सरकारी बस में सफर करने का मौका मिलेगा लेकिन जैसे ही यात्री रोडवेज बस स्टॉप पहुंचते हैं वहां का नजारा देखकर उनके माथे में पसीना आ जाता है और उन्हें वापस फिर प्राइवेट बस स्टैंड की ओर जाना पड़ता है आखिर उद्घाटन के बाद आम जनता को बस संचालन की सुविधा ना मिले इस तरह के उद्घाटन की क्या आवश्यक रह गयी है जिस के उद्घाटन के बाद से संचालित ना हो सके वह विरान पड़ा रह जाए आखिर रोडवेज के अधिकारियों में डिप्टी सीएम के उद्घाटन के बाद भी वाहन ना चलाए जाने का साहस कहां से आ गया है जिससे उद्घाटन के बाद भी बसों का संचालन नहीं शुरू हो सका है यह कैसा उद्घाटन है जो आम जनता को समर्पित ना हो सके इस पर लोगों ने सवाल उठाना शुरू कर दिया है।

कार्यक्रम आयोजित कर गरीब कन्याओं की सरकार ने धूमधाम से कराई शादी

228 नवविवाहित जोड़ों को 35000 नगद दस हजार रुपए कीमत का उपहार का सामान समाज कल्याण बिभाग ने दिया

अखंड भारत संदेश

नवविवाहित जोड़ों को उपहार देते चायल विधायक संजय गुप्ता

नवविवाहित जोड़ों को प्रमाण पत्र देते सिराथू विधायक शीतला प्रसाद पटेल

कौशांबी। गरीब परिवार की कन्याओं की शादी के लिए योगी सरकार ने अधिकारियों को निर्देश दे रखे हैं इसी क्रम में समाज कल्याण अधिकारी सुधीर कुमार के नेतृत्व में जिले के सभी विकास खंडों में कार्यक्रम आयोजित कर गरीब कन्याओं के विवाह उनके धर्म की रीति रिवाज के अनुसार सम्पन्न कराए गए हैं जिले में एक सप्ताह के बीच 228 कन्याए विवाह बंधन में बंधी हैं शादी कार्यक्रम में गरीब कन्याओं के बैंक खाते में 35 हजार रुपए समाज कल्याण विभाग द्वारा भेजे गए हैं और प्रत्येक दंपत्ति को दस हजार रुपए का सामान उपहार स्वरूप बिभाग द्वारा दिया गया है इतना ही नहीं शादी कार्यक्रम आयोजित करने के लिए विभाग द्वारा पंडाल लगाए गए हैं जहां वर और कन्या पक्ष के परिजन रिश्तेदारों के भोजन नाश्ता रुकने आदि का प्रबंध भी समाज कल्याण विभाग द्वारा किया गया है कन्याओं के विवाह कार्यक्रम में विधायक भी पहुंचे हैं और नव दंपति जोड़ो को आशीर्वाद दे कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। बताते चलें कि मंझनपुर विकासखंड में आयोजित कार्यक्रम में 23 ग्रामीण कन्याओं और 6 नगर पालिका मंझनपुर क्षेत्र की कन्याओं की शादी धर्म की रीति रिवाज के अनुसार विभाग ने संपन्न कराई है कार्यक्रम में मंझनपुर विधायक लाल बहादुर ने नव दंपत्ति जोड़ों को आशीर्वाद दिया है इसी तरह सरसवां विकास खंड में कार्यक्रम आयोजित कर समाज कल्याण विभाग ने 33 जोड़ों की शादी कराई है चायल विकास खंड परिसर में कार्यक्रम आयोजित कर 27 कन्याओं की शादी कराई गई है और इसी कार्यक्रम में मूरतगंज क्षेत्र के आठ जोड़े शादी बंधन में बंधे हैं कार्यक्रम में चायल बविधायक संजय गुप्ता पहुंचे हैं और उन्होंने नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद और उपहार दिया है इसी तरह मूरतगंज के ब्लॉक परिसर में कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं जहां नगर पालिका भरवारी क्षेत्र की 17 कन्याओं का विभाग ने विवाह कराया है इसी कार्यक्रम में नगर पंचायत चायल की पांच कन्याओं की शादी सम्पन्न हुई नगर पंचायत चरवा की 17 और नगर पंचायत सराय अकिल की 5 कन्याओं का विवाह संपन्न कराया गया है नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देने चायल विधायक संजय गुप्ता पहुंचे हैं और उन्होंने जोड़ों को आशीर्वाद देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है और उन्हें उपहार दिया है सिराथू विकासखंड क्षेत्र परिसर में कार्यक्रम आयोजित कर 28 ग्रामीण और तीन नगर पंचायत क्षेत्र सिराथू की कन्याओं की शादी कराई गई है इस कार्यक्रम में सिराथू विधायक शीतला प्रसाद पटेल पहुँचे हैं और नव विवाहित जोड़ों को आशीर्वाद दिया है कड़ा विकासखंड में सामूहिक विवाह कार्यक्रम आयोजित कर 34 कन्याओं का विवाह संपन्न कराया गया है जिसमें 3 कन्याएं नगर पंचायत दारानगर की शामिल रही है जिले में शादी विवाह कार्यक्रम का आयोजन बड़े ही धूमधाम से किया गया है अधिकारियों की सूझबूझ के चलते शादी विवाह का कार्यक्रम उत्सव की तरह आयोजित किया गया है और धर्म के अनुसार उनके विवाह संपन्न कराए गए हैं कार्यक्रम में खंड विकास अधिकारी एडीओ पंचायत क्षेत्र के तमाम ग्राम प्रधान गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद रहे।

सम्पादकीय

रिश्तों का ताना-बाना

एक महिला बहुत-सी भूमिका एक साथ निभाती है- दादी, मां, बेटी, बहन, बुआ, बहू, सास, भाभी आदि के रूप में। जब तक वह बेटी यानी अविवाहित होती है तो मायके में उसकी खास जिम्मेदारी नहीं होती और लाड़-प्यार में पलती है। बहुत-से माता-पिता उसको यह सिखाने में नाकाम होते हैं कि शादी के बाद उसकी भूमिका किस रूप में सफल और वजनदार होनी चाहिए और उसके लिए उसको कितनी सूझबूझ दी जाए। जीवन एक ऐसा प्रवाह है, जिसमें हम अच्छाई, बुराई, गुणावगुण आदि के आवरण ओढ़े निरंतर बहते चले जाते हैं। समय अपने हिसाब से करवट बदलता रहता है। हम अपने कर्मों के चिह्न जीवन रूपी रास्ते पर छोड़ते चले जाते हैं। अच्छी सोच, अच्छे विचार, उदार मानसिकता, जीवन को देखने-समझने-परखने का नजरिया ही हमारे समूचे व्यक्तित्व का परिचायक होता है। महिलाएं हों या पुरुष, दोनों को ही जीवन सुचारु रूप से चलाने के लिए अपनी सोच को परिपक्व बनाने की आवश्यकता होती है। देखा जाता है कि समाज में महिलाओं को बेचारी संबोधित करके उनके साथ अलग व्यवहार किया जाता है। महिलाएं भी हमेशा पुरुष वर्ग को कोसते हुए अपने को ऊंचे स्थान पर रखने को चाहे-अनचाहे लालायित रहती हैं, बिना यह विचारे कि हर जगह पुरुष गलत नहीं होता। बहुत से मामलों में उन्हें भी अपने अंदर झांकने की बहुत जरूरत होती है और अपनी गलतियों के परिणाम की जिम्मेदारी लेने के लिए आगे आना चाहिए। बदलाव का दौर है। पुरुष या महिलाओं को अपने अंदर झांकते हुए खुद को दुरुस्त करने की कदम-कदम पर जरूरत है, ताकि ठीक से तालमेल बना रहे और पारिवारिक ढांचा न बिखरे। ऐसे में काफी चीजें ऐसी हैं, जो महिलाओं की गलत सोच और व्यवहार के कारण दुष्प्रभावित हो रही हैं। किसी भी परिवार या व्यक्ति की खुशी घर के वातावरण से ज्यादा जुड़ी होती है। परिवार की इकाई महिला के इर्द-गिर्द ज्यादा घूमती है।

अगर महिला ने अपने आप में सुधार का बीड़ा जिम्मेदारी से नहीं उठाया तो समाज और परिवार में प्रतिकूल असर के पूरे-पूरे आसार हैं और कुछ दिनों में ऐसे परिवार के अस्तित्व को ग्रहण लगा दिखाई देगा। जहां महिलाएं सुघड़ और समझदार होंगी, वे ही परिवार को ठीक से बचा पाने में कामयाब होंगी अन्यथा यह इकाई आज बिखराव की राह पर तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में उसके पैदा होने से लेकर बुढ़ापे तक परिवार की भूमिका के केंद्र का महत्त्वपूर्ण अंग होने के कारण बहुत-सी चीजें उसके कारण, उससे प्रभावित होकर घटित होती हैं और जिसका परिणाम परिवार की खुशहाली या बदहाली पर पड़ना लाजिमी है। एक महिला बहुत-सी भूमिका एक साथ निभाती है- दादी, मां, बेटी, बहन, बुआ, बहू, सास, भाभी आदि के रूप में। जब तक वह बेटी यानी अविवाहित होती है तो मायके में उसकी खास जिम्मेदारी नहीं होती और लाड़-प्यार में पलती है। बहुत-से माता-पिता उसको यह सिखाने में नाकाम होते हैं कि शादी के बाद उसकी भूमिका किस रूप में सफल और वजनदार होनी चाहिए और उसके लिए उसको कितनी सूझबूझ दी जाए। जन्मजात रूप से यह समझा जाता है कि उसकी पढ़ाई-लिखाई करवा दो और जब जवान हो जाए तो उसकी शादी का अनुकूल प्रबंध कर दिया जाए। कम ही माता-पिता होते हैं, जो उसकी शादी के बाद की भूमिका के लिए सही और वाजिब सीख देते हैं। शादी होती है तो ससुराल की दहलीज पर कदम रखते ही लड़की की भूमिका जिम्मेदारी से जुड़ी मिलती है। उसकी हर गतिविधि और सोच पर ससुराल पक्ष की बारीक नजर होती है। अगर लड़की समझदार और मायके की समझाइश से अच्छा सीखी है तो कामयाब बहू बनने की राह पर चल पड़ती है, वहीं दूसरी तरफ अगर बिना तैयारी या परिपक्व सोच-विचार के सिर्फ शादी की रस्म के नाम पर ससुराल में चली जाती है और वहां की जरूरत के हिसाब से तालमेल नहीं बैठाती है, तो उसके गृहस्थ में आग लगना तय है। कुछ लड़कियां ससुराल में प्रवेश करते ही पति पर अपना अधिकार मान कर औरों के प्रति बेरूखी दिखाती हैं। निस्संदेह सबके साथ अनुकूल व्यवहार से ही रिश्तों को जीवंत और वजनदार बनाया जा सकता है। ऐसी लड़कियां सोची-समझी रणनीति के तहत परिवार के दूसरे सदस्यों के खिलाफ गलत तरीके से पति के कान भरना शुरू कर देती हैं। ऐसे में रिश्तों में दरार आना स्वाभाविक है। इसका असर रिश्तों के ताने-बाने पर पड़ता है। यह महिला के ऊपर निर्भर है कि वह ससुराल में समझदारी से परिवार को मजबूती से जोड़ती है या अपनी नासमझी की राह पर चल कर ससुराल को प्रयोगशाला बना कर खाई में धकेल देती है, जहां बस केवल संबंधों में तल्खी, विरोध, मनमुटाव, बिखराव या तलाक की गुंजाइश होती है, जिसमें दोनों पक्ष जिंदगी भर दुर्भाग्य, पश्चात्ताप या कसक लिए जीते दीखते हैं। इस सच को झुठलाया नहीं जा सकता कि काफी महिलाएं जरूरत से ज्यादा तारीफ की भूखी होती हैं, छोटी सोच रखती हैं और अपने सौंदर्य को भी हथियार मान लेती हैं। ऐसे में भ्रमवश अपने को जरूरत से ज्यादा उपयोगी, गुणी और त्याग की मूर्ति मान कर अहंकारवश अपने अंदर जमी धूल को साफ करने की कोशिश नहीं करतीं। परिवार की मजबूती महिलाओं की उदारता, सब्र, परिपक्व सोच, सूझ-बूझ आदि पर टिकी होती है। रिश्तों की डोर में अगर इन गुणों से गृहस्थी गुंथी होंगी तो मजबूत धागे से जुड़े संबंधों की ताकत कदम-कदम पर दिखाई देगी।

सट कर रहो या हट कर, खतरा दोनों जगह

निशिकांत ठाकुर

पिछले कुछ दिनों में माननीय सुप्रीम कोर्ट ने जनहित में कई ताबड़तोड़ निणय्र देते हुए भारतीय जन मानस को यह विश्वास स्थापित करने का प्रयास किया है कि उनके हृदय में यह विश्वास- संतोष बना रहे कि अभी भारतीय न्यायपालिका नींद से बोझिल सरकार को जगाने तथा भ्रष्ट नौकरशाहों लिए न्याय का न्यायिक डंडा तैयार कर रखा है । इसी क्रम में सत्तासीन राजनेताओं के साथ तालमेल बैठाकर गलत कार्यों में लिप्त पुलिस अधिकारियों को सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एनवी रमना ने कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि इस श्रेणी में आने वाले पुलिसकमिय्रों को संरक्षित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें जेल भेज देना चाहिए। मुख्य न्यायमूर्ति ने छत्तीसगढ़ के एक पुलिस अधिकारी गुरुजिंदर सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए अवैध संपत्ति और राजद्रोह जैसी धाराओं में आरोप झेल रहे छत्तीसगढ़ के निलंबित आईपीएस गुरजिंदर पाल सिंह को सुप्रीम कोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी से राहत दी। साथ ही, जांच में सहयोग के लिए कहा। पिछली सरकार में एंटी करप्शन ब्यूरो के मुखिया रह चुके आईपीएस को राहत देते समय चीफ जस्टिस ने कहा कि जब कोई सत्ताधारी पार्टी के लिए काम करेगा तो उसे इस तरह के आरोप झेलना ही पड़ेंगे। एक याचिका पर सुनवाई करते हुए चीफ जस्टिस ने कहा, 'आप हर मामले में सुरक्षा नहीं ले सकते। आपने पैसा वसूलना शुरू कर दिया, क्योंकि आप सरकार के करीब हैं । यही होता है अगर आप सरकार के करीब हैं और इन चीजों को करते हैं तो आपको एक दिन वापस भुगतान करना होगा। जब आप सरकार के साथ अच्छे हैं तो आप वसूली कर सकते हैं, लेकिन अब आपको ब्याज के साथ भुगतान करना होगा।

सत्तासीन राजनेताओं के करीबी पुलिस अधिकारी किसी को किसी भी आरोप में जेल में डलवाते हैं और उन्हीं के करीबियों को, जो मदद करने के लिए ऊपर बैठे हैं, किसी अपराधी को दोषमुक्त साबित करके फूलमाला से लादकर समाज के सामने हीरो के रूप में कद ऊंचा कर सकती है, क्योंकि पुलिस का सत्ता से गठजोड़ अब पुरानी बात हो गई है। इस गठजोड़ में पुलिस हमेशा फायदे में रहती है। कहा जा सकता है कि सत्ता किसी की हो, पुलिस के दोनों हाथ में लड्डू होता है। जैसे-जैसे राजनीति में गिरावट आई, वैसे-वैसे यह गठजोड़ और मजबूत होता गया। मुंबई में अर्नब गोस्वामी के खिलाफ पुलिस कार्रवाई हो या यूपी में अनेक जिलों में हाल में पत्रकारों के खिलाफ दर्ज मामले हों या अपराधियों के खिलाफ चल रही कार्रवाई, सब सत्ता के चश्मे के नंबर बदलने की बानगी भर है। पुलिस सत्ता के इशारे को बखूबी समझते हुए उसका दस्तावेजीकरण भी कर देती है। यह अलग बात है कि कई बार अदालत पहुंचने के साथ ही इनका भांडा फूट जाता है। अब सिस्टम में इतना घुन लग चुका है कि इलाज मुश्किल है। एक थानेदार कहते हैं- आपके पास दो हजार के दो जाली नोट मिले। अगर जेल भेजना है तब पुलिस लिखेगी- पत्रकारिता की आड़ में यह आदमी जाली नोटों का कारोबार करता है। यह काम वर्षों से चल रहा है। इसका गिरोह नेपाल तक पसरा हुआ है। छोड़ना हुआ तो लिखा जाएगा- दो हजार के ये दो नोट गलती से इनकी जेब में आ गए थे। यह समाज के सम्मानित व्यक्ति हैं और इनकी आम शोहरत भी अच्छी है। ऐसा निश्छल व्यक्ति जाली नोटों के सौदागर हो ही नहीं सकता। जुर्म एक, लेकिन पुलिस का विवेक यहां बहुत महत्वपूर्ण भूमिका में है। इसी भूमिका की पुलिस खाती आ रही है।

मालेगाँव धमाका (2008) की स्पेशल प्रॉसिक्युटर रोहिणी सालियन ने वर्ष 2015 में आरोप लगाया था कि इस हमले के अभियुक्तों को लेकर नरमी बरतने के लिए उन पर दबाव बनाया गया। रोहिणी ने एनआईए के एसपी सुहास वर्के पर यह आरोप लगाया था। रोहिणी ने कहा था कि ऐसा केस को कमज़ोर बनाने के लिए किया गया, ताकि सभी अभियुक्त बरी हो जाएं। इस ब्लास्ट में भोपाल से भाजपा सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर भी अभियुक्त हैं। रोहिणी ने एक समाचार पत्र को दिए इंटरव्यू में कहा था, 'एनडीए सरकार आने के बाद मेरे पास एनआईए के अधिकारियों का फ़ोन आया। जिन मामलों की जांच चल रही थी, उनमें हिंदू अतिवादियों पर आरोप थे। मुझसे कहा गया वे बात करना चाहते हैं। एनआईए के उस अधिकारी ने कहा कि ऊपर से इस मामले में नरमी बरतने के लिए कहा गया है। ज्ञात हो कि पिछले 8 जुलाई को एनआइए की विशेष अदालत ने ईडी को महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख के खिलाफ दर्ज मनी लांड्रिंग मामले में मुंबई पुलिस के बर्खास्त अधिकारी सचिन वाजे से पूछताछ की इजाजत दी थी। सचिन वाजे को एंटीलिया केस और ठाणे के कारोबारी मनसुख हिरेन की हत।या के मामले में मार्च में गिरफ्तार किया गया था। उल्लेखनीय है कि सचिन वाजे की गिरफ्तारी व मुंबई पुलिस आयुक्त पद से हटाए जाने के बाद परमबीर सिंह ने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को पत्र लिख तत्कालीन गृहमंत्री अनिल देशमुख पर 100 करोड़ वसूली करवाने का आरोप लगाया था। गृहमंत्री देशमुख ने सचिन को बार व रेस्तरां से 100 करोड़ रुपये प्रतिमाह वसूली का लक्ष्य दिया था। हालांकि, देशमुख ने आरोपों से इन्कार किया था। उपरोक्त सभी कार्यवाही पुलिस पर राजनीतिज्ञों के दबाव का ही परिणाम है, भले ही इसे आज कोई स्वीकार करे या न करे। तभी तो सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा, 'पुलिस अफसर सत्ता में मौजूद राजनीतिक पार्टी का फेवर लेते हैं और उनके विरोधियों के खिलाफ कार्रवाई करते हैं। बाद में जब विरोधी सत्ता में आते हैं तो पुलिस अफसरों पर कार्रवाई होती है। यह परेशान करने वाला ट्रेंड है। इसे रोकने की जरूरत है। सीजेआई रमण ने आगे कहा, 'जब सरकार बदलती है तो पुलिस अफसरों को ऐसे आरोपों का सामना करना ही पड़ता है। यह देश में नया चलन है। उन्होंने कहा, 'इस सबके लिए खुद पुलिस अफसरों को ही जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, उनको कानून के शासन पर टिके रहना चाहिए। अब प्रश्न यह है कि सुप्रीम कोर्ट की इस कड़ी टिप्पणी के बाद भी सत्तासीन राजनीतिज्ञों से अपनी दूरी बनाकर संविधान प्रदत्त अधिकारों का वह उपयोग पुलिस के आला अधिकारी ऐसा करेंगे। पूर्व आईपीएस अफसर अमिताभ ठाकुर को पिछले महीने 27 अगस्त को लखनऊ में गिरफ्तार किया गया था। ठाकुर पर मुख्तार अंसारी के कहने पर रेप के आरोपी सांसद अतुल राय को बचाने के लिए आपराधिक षड्यंत्र रचने का आरोप है। जिस लड़की ने अतुल राय पर रेप का आरोप लगाया था, उसकी मौत हो चुकी है। पीड़िता ने 16 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट के बाहर अपने दोस्त के साथ खुद को आग लगाकर आत्महत्या की कोशिश की थी। इलाज के दौरान दोनों की मौत हो गई । अपनी गिरफ्तारी को अवैध ठहराते हुए पूर्व आईपीएस अमिताभ ठाकुर ने भी अब एक मुकदमा दर्ज कराया है। अमिताभ ठाकुर का यह मुकदमा यूपी के नौ अफसरों के खिलाफ है, जिसमें एडिशनल चीफ सेक्रेटरी अवनीश अवस्थी भी शामिल हैं। अमिताभ ठाकुर ने इन अफसरों के खिलाफ सीजेएम कोर्ट में मुकदमा दायर किया है, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया है कि बदला लेने की नीयत से उन्हें नौकरी से निकाला गया, साथ ही फर्जी मुकदमे में जेल भेज दिया गया। अब सच क्या है यह तो जांच के बाद ही पता चलेगा, लेकिन अंदर की जानकारी यह है कि अमिताभ ठाकुर को किसी भी सत्तासीन राजनेताओं का आशीर्वाद प्राप्त नहीं था। लिहाजा, वह सत्ता की गलियारों में पीछे होते गए और अब उनका हाल यह हो गया कि पुलिस उन्हें घसीटकर घर से ले गई। ऐसे में सवाल यह है कि यदि सत्तासीन को अधिकारी अपना आका नहीं मानेंगे तो क्या वह अपना भी वही हाल कराएंगे जो हाल अमिताभ ठाकुर का लखनऊ में हुआ। सवीच्च न्यायालय को इस पर भी सख्त आदेश देने की जरूरत है।

चुनाव जीतने के लिए भाजपा धड़ाधड़ जो भी फैसले ले रही है वह सब उल्टे पड़ जा रहे हैं

स्वदेश कुमार

यह और बात है कि समय के साथ योगी के फैसलों पर अब ज्यादा उंगलियां उठने लगी है, जिस तरह से योगी सरकार ने लखीमपुर की घटना को हैंडिल किया उससे भी पार्टी के भीतर कुछ नेताओं के बीच नाराजगी नजर आ रही है। उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी और योगी सरकार के बीच क्या सब कुछ ठीकठाक नहीं चल रहा है। जानकार समझ नहीं पा रहे हैं कि क्यों संगठन और सरकार के हुक्मरानों द्वारा ऐसे फैसले लिए जा रहे हैं जिसमें सरकार और पार्टी के उद्धार की जगह आपसी वैमस्य नजर आता हो। इसीलिए तो लोग सवाल पूछ रहे हैं कि उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के सामने ऐसी कौन मजबूरी आ गई थी, जो उसे पिछड़े समाज के वोटरों की नाराजगी को दूर करने के लिए एक दलित नेत्री और पूर्व सांसद प्रियंका रावत का सहारा लेना पड़ रहा है, जबकि बीजेपी के पास उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या जैसे कद्दावर पिछड़ा समाज का नेता मौजूद हैं। केशव प्रसाद को कोई कैसे भूल सकता है जब उन्होंने 2019 के लोकसभा चुनाव से कुछ माह पूर्व अक्टूबर 2018 में प्रदेश भर में पिछड़ा वर्ग समाज सम्मेलन कराकर बीजेपी के पक्ष में महौल बनाया था। तब पिछड़ा वर्ग के वोटरों ने दिल खोलकर बीजेपी के पक्ष में मतदान किया था।

केशव प्रसाद मौर्या की तरह ही पूर्व बसपाई और अब योगी सरकार में मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्या को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। स्वामी प्रसाद मौर्या को बीजेपी में इंट्री ही इसलिये मिली थी क्योंकि उनकी पिछड़ा वर्ग समाज में काफी अच्छी और मजबूत पकड़ थी। बीजेपी चाहती तो केशव प्रसाद मौर्या के साथ स्वामी प्रसाद मौर्या का भी इस्तेमाल पिछड़ों को मनाने के लिए कर सकती थी, लेकिन न जाने क्यों बीजेपी आलाकमान ने पिछड़ों को मनाने की जिम्मेदारी किसी पिछड़ा समाज के नेता की जगह अपनी दलित नेत्री और बाराबंकी की पूर्व सांसद प्रियंका रावत के कंधों पर डालना ज्यादा उचित समझा। बीजेपी ने प्रियंका रावत के कंधों पर पिछड़ा वर्ग सम्मेलन कराने की जिम्मेदारी डाली है। यहीं से पिछड़ा समाज की नाराजगी बीजेपी से कम होने की बजाए बढ़ने लगी है, जिस तरह से प्रियंका रावत ने पिछड़ों को मनाने के लिए सम्मेलन आयोजित किए हैं, उसमें कई खोट नजर आ रह हैं। ऐसा लगता है प्रियंका रावत ने पिछड़ा वर्ग समाज का आंदोलन करने से पूर्व पिछड़ा समाज के बारे में कोई अध्ययन ही नहीं किया। अगर ऐसा न होता तो प्रियंका रावत पिछड़ा समाज की 79 जातियों में से सिर्फ 17 जातियों का 'पिछड़ा वर्ग सम्मेलन' नहीं करातीं। इतना ही नहीं जिन 17 पिछड़ी जातियों को प्राथमिकता दी गई है, उसमें से कई जातियों का तो वजूद ही बहुत सीमित है, जबकि तमाम ऐसी जातियों को छोड़ दिया गया है जिनकी अच्छी खासी आबादी है। सबसे पहले यह जान लेना जरूरी है कि प्रियंका रावत हैं कौन और इनकी संगठन में क्या हैसियत है। अगस्त 2021 से पूर्व प्रियंका की पार्टी में कोई खास पहचान नहीं थी, लेकिन जब उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने 22 अगस्त को अपनी बहुप्रतीक्षित टीम घोषित की तो इसमें सबसे चौंकाने वाला नाम प्रियंका सिंह रावत का ही था। बाराबंकी की 35 वर्षीया पूर्व सांसद प्रियंका ने यूपी भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी में धमाकेदार एंट्री मारते हुए सीधे प्रदेश महामंत्री के रूप में जगह बना ली थी, जबकि पार्टी के कई पुराने वफादार नेता महामंत्री बनने के लिए आलाकमान का मुंह ही देखते रह गए, जो कई सालों से पार्टी के लिए पसीना बहा रहे थे। प्रियंका को यह पद तब मिला था, जबकि करीब सवा दो साल पहले वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में बाराबंकी (सुरक्षित) संसदीय क्षेत्र से प्रियंका को उनकी विवादित छवि के कारण टिकट नहीं मिल पाया था, जबकि प्रियंका 2014 के लोकसभा चुनाव में इसी सीट से जीती थीं। टिकट कटने से आहत रावत ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से टिकट पर पुनर्विचार करने की मांग की थी। इतना ही नहीं उन्होंने यहां तक कह दिया था कि भाजपा ने जब आडवाणी, जोशी और सुमित्रा महाजन जैसी हस्तियों के

टिकट काट दिए तो मैं तो एक दलित महिला हूं। ऐसे में सवाल यही है कि क्यों प्रियंका अचानक से बीजेपी की आंख का तारा बन गई हैं तो कुछ लोग इसके पीछे की वजह उनके इनकम टैक्ट आफिसर पति को मान रहे हैं जिनकी दिल्ली में पोस्टिंग है और उनके बीजेपी के कई बड़े नेताओं से निकट के संबंध हैं।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने अपनी कार्यकारिणी में आठ दलित नेताओं को जगह दी है जिसमें पासी जाति से संबंध रखने वाली प्रियंका सबसे युवा थीं। यह तब हुआ जबकि 219 में लोकसभा का टिकट कटने से नाराज भाजपा की सांसद प्रियंका रावत ने बगावती सुर अख्तियार कर रखे थे। प्रियंका का अपना कोई खास जनाधार भी नहीं है। हाँ, विवादों से उनका गहरा नाता है। एक बार प्रियंका रावत को दिल्ली एयरपोर्ट पर जांच के दौरान पर्स में रखी छुरी के साथ पकड़ा गया था। इस पर अपनी गलती मानने की बजाए प्रियंका रावत एयरपोर्ट के स्टाफ को ही धमकाने लगी थीं। इसी प्रकार दिसंबर 2017 में सांसद प्रियंका सिंह रावत की वीडियो एक प्रशिक्षु आईएएस अधिकारी को कथित रूप से धमकाते हुए कैमरे में कैद हुई थी। इस घटना का फुटेज इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था। घटना सफदरगंज थानाक्षेत्र के चौला गांव में सरकारी जमीन पर राजस्व टीम द्वारा अतिक्रमण हटाए जाने को लेकर गांव वालों से हुए विवाद से जुड़ी थी। तब भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व विधायक सुंदरलाल दीक्षित ने सांसद प्रियंका रावत की शिकायत राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से की थी। सात बिंदुओं पर की गई शिकायत में आईएएस एसडीएम सिरौलीगौसपुर अजय कुमार द्विवेदी को धमकी दिए जाने का प्रकरण भी शामिल था। वहीं एक बार सांसद रहते प्रियंका रावत पर एक पुलिस अधिकारी की खाल उतरवाने की धमकी देने का भी आरोप लगा था। उन्होंने न केवल पुलिस अधिकारी को यह धमकी दी बल्कि उसके बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी यह धमकी दोहराई जो कि कैमरे में कैद हो गई। तब की सांसद ने मीडिया से बात करते हुए कहा था कि इनको (पुलिस अधिकारी) जितनी मलाई काटनी थी काट ली इन्होंने। यह बीजेपी की सरकार है, मलाई तो क्या इनकी खाल उतार ली जाएगी अगर काम नहीं करेंगे तो। कुल मिलाकर प्रियंका रावत का विवादों से गहरा नाता रहा है। यह विवाद उनके पिछड़ा वर्ग समाज सम्मेलन के आयोजन के तौर-तरीकों में भी दिखाई दे रहा है। जब बीजेपी आलाकमान और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक-एक वोट के लिए रणनीति बना रहे है, तब न जानें क्यों प्रियंका रावत ने पिछड़ा वर्ग सम्मेलन को मात्र 17 जातियों के बीच ही समेट दिया है, जबकि 62 और पिछड़ा समाज की जातियां भी बीजेपी से मिलकर अपनी कुछ गलतफहमियां दूर करने चाहती हैं। यह वह जातियां हैं जो बीजेपी की मजबूत वोट बैंक मानी जाती हैं। यदि बीजेपी सभी पिछड़ी जातियों को अपने बैनर तले एकजुट करने की कोशिश नहीं करती है तो यह वोट बैंक छिटक कर सपा की झोली में जा सकता है। बहरहाल, समय रहते पार्टी आलाकमान और योगी सरकार नहीं चेती तो उसे इसका खामियाजा विधानसभा चुनाव में भुगतना पड़ सकता है। वैसे भी ऐसे ही विवादित फैसलों के चलते योगी सरकार और संगठन की साख पर बट्टा तो लग ही रहा है। समाज के कई वर्गों के वोटरों के बीच भी मैसेज सही नहीं जा रहा है। पहले गुजरात के पूर्व नौकरशाह अरविंद शर्मा को जिस तरह से अपमानित किया गया था, अब वैसे ही केशव प्रसाद मौर्या आहत नजर आ रहे हैं। केशव के लिए यह स्थिति काफी परेशान करने वाली होगी कि उनके रहते पिछड़ों को मनाने की जिम्मेदारी किसी दलित नेता की कंधों पर डाली जाए। इसका क्या रिएक्शन होगा, यह तो चुनाव के बाद ही पता चलेगा, परंतु इस तरह के फैसलों से सीएम योगी आदित्यनाथ की साख पर भी चोट तो पहुंच ही रही है। वैसे भी योगी-केशव प्रसाद मौर्या के बीच संबंध कभी अच्छे नजर नहीं आते हैं।

2017 के विधान सभा चुनाव में बीजेपी ने केशव प्रसाद मौर्या को जनता के सामने ऐसे पेश किया था, जैसे यदि बीजेपी की सरकार बनेगी तो केशव ही सीएम होंगे, लेकिन जब नतीजे आए तो अचानक योगी का पर्दापण हुआ और वह सीएम बन गए। केशव खून का घूँट पीकर डिप्टी सीएम बनकर ही रह गए। इसी के चलते योगी और केशव के रिश्ते कभी मधुर नहीं रह पाए। इस बात का अहसास तब एक बार फिर हुआ जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्या के पिता जी की कौशाम्बी में हुई मौत के समय केशव के घर जाकर सांत्वना देना उचित नहीं समझा। इस पर काफी विवाद हुआ। बीजेपी आलाकमान को भी इस बात की जानकारी हुई तो वह डैमेज कंट्रोल के लिए आगे आई। 21 जून 2021 को योगी को केशव प्रसाद के यहां जाना ही पड़ा। साढ़े चार साल में यह पहला मौका है जब मुख्यमंत्री डिप्टी सीएम के घर गए थे, जबकि दोनों के आवास में सिर्फ 100 मीटर की ही दूरी है। मुख्यमंत्री लंच के लिए गए थे। इस मौके पर उनके साथ आरएसएस के सह सर कार्यवाह कृष्णगोपाल, महामंत्री संगठन बीएल संतोष सहित कोर कमेटी के सदस्य मौजूद थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के केशव मौर्या के घर पर लंच के सियासी मतलब निकाले गए और यह माना गया कि बीजेपी इस मुलाकात से अपने कार्यकर्ताओं और वोटरों को संदेश देना चाह रही थी कि पार्टी में सब कुछ ठीकठाक चल रहा है। यह और बात है कि समय के साथ योगी के फैसलों पर अब ज्यादा उंगलियां उठने लगी है, जिस तरह से योगी सरकार ने लखीमपुर की घटना को हैंडिल किया उससे भी पार्टी के भीतर कुछ नेताओं के बीच नाराजगी नजर आ रही है। पार्टी के एक सीनियर लीडर का कहना था कि राजनीति अवधारणा पर चलती है। हमेशा सही-गलत के आधार पर फैसला नहीं लिया जाता है, जब जनता के बीच यह धारणा आम हो रही थी कि लखीमपुर कांड में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा के पुत्र की भूमिका संदिग्ध नजर आ रही है तो उसे गिरफ्तार करने में इतनी देरी क्यों की गई जिससे विपक्ष को सरकार के खिलाफ हमलावर होने का मौका मिल गया। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव का बयान यहां गौर करने वाला है। देव ने सीधे तौर पर तो कुछ नहीं कहा है, लेकिन उन्होंने यह कहकर काफी कुछ संकेत दे दिया कि किसी नेता को अपनी छवि ऐसी नहीं बनाना चाहिए जिससे जनता उनसे डरे। स्वतंत्र देव का इशारा लखीमपुर खीरी कांड की ओर ही था।

बात इससे आगे बढ़कर की जाए तो यह कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश में जब से योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराजमान हुए हैं तब से लेकर आज तक यूपी के सांसदों-विधायकों एवं अन्य जनप्रतिनिधिओं का एक ही रोना रहा है कि योगी सरकार में जनप्रतिनिधियों को कोई तवज्जो नहीं दी जा रही है। योगी को अपने नेताओं से अधिक भरोसा ब्यूरोक्रेसी पर है। योगी ने 'टीम 11' बना रखी है। यही टीम 11 हर बड़ा फैसला लेती हैं। यह 'टीम-11' और कोई नहीं 11 सीनियर आईएएस अधिकारी हैं। इनकी सलाह पर ही योगी महत्वपूर्ण फैसले लेते हैं, इसी के चलते बीजेपी के नेता और जनप्रतिनिधि करीब पांच सालों तक मूलदर्शक बने रहने को मजबूर रहे। इन नेताओं की न जिलाधिकारी कार्यालय में सुनवाई होती थी, न थाने-चौकी पर कोई इनकी सुनता था। क्षेत्र में कौन से विकास कार्य कैसे चलने और पूरे किये जाएंगे, यह भी अधिकारी ही तय करते हैं, जिसके चलते उक्त नेताओं और जनप्रतिनिधियों को जनता के कोपभाजन का भी शिकार बनना पड़ता है। अपनी व्यथा कई बार यह सांसद-विधायक और सभासद आलाकमान तक पहुंचा चुके हैं, लेकिन कहीं कोई पत्ता नहीं खड़का। ऐसा ही कुछ बीजेपी के 17 अक्टूबर से प्रस्तावित पिछड़ा वर्ग सम्मेलन में देखने को मिल रहा है, जिसकी जिम्मेदारी न जाने क्या सोच कर दलित नेत्री प्रियंका रावत के कंधों पर डाली गई है। सवाल यह भी उठ रहा है कि यदि प्रियंका रावत के ऊपर जिम्मेदारी डाली ही गई थी तो प्रियंका को पिछड़ा समाज के बारे में थोड़ा अध्ययन कर लेना चाहिए था। यदि वह उत्तर प्रदेश राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग से ही जानकारी जुटा लेतीं तो काफी हद तक फजीहत से बच जातीं। उम्मीद है बीजेपी आलाकमान समय रहते अपनी गलती में सुधार कर लेगा, वर्ना पिछड़ा वर्ग समाज की नाराजगी बढ़ती ही जाएगी।

कोविड-19 के इलाज के लिए ऐंटीवायरस गोली तैयार

मुकुल व्यास

कोविड के इलाज के लिए दुनिया में कई तरह की दवाएं आजमाई गई हैं लेकिन इन्हें बहुत कारगर नहीं कहा जा सकता। रिसर्चर कुछ ऐसी ऐंटीवायरल दवाएं विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं जो आसानी से गोलियों के रूप में ली जा सकें। हैपेटाइटिस सी और एड्स जैसे अनेक वायरल इंफेक्शनों के इलाज के लिए ऐंटीवायरल दवाओं का प्रयोग पहले से हो रहा है। मसलन इन्फ्लूएंजा के इलाज के लिए टैमीफ्लू काफी चर्चित दवा है। लोगों और जानवरों में वायरस के संक्रमण के इलाज और निवारण के लिए विकसित दवाएं अलग-अलग ढंग से काम करती हैं। लेकिन इनमें फेरबदल कर इनका प्रयोग संक्रमण के खिलाफ इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। ये दवाएं स्वस्थ कोशिकाओं में वायरस के प्रवेश को अवरुद्ध कर सकती हैं या शरीर में सक्रिय वायरस की मात्रा कम कर सकती हैं। कोविड के लिए इस समय तीन ऐंटीवायरल दवाएं चर्चा में हैं। इनमें से एक दवा मोलनुपिराविर का क्लिनिकल ट्रायल पूरा हो चुका है। शेष दो के क्लिनिकल ट्रायल चल रहे हैं। मोलनुपिरविर को मर्क एंड कंपनी और रिजबैक बायो थेरेप्यूटिक्स ने विकसित किया है। दो अन्य ऐंटीवायरल दवाओं में फाइजर की पीएफ 07321332 नामक दवा तथा रोश और एटी फार्मास्युटिकल्स की एटी-527 नामक दवा शामिल है। मर्क ने अपनी दवा के क्लिनिकल ट्रायल के अंतरिम परिणामों का ऐलान कर दिया है। इस कंपनी का दावा है कि मोलनुपिराविर कोविड से मौत का रिस्क आधा कर देती है। कंपनी इस दवा के आपात उपयोग के लिए आवेदन करने जा रही है। यदि इसे अनुमति मिल गई तो यह दुनिया में कोविड की पहली ऐंटीवायरल दवा होगी। यह दवा मूल रूप से इन्फ्लूएंजा के इलाज के लिए विकसित की गई थी। ऐंटीवायरल दवाएं मानव कोशिकाओं में वायरस के विस्तार की क्षमता में अवरोध पैदा करती हैं। मोलनुपिराविर वायरस के आनुवंशिक कोड में त्रुटियां उत्पन्न कर उसे शरीर में फैलने से रोकती है। इसके उपयोग से मरीज का वायरस लोड कम होता है और संक्रमण का समय घटता है। यह दवा खतरनाक इम्यून रिस्पॉन्स को भी रोकती है जिसकी वजह से कोविड गंभीर रूप ले लेता है। अभी तक कोविड के इलाज के लिए सिर्फ एक ऐंटीवायरल दवा रेमडेसिवीर को ही मंजूरी मिली है। लेकिन यह उन मरीजों को इंट्रावेनस इंजेक्शन से दी जाती है जो अस्पताल में भर्ती होते हैं। बीमारी के शुरू में इसका व्यापक इस्तेमाल नहीं होता। दूसरी तरफ नई ऐंटीवायरल दवाओं की गोलियों के रूप में पैकिंग की जा सकती है। चूहों पर किए गए प्रारंभिक अध्ययन में पता चला कि मोलनुपिरावि? कोरोना वायरस द्वारा उत्पन्न शुरुआती बुखार को रोक सकती है। दवा का फॉर्म्युला अमेरिका की एमरी यूनिवर्सिटी में खोजा गया जिसे बाद में रिजबैक और मर्क ने हासिल कर लिया।

पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने महामुकाबले से पहले भारत को चेताया, बोले- जीत के साथ करेंगे शुरुआत

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में भारत को अपना पहला मुकाबला 24 अक्टूबर को पाकिस्तान के खिलाफ खेलना है। दोनों टीमें 2019 के बाद पहली बार एक-दूसरे के खिलाफ मैदान पर उतरेगी। पाकिस्तान की टीम आईसीसी वर्ल्ड कप के किसी भी प्रारुप में अबतक भारत को नहीं हरा पाई है। लेकिन पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम का मानना है कि इस बार उनकी टीम भारत को हराकर जीत के साथ टूर्नामेंट की शुरुआत करेगी। दोनों टीमें पांच टी 20 विश्व कप खेलों में एक-दूसरे के खिलाफ खेली है, जिसमें भारत ने सभी में जीत हासिल की है। 50 ओवर के विश्व कप में 1992 से लगातार भारत ने पाकिस्तान को सात बार हराया है। लेकिन कप्तान बाबर आजम को इस बार जीत की उम्मीद है। पाकिस्तान क्रिकेट ने आजम के हवाले से कहा, 'हमारा ध्यान पहले मैच में भारत को हराकर लय हासिल करने और उसे आगे ले जाने पर है। विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में जाते समय विश्वास सबसे ज्यादा मायने रखता है और एक टीम के रूप में हमारा आत्मविश्वास और मनोबल ऊंचा बना हुआ है।'

आंकड़े को देख बढ़ेंगी दिल्ली कैपिटल्स की मुश्किलें, आईपीएल 2021 से बाहर होना लगभग तय

नई दिल्ली (एजेंसी)। शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में इस समय कोलकाता नाइट राइडर्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच दूसरा क्वालीफायर मुकाबला खेला जा रहा है। इस मैच में कोलकाता ने टॉस जीता और दिल्ली की टीम से पहले बैटिंग करवाई। कोलकाता के गेंदबाजों ने कप्तान इयोन मोर्गन के फैसले को सही साबित करते हुए दिल्ली के बल्लेबाजों को ज्यादा खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया और कसी गेंदबाजी की। दिल्ली की टीम सलामी बल्लेबाज शिखर धवन की 36 और पूर्व कप्तान श्रेयस अय्यर की 30 रनों की नाबाद पारियों के दम पर निर्धारित ओवरों में 135 रन ही बना पाया। दिल्ली से मिले 136 रनों के लक्ष्य को देखकर केकेआर टीम मन ही मन में काफी खुश रही होगी, क्योंकि आईपीएल के इतिहास जब भी दिल्ली को 150 रन से कम के लक्ष्य का बचाव करना पड़ा है, तब हर बार टीम को हार नसीब हुई है।दिल्ली से मिले 136 रनों के लक्ष्य के जवाब में कोलकाता की सलामी जोड़ी शुभमन गिल और वेंकटेश अय्यर की बल्लेबाजी देखकर यह रिकॉर्ड एक बार फिर बनता नजर आ रहा है। खबर लिखे जाने तक गिल और वेंकटेश ने 11 ओवरों में बिना किसी

नुकसान के 88 रन जोड़ दिए हैं। टीम को यहां से जीत के लिए 54 गेंदों पर 48 रनों की जरूरत है। इस स्थिति को देखते हुए कोलकाता की टीम जीत के काफी करीब नजर आ रही है।इससे पहले कोलकाता की संयमित गेंदबाजी के दम पर दिल्ली बड़ा स्कोर नहीं बना सकी। दिल्ली के लिए धवन और अय्यर के अलावा पृथ्वी शॉ ने 12 गेंदों में दो चौकों और एक छक्के के सहारे 18 रन बनाए और बाद में वरुण चक्रवर्ती की गेंद पर एलबीडब्लूयू आउट हुए। नंबर तीन पर बल्लेबाजी करने आए मार्कस स्टोइनिस भी रन बनाने के लिए जूझते नजर आए और 23 गेंदों पर मात्र एक चौका लगाकर 18 रन ही बना सके। इसके अलावा शिमरॉन हेटमायर ने 10 गेंदों में दो छक्कों के सहारे 17 रन बनाए और एक सिंगल चुराने की कोशिश में रन आउट हुए। कोलकाता की तरफ से चक्रवर्ती ने 26 रन देकर दो विकेट लिए जबकि फग्युर्सन और मावी ने एक-एक विकेट झटका।

सबसे ज्यादा रन बनाने के बावजूद सोशल मीडिया पर ट्रोल हो रहे शिखर धवन, फैन्स ने जमकर निशाना साधा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 14वें सीजन के दूसरे क्वालीफायर मैच में आज दिल्ली कैपिटल्स का सामना कोलकाता नाइट राइडर्स से शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में हो रहा है। कोलकाता ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करते हुए दिल्ली को केवल 135 रनों पर रोक दिया। दिल्ली के लिए उसकी पारी में सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने सबसे ज्यादा 36 रन बनाए। हालांकि उनकी यह पारी काफी धीमी रही। धवन ने 39 गेंदों पर एक चौके और दो छक्के लगाए। उनके अलावा श्रेयस अय्यर ने नाबाद 30 रन बनाए। अपनी धीमी पारी के चलते धवन सोशल मीडिया पर आलोचकों के निशाना पर आ गए। धवन को सोशल मीडिया पर काफी ट्रोल किया जा रहा है। 92.31 की स्ट्राइक रेट से खेली गई इस पारी के बाद धवन अपनी धीमी पारी के लिए सोशल मीडिया पर ट्रोल हो रहे हैं। धवन को वरुण चक्रवर्ती ने शाकिब अल हसन के हाथों कैच आउट करवाया। यूजर्स धवन के अलावा मार्कस स्टोनिस को भी जमकर ट्रोल कर रहे हैं। बैटिंग में आज तीन नंबर पर बल्लेबाजी करने स्टोयनिस कुछ खास नहीं कर सके और केवल 18 रन ही बना पाए। उन्होंने 23 गेंदों पर एक चौका लगाया।

सुनील गावस्कर ने बताया, विराट कोहली की टी20 कप्तानी का 'शानदार अंत' कैसे हो सकता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर का मानना है कि रविवार से संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में शुरू होने वाले टी20 विश्व कप जीतना खेल के छोटे प्रारूप में विराट कोहली के कप्तानी का सही अंत होगा।

आगामी टी20 विश्व कप कोहली का बतौर कप्तान आखिरी टूर्नामेंट होगा और इसके बाद वह टीम की कप्तान करना छोड़ देंगे। गावस्कर ने साथ ही कहा कि यह जरूरी नहीं है कि टीम इंडिया के प्रमुख बल्लेबाज के लिए सब कुछ ठीक हो जाए। विराट हाल ही में बतौर कप्तान आखिरी बार रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के लिए कप्तानी करते हुए दिखे थे। बैंगलोर की टीम के आईपीएल 2021 के बाहर होने के बाद कोहली अब टी20

विश्व कप की तैयारियों में जुटे हैं।

गावस्कर ने आईपीएल के आधिकारिक प्रसारक स्टार स्पोर्ट्स पर कहा, 'यह शानदार होगा। क्योंकि वह कप्तान (टी20) के रूप में शायद सबसे अच्छा अंत होगा। फ्रेंचाइजी के लिए खेलना एक दूसरी बात है, लेकिन देश के लिए खेलना पूरी तरह से अलग है। इसलिए देश के लिए एक टूर्नामेंट जीतना शानदार होगा। जैसा कि मैंने पहले कहा कि ये कहानियां वहां (आकाश की ओर अंक) लिखी गई हैं। हम नहीं जानते कि ये स्क्रिप्ट क्या है। उदाहरण के लिए क्लाइव लॉयड को देखें।

1975 और 1979 में विश्व कप जीतना और फिर 1983 में वह फाइनल में भारत से हार गए।' उन्होंने कहा, ' 1985 में चैंपियंस ऑफ चैंपियंस में, वह फिर से हार गए। टेस्ट क्रिकेट और वनडे क्रिकेट में और पिछले कुछ वर्षों में वह नहीं जीते। यहां, यह वास्तव में हो सकता है। भूल जाओ कि आरसीबी के साथ क्या हुआ। यहां वह विश्व कप ट्रॉफी उठाकर अपनी कप्तानी का सुखद अंत कर सकते हैं। यह उनकी कप्तानी का सबसे शानदार अंत होगा जिसकी कोई कल्पना कर सकता है।'

श्रीलंका क्रिकेट ने 3 क्रिकेट पर लगा बैन हटाया, भरना होगा 1 करोड़ श्रीलंकाई रुपये का जुर्माना

नई दिल्ली (एजेंसी)। श्रीलंका क्रिकेट (एसएलसी) ने कुसल मेंडिस, दानुष्का गुणथिलका और निरोशन डिकवेला पर लगे प्रतिबंध को वापस ले लिया है और अब ये तीनों क्रिकेटर फिर से क्रिकेट में वापसी करने के लिए तैयार हैं। बोर्ड ने हालांकि इन तीनों क्रिकेटरों को केवल घरेलू क्रिकेट में ही खेलने की इजाजत दी है। एसएलसी ने इस साल की शुरुआत में टीम के इंग्लैंड दौरे के दौरान बायो-बबल का उल्लंघन करने को लेकर तीनों क्रिकेटरों पर इंटरनेशनल क्रिकेट से एक साल का प्रतिबंध और घरेलू क्रिकेट पर छह महीने का प्रतिबंध लगाया गया था। ारेलू क्रिकेट खेलने की अनुमति होगी। डेली मेल के साथ बातचीत करते हुए डी सिल्वा ने कहा कि तीनों क्रिकेटरों को घरेलू क्रिकेट में अपनी-अपनी टीमों के लिए खेलने की अनुमति दी जाएगी, बशर्ते कि उन्होंने अपना जुर्माना अदा किया हो। बोर्ड ने

बायो-बबल उल्लंघन के लिए उन पर एक करोड़ श्रीलंकाई रुपये का जुर्माना लगाया था।

मोहन डीसिल्वा ने कहा, 'हम मंत्रालय को सूचित करेंगे कि हम उन्हें जुर्माना अदा करने की शर्त पर क्रिकेट खेलने की अनुमति दी जाए। मेंडिस, दनुष्का गुणथिलका और निरोशन डिकवेला पर प्रतिबंध हटाने का फैसला मंगलवार को बोर्ड की बैठक में लिया गया। इंग्लैंड में बायो-बबल तोड़ने का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद तीनों क्रिकेटरों की हर तरफ से आलोचना हुई थी। ये तीनों क्रिकेटर आगामी टी 20 विश्व कप 2021 में श्रीलंकाई टीम का हिस्सा नहीं है।

भक्तों को लुभा रही 'श्रीराम मंदिर' में विराजमान जगतजननी की प्रतिमा

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। जनपद में अयोध्या में निर्माणाधीन श्रीराम मंदिर की तर्ज पर गोपीगंज में एक भव्य पंडाल बनाया गया है। जिसमें मां दुर्गा और गणेश जी विराजमान है। दो माह के अथक परिश्रम के बाद 40 लाख की लागत से बनकर तैयार हुआ यह पंडाल भक्तों के आकर्षण का केंद्र बना है। मां सिंह वाहिनी दुर्गा पूजा समिति की तरफ से गोपीगंज नगर के काली मोहाल में यह भव्य पंडाल बनाया गया है। आयोजकों के अनुसार के निर्माण में तकरीबन 40 लाख रुपए की लागत आयी है। तकरीबन 25 मजदूर दिन-रात मेहनत करके एक माह में पंडाल का निर्माण किया है। मां सिंह वाहिनी दुर्गा पूजा समिति पंडालों के निर्माण को लेकर हमेशा सुखिर्यों में रहती है। पूर्वांचल के साथ प्रदेश स्तर पर इस तरह के पंडाल आपको देखने को मिल सकते हैं। पूजा समित हर साल नवरात्रि उत्सव में अलग-अलग भव्य पंडाल बनाती है। कभी कारगिल युद्ध, कभी जैन मंदिर,को अक्षरधाम मंदिर, स्वामीनारायण मंदिर की तर्ज पर पंडाल बनाए गए हैं। इस पूजा समिति के अध्यक्ष पूर्व विधायक रह चुके उदय भान सिंह उर्फ डॉक्टर सिंह हैं। मां सिंह वाहिनी का पंडाल अपनी आकर्षक चित्रकारी की वजह से हमेशा सुखिर्यों में रहता है।

12 हजार मीटर कपड़े का हुआ प्रयोग

मां सिंह वाहिनी दुर्गा पूजा समिति से जुड़े रामकृष्ण ने बताया कि इस पूजा पंडाल के निर्माण में 12 हजार मीटर से अधिक कपड़ों का उपयोग हुआ है। आठ ट्रक बांस और छह ट्रक बल्ली का प्रयोग हुआ है। इसके अलावा कई कुंतल खीले और रस्सी लगाई गयीं है। मजदूरों और अन्य सामग्रियों को कुल मिलाकर इस पर 40 लाख का खर्च आया है।

पूजा समिति द्वारा बांटा जा रहा मास्क

आयोजकों के अनुसार पूजा पंडाल में प्रोटोकॉल का पूरी तरह अनुपालन किया जा रहा है। पंडाल के प्रवेश द्वार पर भक्तों की थर्मल स्क्रीनिंग की जा रही है।

लोगों को मास्क वितरण किया जा रहा है। नवरात्र के दौरान यहां सप्तमी, महाष्टमी, महानवमी बाद भरत मिलाप के तक प्रतिमा का स्थापन रहता है। जनपद की सारी प्रतिमाएं विसर्जन होने के बाद स्थापित मां दुर्गा की प्रतिमाओं का विसर्जन होता है।

जल्द हो अयोध्या में मंदिर का निर्माण

श्रीराम मंदिर के मॉडल पर पूजा पंडाल बनाने की मंशा के पीछे आयोजकों ने बताया कि हमारी कामना है कि अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण जल्द पूरा हो।

सपा-बसपा ने माफियाओं को माननीय बनाकर करोड़ों लूटा : बृजलाल

पूर्ववर्ती सरकारों में चरम पर था सरकारी व दूसरों की जमीनों पर कब्जा करना व आतंक फैलाना

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। राज्यसभा सांसद व एवं पूर्व डीजीपी बृजलाल ने कहा कि उत्तर प्रदेश की पूर्व सपा व बसपा की सरकार ने प्रदेश के माफियाओ को एमपी, एमएलए व मंत्री बनाकर माननीय बनाने का कार्य किया। वहीं माननीय लोग सरकारी जमीनो व संपत्तियो पर कब्जा कर करोड़ो रूपये का लूटपाट करते रहे और समाज में आतंक फैलने का काम किये थे। किन्तु प्रदेश में योगी सरकार बनते ही अपराधियो को जेल में डालने के साथ उनके अवैध तरीके से बनाये मकान पर बुलडोजर चलवाकर माफियाओ का कमर तोड़ दिया तथा उनके अवैध संपत्ति को जब्त कर दिया। उक्त बातें मुख्यालय से सटे कांवल गांव के चकसिखारी में आयोजित महाअभियान एवं जन संकल्प सभा को संबोधित करते हुये मुख्य अतिथि सांसद बृजलाल जी ने कही।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में हमने पहली बार ऐसा मुख्यमंत्री देखा जो प्रदेश के माफियाओं को चुन-चुनकर उनके खिलाफ कार्रवाई किया जो आज तक के इतिहास में कभी किसी सीएम द्वारा नही किया गया था।

उन्होंने कहा कि माफियाओं के राज को खत्म कर जनता को खुली सांस में जीने का अधिकार सीएम योगी ने दी है। कहा कि सरकार ने विभिनन्‍ योजनाओ को चलाकर गरीब परिवार के विकास में सहयोग किया, तो वहीं किसानों के लिए बड़े-बड़े फैसले लिये किन्तु दलाल व बिचौलियों लोगों द्वारा कथा कथित किसान बनकर लोगों को गुमराह कर रहे है। उन्होंने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय के परिकल्पना को पूरा करने के लिए सरकार विभिनन्‍ योजनाएं संचालित समाज के अंतिम पंक्ति में बैठे लोगों को समाज के मुख्य धारा से जोड़ने का काम रही है। उन्होंने कहा कि जब अंतिम पंक्ति में बैठे लोगों को विकास नही हो जाता तब तक देश का विकास संभव नही है। कहा कि सरकार इन्ही मुद्दो पर काम कर रही है। कहा कि करोनो काल में देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस प्रकार देश के लोगों को बचाया वह काफी सराहनीय है। इसके बावूजद सपा, बसपा व कांग्रेस के लोग समाज में गलत तरीके का प्रचार करते हुये कहा कि वैक्शीन नही लगवाऊंगा जिसके कारण कोरोना काल में जितने जाने गयी उसके जिम्मेदार कांग्रेस व सपा के लोग है। उन्होंने कहा कि लोगों में भ्रम फैलाकर उनको मौत की आग में झोक दिया और वे लोग लाश पर राजनीति करने लगे। उन्होंने कहा विपक्षी दल गिद्ध है जो लाश पर राजनीति करते है। कहा कि जिस प्रकार आसमान के ऊंचाई गिद्ध उड़ता है किन्तु अपने तेज आखों से जमीन पर पड़े लाश को देख लेता है और लाश को नोचकर खा लेता है, उसी प्रकार सपा, बसपा व कांग्रेस गिद्ध की तरह लाश देखते है तो राजनीति शुरू कर देते है। उन्होंने कहा कि बंशीधर उपाध्याय जुझारू है वे कभी माफियाओ से डरे नही बल्कि डट कर सामना किया और मेरे द्वारा इनका बराबर सहयोग किया जाता रहा है। कार्यक्रम के पूर्व में कार्यक्रम के आयोजक बंशीधर उपाध्याय व मनोज मिश्रा द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया और स्मृति चिन्ह के रूप में गदा भेंट किया। तो वही रामकृष्ण तिवारी ने भी गदा भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन अनिल मिश्रा ने किया। इस अवसर पर विधायक भदोही रविन्द्र नाथ त्रिपाठी, औराई विधायक दीनानाथ भाष्कर, पूर्व जिलाध्यक्ष हौसिला प्रसाद पाठक, भाजपा महामंत्री रमेश पांडेय, बालदत्त पांडेय, छत्रपति सिंह, प्रदीप सिंह, राजा उपाध्याय सहित काफी संख्या में लोग मौजूद रहे।

20 अक्टूबर को मनाई जाएगी महर्षि वाल्मीकि जयंती

अखंड भारत संदेश

भदोही। मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह ने सभी नोडल अधिकारियों को निर्देश दिया है कि आजादी के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में 20 अक्टूबर को महर्षि वाल्मीकि जयंती पूरे भव्यता के साथ मनाई जाए। सीडीओ ने कहा कि उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रीराम, हनुमान तथा रामायण से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण स्थलों एवं मंदिरों का चयन करते हुए, वहां रामायण पाठ, भजन आदि के कार्यक्रम आयोजित कराए जाएं। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि निर्धारित कार्यक्रम को समयबद्ध रूप से कार्यवाही सुनिश्चित करने के साथ ही अपेक्षित विवरण भी समयबद्ध उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाए।कहा कि प्रत्येक जनपद के श्रीराम मंदिर, हनुमान मंदिर अथवा रामायण से संबंधित अन्य कोई मंदिर का पूरा पता, फोटो, जीपीएस लोकेशन, मंदिर प्रबंधक का संपर्क नंबर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। यदि किसी जनपद में राम-जानकी मार्ग तथा राम वन गमन मार्ग के स्थल हो तो, उसका पूर्ण विवरण, पता, फोटो तथा संपर्की का मोबाइल नंबर उपलब्ध कराएं। चयनित मंदिरों एवं स्थलों पर कलाकारों, भजन गायकों के नाम, पते एवं मोबाइल नंबर उपलब्ध कराने के साथ ही चयनित मंदिरों पर नामित नोडल अधिकारी का नाम, पदनाम, मोबाइल नंबर भी उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। प्रत्येक आयोजन कोविड प्रोटोकाल के दायरे में करवाया जाए। इसके अलावा प्रत्येक आयोजन स्थल पर साफ-सफाई, पेयजल, ध्वनि, प्रकाश, दरी, बिछावन एवं सुरक्षा की विशेष व्यवस्था की जाए। उन्होंने कहा कि सभी आयोजन स्थलों पर आयोजन के लिए सक्षम स्तर से अनापत्ति प्राप्त की जाए। अनवरत वाल्मीकि रामायण के पाठ के लिए वाल्मीकि रामायण ग्रंथ की उपलब्धता पूर्व में सुनिश्चित कर ली जाए।

पांच साल बाद अपहृता बरामद, आरोपी गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

भदोही। लडकी को बहला-फुसलाकर भगाने के आरोपी को आखिरकार भदोही पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। अपहृता को भी बरामद कर लिया गया है। अपहरण का प्रकरण पांच वर्ष पुराना है। पुलिस के मुताबिक बहला-फुसलाकर भगाने के बाद आरोपी मुंबई में रहने लगा था और यहां नहीं आता था। इधर, लाकडाउन के कारण वह घर आया था। आरोपी के खिलाफ पुलिस ने पांच हजार रुपये का इनाम घोषित कर रखा था। यह गिरफ्तारी क्राइम ब्रांच व भदोही पुलिस ने संयुक्त रूप से की है। गिरफ्तारी भदोही के रेलवे स्टेशन से की गई है।

भदोही पुलिस के मुताबिक 17 अप्रैल 2017 को जनपद के रामरायपुर के रहने वाले एक व्यक्ति

ने तहरीर देकर बताया कि उसके पड़ोस का रहने राजकुमार उर्फ करिया पुत्र जवाहरलाल (निवासी रामरायपुर) ने उसकी बहन अगवा कर लिया है। आरोप लगाया कि शिकायत करने पर उसे जानलेवा धमकी भी दी गई। उक्त के संबंध में भदोही पुलिस ने राज कुमार हरिजन उर्फ करिया पुत्र जवाहर लाल के खिलाफ धारा 363ध्366ध्504 के तहत केस दर्ज कर जांच शुरू की। 23 अप्रैल 18 को उसके खिलाफ न्यायालय के आदेश की अवहेलना का केस दर्ज किया गया। पुलिस अधीक्षक भदोही ने 13 नवबर 18 को पांच हजार रुपये का इनाम भी घोषित किया गया। तमाम कोशिशों के बावजूद आरोपी पुलिस के चंगुल से बचता रहा। क्राइम ब्रांच ने इस मामले की छानबीन शुरू की और भदोही थाने की पुलिस के साथ पांच साल से फरार चल रहे राजकुमार हरिजन उर्फ करिया भदोही रेलवे स्टेशन से धर दबोचा। पूछताछ में राजकुमार ने बताया कि वह मुंबई चला गया था और वहीं पर छिपकर रहने लगा था। इधर, लाकडाउन के कारण वह घर आया और पुलिस के हत्थे चढ़ गया।

दो गज की दूरी और मास्क है जरूरी... वरना बेअसर हो जाएगी कोरोना वैक्सीन

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना वैक्सीन की प्रभावशीलता में कमी का सबसे बड़ा कारण डेल्टा वेरिएंट, मास्क न लगाना और सामाजिक दूरी को लेकर लापरवाही रही है। न्यूयॉर्क के स्वास्थ्य विभाग ने एक नए अध्ययन में यह दावा किया है।स्वास्थ्य विभाग के वैज्ञानिकों ने न्यूयॉर्क में 2021 की गर्मियों के दौरान कोरोना के डेल्टा मामले बढ़ने के दौरान वैक्सीन की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इस दौरान राज्यव्यापी टीकाकरण, जांच और अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि इस दौरान फाइजर-बायोएनटेक, मॉडर्ना और जॉनसन एंड जॉनसन के टीकों की प्रभावशीलता में 25 फीसदी तक की कमी आ गई।

हालांकि, प्रभावशीलता में कमी के बावजूद कोरोना टीके अस्पताल में भर्ती होने से रोकने में काफी

कारगर साबित हुए। अध्ययन में पाया गया कि डेल्टा के मामले बढ़ने के दौरान टीका 18 से 64 वर्ष की आयु के संक्रमितों को अस्पताल में भर्ती होने से रोकने में 90 फीसदी प्रभावी रहा।

अध्ययन में न्यूयॉर्क के लगभग 88 लाख वयस्कों को शामिल किया गया। इनमें से लगभग दो-तिहाई को पूरी तरह से कोरोना टीका लगाया गया था। शोधकर्ताओं ने 1 मई और 28 अगस्त 2021 के बीच यह विश्लेषण किया। इस दौरान डेल्टा वेरिएंट राज्य में दो प्रतिशत से 99 प्रतिशत मामलों में पाया जाने लगा था। कोरोना के डेल्टा वेरिएंट की वृद्धि के दौरान संक्रमण के खिलाफ टीके की प्रभावशीलता में गिरावट देखी गई। इसके अलावा शोधकर्ताओं ने बताया कि न्यूयॉर्क में कोविड प्रोटोकॉल बदलने से ब्रेकथ्रू मामलों में वृद्धि हुई। शोधकर्ताओं ने बताया कि गर्मियों की शुरुआत में सीडीसी ने नई गाइडलाइन जारी की। इसमें कहा गया कि जो लोग टीके की दोनों खुराक ले चुके हैं वह सार्वजनिक स्थानों पर बिना मास्क के जा सकते हैं। इसके बाद शहर के फिर से खुलने के साथ ही ज्यादा से ज्यादा न्यूयॉर्क के लोगों ने इनडोर गतिविधियों में भाग लिया। इसके चलते ब्रेकथ्रू संक्रमण के मामलों में तेजी देखने को मिली। शोधकर्ताओं ने बताया कि गर्मियों में सिर्फ 65 वर्ष से अधिक आयु के लोगों में ही अस्पताल में भर्ती होने के खिलाफ टीकों की सुरक्षा में गिरावट देखी गई। इसी के आधार पर शोधकर्ताओं ने बुजुर्गों को बूस्टर शॉट देने की आवश्यकता पर जोर दिया है। स्वास्थ्य विभाग के वैज्ञानिक डॉ. एली रोसेनबर्ग कहते हैं कि इन आंकड़ों से पता चलता है कि 65 साल से कम उम्र के वयस्कों को लेकर मौजूदा चिंता बूस्टर शॉट से कम की जा सकती है। गौरतलब है कि अमेरिका की सीडीसी और एफडीए ने हाल ही में फाइजर के बूस्टर शॉट को बुजुर्गों को लगाने की सिफारिश की है।

अफगानिस्तान में तालिबान राज के कारण कश्मीर में गैर-मुस्लिमों पर हो रहे आतंकी हमले?

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्या जम्मू-कश्मीर में आतंकी घटनाओं में हुई एकाएक बढ़ोतरी के पीछे अफगानिस्तान में हुए सत्ता परिवर्तन की भी भूमिका है? रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि अफगानिस्तान की घटना से आतंकियों के हौसले बढ़े हो सकते हैं। दरअसल, कश्मीर में पिछले कुछ समय से आतंकी घटनाओं में वृद्धि नजर आ रही है। सुरक्षाबलों के साथ-साथ आम लोगों पर भी आतंकी हमले बढ़े हैं। लंबे समय के बाद आतंकी चुनिंदा लोगों को निशाना बना रहे हैं। इसे लेकर यह माना जा रहा है कि घाटी में आतंकी घटनाओं का स्वरूप भी बदल रहा है।

रक्षा जानकारों का मानना है कि तालिबान के सत्ता में आने से कश्मीरी आतंकियों के हौसले बढ़े हैं। तालिबान की सफलता उन्हें चौंका रही है। इसलिए सुरक्षाबलों को इस समय

आतंकियों के खिलाफ अपने अभियान को तेज करना होगा। आतंकियों की गलतफहमी को दूर करना जरूरी है। पिछले दो-तीन दिनों के दौरान सुरक्षाबलों की व्यापक कार्रवाई में कई आतंकी मारे भी गए हैं। बता दें कि इसी महीने 5 अक्टूबर को आतंकवादियों ने इकबाल पार्क के पास बिंदरू मेडिकेट के मालिक माखन लाल बिंदरू पर गोलियां बरसाकर उन्हें मौत की नींद सुला दिया। पांच अक्टूबर को ही कश्मीर के दो अन्य स्थानों पर आतंकियों के हमले में दो लोगों की मौत हुई थी। इसके बाद 7 अक्टूबर को आतंकियों ने श्रीनगर के ईदगाह इलाके में एक सरकार स्कूल के अंदर घुसकर प्रिंसिपल सुपिंदर कौर और शिक्षक दीपक चंद की हत्या कर दी थी। दोनों ही गैर-मुस्लिम समुदाय से थे।

जेल में ही बीती एक और रात, आर्यन खान की जमानत पर आज भी जारी रहेगी सुनवाई

मुंबई (एजेंसी)। एनसीबी की मुंबई क्रूज पर चल रही रेव पार्टी में रेड और फिर शाहरुख के बेटे आर्यन के साथ ही अन्य लोगों की गिरफ्तारी का मामला हर ओर चर्चा में है। मामले में जांच जारी है। गुरुवार को भी मुंबई की अदालत में आर्यन खान और अन्य आरोपी अरबाज मर्चेंट, मुनमुन धमेचा की बेल याचिकाओं पर सुनवाई होगी। बुधवार को कोर्ट में एनसीबी ने दावा किया कि आर्यन खान ने तस्करों से बल्क ड्रग्स के बारे में बातचीत की है और अभिनेता अरबाज मर्चेंट के जरिए ड्रग्स की खरीद करता था, जिसके बाद सुनवाई आज के लिए टल गई थी। जानें, इस मामले में अब तक क्या-क्या हुआ हैः

एनसीबी ने 2 अक्टूबर को मुंबई से गोवा जा रहे एक जहाज पर चल रही रेव पार्टी में छापेमारी की थी। एनसीबी की टीम ने इस रेड में 13 ग्राम कोकीन, 21 ग्राम हशीश, एमडीएमए की 12 गोलियां, 5 ग्राम एमडी और 6 ग्राम चरस बरामद की थी। इस मामले में अभी तक दो नाइजीरियाई नागरिकों के साथ 20 गिरफ्तारी की जा चुकी है। आर्यन खान और अन्य आरोपियों की बेल याचिका पर एनडीपीएस कोर्ट सुनवाई कर रही है।बुधवार को कोर्ट में एनसीबी ने कहा कि उसकी जांच में खुलासा हुआ है कि 23 वर्षीय आर्यन खान अपने करीबी दोस्त अरबाज मर्चेंट से अक्सर ड्रग्स खरीदता था। अरबाज मर्चेंट को भी मामले में गिरफ्तार किया गया है। इतना ही नहीं एनसीबी ने यह भी कहा कि आर्यन खान मादक पदार्थों की अवैध खरीद और वितरण में शामिल था। एनसीबी ने यह भी बताया कि अरबाज मर्चेंट के जूतों से रेड के दौरान 6 ग्राम चरस भी बरामद की गई थी।आर्यन खान की तरफ से वकील अमित देसाई ने बुधवार को कोर्ट में दावा किया कि उनका क्लाइंट क्रूज पर मौजूद तक नहीं था और उसे जिस समय पकड़ा गया, उस समय वह पार्टी अटेंड करने जा ही रहा था।

सीएम नहीं बन पाने की टीस या सच में है पंजाब से इश्क? सिद्धू पर कांग्रेस का फैसला आज

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू गुरुवार यानी आज पार्टी महासचिव केसी वेणुगोपाल से मिलने दिल्ली जाएंगे। उनका दिल्ली में पंजाब मामलों के प्रभारी हरीश रावत से भी मिलने का कार्यक्रम है। सिद्धू और कांग्रेस के वरिष्ठ नेतृत्व के बीच बैठक 28 सितंबर के बाद पहली बार होने जा रही है, जब उन्होंने सोशल मीडिया पर अपना इस्तीफा पोस्ट करते हुए कहा था कि वह पंजाब के भविष्य और उसके कल्याणकारी एजेंडे से समझौता नहीं कर सकते। आपको बता दें कि सिद्धू के अचानक इस्तीफे ने कांग्रेस के लिए एक नई उथल-पुथल शुरू कर दी। इससे पहले पार्टी अंदरूनी कलह को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष कर रही थी। पार्टी में ही सिद्धू को कई नेता महत्वकांक्षी मानते हैं

नासा की 'ना' से भी नहीं टूटा सिरीषा का हौसला, स्पेस की सैर करने वाली तीसरी भारतवंशी

नई दिल्ली (एजेंसी)। हौसले बुलंद हों तो शुरुआती असफलताओं के बावजूद इंसान अपनी मंजिल ढूंढ ही लेता है। भारतीय मूल की सिरीषा बांदला इस बात की जीती-जागती मिसाल हैं।

दरअसल, सिरीषा बचपन से ही चांद-तारों की दुनिया में सैर करने के सपने देखती थीं। हालांकि, अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा से जुड़ने का उनका सपना चिकित्सकीय आधार पर टूट गया। बावजूद इसके उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।खगोल विज्ञान की बेहतरीन समझ के बलबूते वह न सिर्फ बेहद कम उम्र में शीर्ष निजी अंतरिक्ष कंपनियों में ऊंचा ओहदा हासिल करने में कामयाब रहीं, बल्कि जुलाई 2021 में स्पेस यात्रा की ख्वाहिश भी पूरी कर ली।सिरीषा 11 जुलाई की रात कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स के बाद अंतरिक्ष की सैर करने वाली तीसरी

भारतवंशी महिला बन गईं। सुनीता के खाते में तो स्पेस में सात बार चहकदमी करने की उपलब्धि भी दर्ज है। वहीं, भारतीय वायुसेना से जुड़े रह चुके राकेश शर्मा अंतरिक्ष में उड़ान भरने वाले एकमात्र भारतीय नागरिक हैं। अंतरिक्ष यात्रा के दौरान सिरीषा ने धरती से 89.9 किलोमीटर की ऊंचाई पर उड़ान भरी थी। हालांकि, वह 'यूनिटी-22' के चालक दल का हिस्सा नहीं थीं, क्योंकि यह स्वप्रक्षेपण प्रणाली से संचालित यान था। इस कारण संघीय उड्डयन प्राधिकरण ने उन्हें 'अंतरिक्ष यात्री' के बजाय 'अंतरिक्ष पर्यटक' की श्रेणी में शुमार किया है।

'वर्जिन गैलेक्टिक' में शोध संचालन और सरकारी मामलों की उपाध्यक्ष सिरीषा ने कंपनी के संस्थापक सर रिचर्ड ब्रैंसन, डेव मैके, माइकल मासुकी, बेथ मोजेस और कॉलिन बेनेट के साथ अंतरिक्ष यात्रा की थी। इस दौरान उन्होंने फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी के लिए एक शोध किया था, जिसका मकसद पौधों पर बदलते गुरुत्वाकर्षण का असर आंकना था।सिरीषा का जन्म 1988 में आंध्र प्रदेश के गुंटूर में एक तेलुगु भाषी हिंदू परिवार में हुआ था। पांच साल की उम्र तक दादा-दादी के साथ रहीं, इसके बाद माता-पिता संग ह्यूस्टन जा बसीं। पर्ड्यू यूनिवर्सिटी से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में सनतक, जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय से एमबीए किया। सिरीषा बचपन से ही नासा की अंतरिक्ष यात्री बनना चाहती थीं, पर कमजोर रोशनी के चलते उनका यह सपना अधूरा रह गया। इसके बाद 'कमशिर्यल स्पेसफ्लाइट फेडरेशन' में बतौर एयरोस्पेस इंजीनियर काम किया, 2015 में 'वर्जिन गैलेक्टिक' से जुड़ीं।

भारत में कथित कनवर्जन थेरेपी बैन करने की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत समेत दुनिया के तमाम देशों में कथित कनवर्जन थेरेपी के खिलाफ कोई कानून नहीं है. इस कारण हजारों युवा और किशोर यातनाएं झेलने को मजबूर हैं.पवित्रा के परिवार वाले उसे बदलना चाहते थे. उसका लेस्बियन होना उन्हें स्वीकार नहीं था. वह बताती हैं कि पहले वे लोग उसे आम डॉक्टर के पास ले गए, फिर दिमाग के डॉक्टर को दिखाया जिसने पॉर्न देखने और लड़कों से सेक्स करने के बारे में सोचने को कहा. फिर स्त्री रोग विशेषज्ञ के पास ले गए जिसने हॉर्मीन टेस्ट के नतीजे ठीक आने पर पवित्रा को केवल अनैतिकता का शिकार बताया. अंत में सिद्धा वैद्य ने इलाज के नाम पर शराब पिलवाई और अगले 3-4 घंटे उसके साथ क्या हुआ इसका पवित्रा को होश तक नहीं. वह बताती हैं, ठडॉक्टर ने मुझे इंटरनेट पर खूब पॉर्न वीडियो देखने को कहा, लेकिन लेस्बियन पॉर्न वीडियो को छोड़कर. उसने कहा कि पॉर्न वीडियो देखने से मुझे लड़कों के साथ संबंध बनाना अच्छा लगने लगेगा. मैंने डॉक्टर को बताया कि मुझे इन चीजों में दिलचस्पी नहीं है. सबसे पहली बात तो ये है कि ये सब केवल सेक्स के बारे में नहीं होता. मैं केवल सेक्स के लिए तो लेस्बियन नहीं हूं.

इसका संबंध प्यार से है, भावना और आत्मा के स्तर पर जुड़ाव से है. मेरे लिए पहले प्रेम है, फिर वासना. लेकिन डॉक्टर तो मुझसे केवल सेक्स के बारे में बात कर रहा थाठ हजारों ऐसी कहानियां

हैं सितंबर 2020 में पवित्रा ने घर छोड़ा और केरल चली गई. लेकिन हर किसी को बाहर निकलने का मौका तक नहीं मिलता. कुछ महीने पहले गोवा में 21 साल की बाइसेक्शुअल महिला अंजना हरीश ने कनवर्जन के नाम पर की गई तमाम ज्यादतियां झेलने के बाद आत्महत्या कर ली थी. इसके शिकार ज्यादातर किशोर या युवा लोग बनते हैं. अक्सर परिवार वाले उन पर दबाव डालकर तथाकथित थेरेपी करवाते हैं. इस थेरेपी के नाम पर जो दवाएं दी जाती हैं, उनके असर के बारे में पवित्रा बताती हैं, ठमुझे उल्टी आती थी. भयंकर सिरदर्द रहता था. पूरे शरीर में दर्द रहता था. मुझे ऐसा टैबलेट दिया जा रहा था जिसका खूब साइड इफेक्ट होता था। मैं हमेशा सोती रहती थी. परिवार वालों को ये भी लगा कि कहीं मैंने आत्महत्या करने के लिए कोई और टैबलेट तो नहीं खा लिया. लेकिन मैं गहरी नींद में होती थीठ इलाज के नाम पर यातनाएं कनवर्जन थेरेपी के नाम पर किए जाने वाले इलाज का मकसद है गे, लेस्बियन या ट्रांसजेंडर लोगों को हेट्रोसेक्शुअल बनाना. मेडिकल पेशेवरों के अलावा काउंसिलर्स और धर्मगुरु भी ऐसे तथाकथित इलाज करने का दावा करते हैं. कोरोना महामारी के दौर में लगे लॉकडाउन और प्रतिबंधों ने एलजीबीटी प्लस लोगों को सामाजिक रूप से और अलग-थलग कर दिया है।

वैज्ञानिकों ने ढूंढ़ी 1500 साल पुरानी शराब फैक्ट्री, चौंकाने वाली चीजें सामने आईं

नई दिल्ली (एजेंसी)। इजरायल में इन दिनों पुरानी चीजें खूब खोजी जा रही हैं। पिछले दिनों जहां प्राचीन काल का एक टॉयलेट सीट मिला था तो अब पुरातत्व वैज्ञानिकों ने 1500 साल पहले बनी हुई एक शराब की फैक्ट्री खोज निकाली है। यह फैक्ट्री बीजान्टिन काल की सबसे पुरानी शराब फैक्ट्री बताई जा रही है। यह फैक्ट्री उस काल से लेकर अब तक की सबसे पुरानी ज्ञात वाइनरी है। दरअसल, यह घटना इजरायल के यवने शहर का है। सीएनएन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इजरायल के पुरातत्व विभाग ने बताया कि शहर में विस्तारीकरण के काम के दौरान ही खुदाई में ये भट्ठी मिली है।

बीएसएफ के नए अधिकारों से पंजाब में सियासी बवाल, सीएम चरनजीत सिंह चन्नी को अपनों ने घेरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब चुनाव में अब कुछ ही महीने बचे हैं लेकिन यहां मौजूद सियासी बवाल खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है। पहले कृषि कानूनों का विरोध और फिर कांग्रेस सरकार में छिड़े घमासान के बाद अब पंजाब में एक नए मुद्दे पर सियासत गर्मा गई है। दरअसल, बुधवार को केंद्र गृह मंत्रालय ने तीन राज्यों में सीमा सुरक्षा बल का क्षेत्राधिकार बढ़ाया है, जिनमें से एक पंजाब भी है। राज्य में बीएसएफ के अधिकार क्षेत्र को 15 किलोमीट से बढ़ाकर 50 किलोमीटर कर दिया है, यानी सीमा से भारतीय क्षेत्र के अंदर बीएसएफ 50 किलोमीटर के दायरे में तलाशी अभियान, गिरफ्तारी और जब्ती कर सकती है, वह भी बिना किसी

ऑर्डर को पास करवाए। इस नए आदेश पर कांग्रेस नेता सुनील जाखड़ ने जहां सीएम चन्नी के खिलाफ ही मोर्चा खोल दिया है तो वहीं, पूर्व सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह इसके समर्थन में आ गए हैं।

पंजाब कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सुनील जाखड़ ने एक बार फिर से ट्विटर पर नाराजगी जाहिर की है। उन्होंने अपनी ही पार्टी के नेता और सीएम चरणजीत सिंह चन्नी से सवाल किया है कि क्या उन्होंने अनजाने में आधा पंजाब केंद्र को सौंप दिया है।

अंधेरे में डूबा काबुल, बिजली कंपनियों का बकाया नहीं चुका पाने की सजा या कुछ और?

काबुल (एजेंसी)। उज्बेकिस्तान से होने वाली सप्लाई में तकनीकी गड़बड़ी सामने आने के बाद अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के साथ ही कई अन्य प्रांतों में बिजली गुल हो गई है। अफगानिस्तान की सरकारी बिजली कंपनी 'दा अफगानिस्तान ब्रेशना शेरकत (डीएबीएस)' ने बुधवार को इसकी जानकारी दी। यह ब्लैकआउट ऐसे समय में हुआ है, जब कुछ ही दिन पहले यह रिपोर्ट सामने आई थी कि मध्य एशियाई देशों को करीब 6.2 करोड़ डॉलर के बिजली बिलों का भुगतान करने के लिए डीएबीएस सरकारी अधिकारियों की संपत्ति को बेचने की तैयारी में है। बता दें कि तालिबान के कब्जे के बाद से ही अफगानिस्तान में खाने-पीने तक क का संकट पैदा हो गया है। अफगानी बिजली कंपनी के हवाले से समाचार एजेंसी स्पुतनिक ने जानकारी दी कि उत्तरी अफगानिस्तान के बगलान प्रांत में तकनीकी समस्या आने की वजह से बिजली आपूर्ति बाधित हुई है। हालांकि, बिजली कंपनी ने यह भी कहा है कि उनका तकनीकी स्टाफ इस समस्या को जल्द-से-जल्द दूर करने के लिए काम कर रहा है।

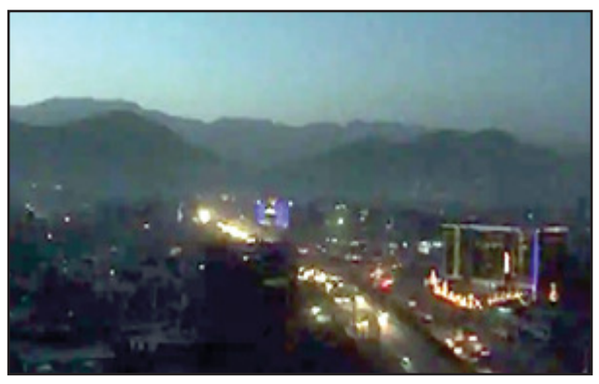

बता दें कि बिजली आपूर्ति के लिए अफगानिस्तान मध्य एशिया के देशों पर निर्भर है। अफगानिस्तान को 80 फीसदी बिजली उजबेकिस्तान और ताजिकिस्तान से मिलती है। हालांकि, इस साल अगस्त में तालिबान के कब्जे के बाद से तालिबान इन देशों का कर्ज चुकाने में नाकामयाब रहा है। डीएबीएस के पूर्व प्रमुख दाऊद नूरजई ने इसी महीने बताया था कि अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में सर्दियां आने तक भारी बिजली कटौती हो सकती है। उन्होंने कहा था कि तालिबान द्वारा बिजली आपूर्ति करने वाले देशों को बकाया बिल का भुगतान न करने की वजह से ऐसा हो सकता है। हालांकि, इस बीच डीएबीएस के कार्यकारी प्रमुख सफीउल्ला अहमदजई ने कहा है कि वे जल्द ही योजनागत तरीके से सभी बकाया चुका देंगे ताकि बिजली कटौती से बचा जा सके।

भारत तो पावर सरप्लस देश है... कोयला संकट की खबरों पर बोलीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण

वॉशिंगटन (एजेंसी)। देश में कोयले की कमी की खबरों के बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इन दावों को बेबुनियाद बताते हुए कहा है कि भारत तो 'पावर सरप्लस' देश है। सीतारमण ने कहा कि ऊर्जा मंत्री आरके सिंह ने दो दिन पहले ही आधिकारिक बयान देकर कोयला संकट के दावों को खारिज करिया था।

हार्वर्ड केनेडी स्कूल में मंगलवार को सीतारमण ने कहा, 'एकदम बेबुनियाद! किसी चीज की कोई कमी नहीं है। बल्कि, अगर मैं ऊर्जा मंत्री का बयान याद दिलाऊं तो हर बिजली उत्पादन केंद्र के पास अगले चार दिन का कोयला स्टॉक में है और सप्लाई चेन नहीं टूटी है।' कार्यक्रम के दौरान एक हार्वर्ड के प्रोफेसर लॉरेंस समर्स ने सीतारमण से कोयले की कमी और बिजली कटौती को लेकर सवाल किया। इसपर वित्त मंत्री ने कहा कि ऐसी कोई कमी नहीं होगी जिससे सप्लाई बाधित हो। भारत एक पावर सरप्लस देश है। अमेरिका की आधिकारिक यात्रा पर पहुंचीं सीतारमण ने

लखीमपुर खीरी में चार किसानों की मौत और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा के बेटे आशीष मिश्रा की गिरफ्तारी के बारे में हार्वर्ड केनेडी स्कूल में बातचीत के दौरान पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा, अच्छा है कि आपने ऐसी घटना उठाई, जो पूरी तरह से निंदनीय है और हम में से हर कोई यह कह रहा है। इसी तरह दूसरी जगहों पर हो रही घटनाएं मेरी चिंता का कारण हैं। सीतारमण ने कहा, 'भारत में इस तरह के मामले देश के बहुत से अलग-अलग हिस्सों में समान रूप से हो रहे हैं। मैं चाहती हूं कि आप और डॉ. अमर्त्य सेन सहित कई अन्य लोग, जो भारत को जानते हैं, वे जब कभी ऐसी घटना होती है, उसे हर बार उठाएं। इस प्रकार की घटना को मात्र उस समय नहीं उठाया जाए, जब इन्हें उठाना हमारे लिए इसलिए अनुकूल है, क्योंकि यह एक ऐसे राज्य में हुई, जहां भाजपा सत्ता में है, जिसमें मेरे एक कैबिनेट सहयोगी का बेटा शायद मुश्किल में है।' उन्होंने कहा कि इस घटना के पीछे किसका हाथ है, यह पता लगाने के लिए पूर्ण जांच की जाएगी।

उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू के अरुणाचल प्रदेश दौरे पर चीन ने जताई आपत्ति, भारत ने दिया करारा जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू के अरुणाचल प्रदेश दौरे से चीन को जबरदस्त मिर्ची लगी है। चीन ने उपराष्ट्रपति के इस दौरे को लेकर अपनी आपत्ति जाहिर की है। चीन की इस आपत्ति पर बुधवार को भारत ने भी करारा जवाब दिया है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि 'हम ऐसी टिप्पणियों को खारिज करते हैं। अरुणाचल प्रदेश भारत का एक अभिनन्और अविभाज्य हिस्सा है। भारतीय नेता नियमित रूप से राज्य की यात्रा करते हैं, जैसा कि वे भारत के किसी अन्य राज्य में करते हैं। दरअसल उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू बीते 9 अक्टूबर को अरुणाचल प्रदेश के दौरे पर थे।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.
UPHIN 2001/9025